यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय
चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै
दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप
मादो नमतु ॥ यजुर्वेद 26:2

Vaidic-INDEX

वेद - भाष्यकर्ता

1. ऋग्वेद - महर्षि दयानंद सरस्वती

2. यजुर्वेद - महर्षि दयानंद सरस्वती

3. सामवेद - आचार्य रामनाथ वेदालंकार

4. अथर्ववेद - पंडित छेमकरण त्रिवेदी

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे|
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत||

यजुर्वेद 31:7

Abbreviation (संक्षिप्त नाम)

1. ऋग्वेद - R
2. यजुर्वेद - Y
3. सामवेद - S
4. अथर्ववेद- A

Abbreviation colour-

ऋग्वेद के मंत्रों की सूची पुस्तक में काले रंग से लिखी है।

यजुर्वेद के मंत्रो की सूची नीले रंग से लिखी है
सामवेद के मंत्रों की सूची लाल रंग से लिखी है |

अथर्ववेद के मंत्रों की सूची हरे रंग से लिखी है

वेदों में मंत्रों का वर्गीकरण

ऋग्वेद में मंत्रों का वर्गीकरण

R **-** 5:2:8

मंडल : सुक्त: मंत्र संख्या

↓ ↓ ↓

5 2 8

यजुर्वेद में मंत्रों का वर्गीकरण

Y- 12:20 , अध्याय: मंत्र संख्या

↓ ↓

12 20

सामवेद में मंत्रों का वर्गीकरण

S – 172 , मंत्र संख्या

↓

172

अथर्ववेद में मंत्रों का वर्गीकरण

A- 20:6:4

कांड : सुक्त: मंत्र संख्या

↓ ↓ ↓

20 6 4

नमस्ते,
वैदिक धर्मी मित्रों, vaidic index नामक pdf पुस्तक को बनाने के पीछे मेरा उद्देश्य यह है कि, अधिकांशत वैदिक धर्मी लोगों से जब कोई वेदों के विषय में कुछ पूछता है तो उनको उसका रेफरेंस नहीं पता होता क्योंकि वेद पुस्तक बहुत अधिक मंत्र होने के कारण उनको याद रखना कठिन है और वेद पुस्तक भी बहुत ज्यादा मोटी और बड़ी है उनको कुरान और बाइबिल की तरह हाथ में लेकर घूमना संभव नहीं है और सामान्यतः याद रखना भी मुश्किल है, इसलिए यह वैदिक इंडेक्स उनके लिए लाभदायक सिद्ध होगा जिनको वेद के किसी विषय के बारे में झट से रेफरेंस जानना हो. हजारों रेफरेंस होने के कारण टाइपिंग में कोई त्रुटि संभव है इसलिए अगर आपको कोई त्रुटि लगे तो मुझे व्हाट्सएप पर मैसेज कर दे ,मैं उसको संशोधित कर दूंगा।
धन्यवाद

BY – SANDEEP ARYA
OM ARYAVART

विषय-सूची

30. ईश्वर प्रकृति में अनादि काल से सूक्ष्म रूप से व्याप्त है
31. ईश्वर, जगत की उपमा से स्वयं को, मनुष्य के समक्ष प्रकाशित (वर्णित) करता है
32.ईश्वर अनंत ∞ विद्या युक्त सत्ता है
33.ईश्वर अखंड है
34. ईश्वर अहिंसक है
35. ईश्वर पीड़ा से रहित है
36. ईश्वर पवित्र है
37. ईश्वर अजर है
38. ईश्वर अजन्मा है
39. ईश्वर नित्य है
40. ईश्वर निर्विकार है
41. ईश्वर अनंत शक्तिशाली है
42. ईश्वर सर्वबल कारक है
43 .ईश्वर के तुल्य कुछ नहीं, ना हुआ, ना है ,ना होगा
44.कुछ भी ईश्वर से महान नहीं है
45. ईश्वर सर्वद्रष्टा है
46.ईश्वर जन्म-मरण से रहित है
47. ईश्वर सर्व ऐश्वर्यवान है
48. ईश्वर अमर है
49. ईश्वर निराकार है
50. ईश्वर अहिंसक कर्मों की प्रेरणा करता है
51. **ईश्वर इंद्रियातीत है**
52. ईश्वर पूर्ण है
53. ईश्वर सर्व प्रेरक है
54. ईश्वर अपने कार्य हेतु किसी की सहायता नहीं लेता
55. ईश्वर अनंत कर्मा है
56. ईश्वर दुष्टों के पाप क्षमा नहीं करता
57. नास्तिक संशय निवारण
ईश्वर है या नहीं?
58. ईश्वर अस्त्र-शस्त्र द्वारा अभेद्य है
59. ईश्वर ही मुक्ति स्थान है
60. ईश्वर स्वयंभू है
61. ईश्वर त्रिकालज्ञ है
62.ईश्वर नित्य नूतन है

63. ईश्वर की शक्ति, चेतन स्वरूप है
64. ईश्वर एकरस व्यापक है
65. ईश्वर सर्वश्रेष्ठ है
66. ईश्वर सत्यस्वरूप है
67. ईश्वर में अविद्या दोष नहीं है
68.ईश्वर समस्त पदार्थों से सूक्ष्म है
69.ईश्वर, आत्मा से भिन्न है
70. ईश्वर ,प्रकृति से भिन्न है
71. ईश्वर को भौतिक पदार्थों से पाया नहीं जा सकता
72. ईश्वर निष्काम है
73.ईश्वर सृष्टि का निमित्त कारण है
74.ईश्वर के हाथ पैर आदि नहीं है
75.ईश्वर किसी स्थान विशेष में, पर नहीं रहता हैं
76. ईश्वर कर्मफल दाता है
77.ईश्वर जीव के हर गुप्त कर्म को जानता व देखता है
78 .ईश्वर से कोई कहीं भी जाकर छिप नहीं सकता
79.ईश्वर कहां है?
80. ईश्वर हर वस्तु के अंदर व्याप्त होकर सृष्टि को नियम पूर्वक चला रहा है
81. ईश्वर के गुण (सामर्थ्य) कभी घटते नहीं हैं
82. ईश्वर सत्यधर्मी है
83. ईश्वर अपरिमित (परिमाण रहित) है
84. ईश्वर निष्पाप है
85. ईश्वर से आत्मा की देशकाल से नहीं, बल्कि ज्ञान की दूरी है
86.ईश्वर विद्वानों के निकट है अविद्वानों से दूर है
87. ईश्वर अदृश्यमान है
88. ईश्वर सनातन है
89. ईश्वर में असंख्य धन (ज्ञान,सामर्थ्य,गुण) है
90. ईश्वर कारण रहित है
91. ईश्वर समस्त लोको को नियम में ठहरा कर चलाता रहता है
93. ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार है, का तर्क से वर्णन
94. ईश्वर आलस्य निद्रा से रहित है
95. ईश्वर सहनशील है
96. ईश्वर सर्वेश्वर है
97. ईश्वर की धर्म व्यवस्था निश्चल है, सबके लिए समान है

98. ईश्वर के माता–पिता नहीं है
99 ईश्वर कर्मानुसार फल देता है
100. ईश्वर राजाओं का राजा है
101. ईश्वर ,हर जीव, प्रकृति तत्व के भीतर (मध्य) में विराजमान है
102. .ईश्वर, सूक्ष्म से सूक्ष्म और महान से महान है
103.ईश्वर हर वस्तु के अंदर व बाहर है
104. ईश्वर आकाश की तरह व्यापक है
105.ईश्वर पापियों को कभी प्राप्त नहीं होता है
106. ईश्वर साकार (शरीर धारी) नहीं है
107. ईश्वर अवतार नहीं लेता
108: ईश्वर के विभिन्न नाम उसके गुणवाच्य हैं
109: ईश्वर किसी वस्तु के ऊपर, नीचे या तिरछी दिशा में नहीं होता
110. ईश्वर हर जगह ओतप्रोत है
111.ईश्वर की कोई प्रतिमा (परिधि) नहीं है
112. ईश्वर षोडशी (16 कला वाला) है
113. ईश्वर सबसे बड़ा है
114. ईश्वर तत्व को चलायमान मानने वाले मूर्ख है
115. ईश्वर अभय है
116. ईश्वर अमर है
117. आत्मा चेतन है
118. आत्मा अल्प सामर्थ्यवान है
119.आत्मा, अनंत ज्ञान सामर्थ्य युक्त कभी नहीं हो सकता
120. ..जीवात्मा, मृत्यु के पश्चात कहां रहता है
121. आत्मा अविनाशी है
122. आत्मा कर्मफल भोगता है
123. आत्मा अजर है
124. आत्मा में भय गुण है
125. आत्मा अनादि है
126 आत्मा सनातन है
127. आत्मा अजन्मा है
128. आत्मा को वाक शक्ति देने वाला ईश्वर है
129. शरीर ,आत्मा के ज्ञान, कर्म, भोग का साधन है
130. ईश्वर, आत्मा को सत्य ज्ञान देता है
131. आत्मा के 3 शरीर होते हैं

132. आत्मा का कामना गुण है
133. आत्मा के साथ इंद्रियादि का संबंध
134. ईश्वर आत्मा का सामर्थ्य , बल बढ़ाता है
135. शरीर के अंदर आत्मा को ईश्वर का समन्वय
136. आत्मा में ज्ञान प्राप्त करने ,कर्म करने की इच्छा है
137. हमारा हर कर्म हमारे सूक्ष्म शरीर में संस्कारवत बना रहता है
138. पंचकोश
139. वृक्षों में आत्मा होती है
140. आत्मा, शरीर, प्राण नाडिया, मन आदि का नियंत्रक है धारक है
141. आत्मा शरीर से भिन्न है
142. जीवात्मा को उन लोगों में शामिल होना चाहिए जिनको वेद ज्ञान मिलता है
143. हे जीवात्मा बलिदानी योद्धा बन
144. हे जीव श्रेष्ठ माता–पिता के घर जन्म लेने वाला बन
145. मृत्यु के उपरांत सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ रहता है
146. आत्मा अमर है
147. आत्मा कर्म करने में स्वतंत्र
148. आत्मा अल्पज्ञ है
149. आत्मा अणु परिमाण है
150. आत्मा का कोई लिंग नहीं होता है
151. आत्मा कर्म करता है ईश्वर फल देता है
152. आत्मा कभी भी ईश्वर तुल्य नहीं हो सकती
153. आत्माओं की संख्या अनंत है
154. आत्मा को शोकायुक्त ना करो
155. आत्मा की इच्छा स्वतंत्र है
156. कर्म अनादि है
157. निद्रा अवस्था में आत्मा की स्थिति
158. परग्रही जीवन(Aliens)
159. पुनर्जन्म
160. मोक्ष से पुनरावृति
161. सूर्य, तारों पर जीवन
162. मृत्यु के बाद, आत्मा कर्मानुसार, शरीर प्राप्त करने के लिए दूसरे ग्रहों पर जाता है

163. मृत्यु उपरांत जीवात्मा 12 दिनों तक सूर्य आदि जगहों पर घूम कर नया शरीर प्राप्त करती है
164. हे जीव, शरीर छोड़ते समय 'ओ३म' का स्मरण कर
165. आत्मा के अनंत जन्म हो चुके हैं
166. त्रैतवाद
167. कारण प्रकृति अनादि है
168. प्रकृति जड़ (चेतनारहित) है
169. कारण प्रकृति अविनाशी है
170. कारण प्रकृति का विस्तार अनंत है
171. प्रकृति त्रिगुणात्मक है
172. प्रकृति जन्म रहित है
173. कारण प्रकृति नित्य है
174. ईश्वर सृष्टि आत्मा के लिए बनाता है
175. जीवन उत्पत्ति
176. आत्मा के कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म होता है
177. आदि सृष्टि में युवावस्था (स्वयंपोषी) में जीवो की उत्पत्ति
178. ईश्वर सृष्टि ,आत्मा के सुख ,सामर्थ्य के बढ़ावे के लिए बनाता है
179. ईश्वर सृष्टि आत्मा के उद्धार के लिए बनाता है
180. ईश्वर ने मनुष्य शरीर पुरुषार्थ करने के लिए बनाया है
181. मनुष्य शरीर महिमा का उपदेश
182. मानव शरीर रचना उपदेश
183. ईश्वर सृष्टि की रचना क्यों करता है?
184. सृष्टि प्रवाह से अनादि है
185. कारण-कार्य भाव को जानने वाला ही विद्वान होता है
186. काल क्या है?
187. ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं का अर्थ
188. उपादान कारण प्रकृति से बना कार्य रुप जगत अनित्य होता है
189. पदार्थ विद्या को प्राप्त करने का तरीका
190. ईश्वर ने सृष्टि को वेद वाणी (vedic mantra’s vibrations) से रचा है
191. ईश्वर ने सृष्टि को शब्दायमान रचा है
192. जगत सत्य है
193. ईश्वर ने सृष्टि को यज्ञ (ज्ञान,कर्म, भोग, मोक्ष पुरुषार्थ आदि) के लिए बनाया है
194. ईश्वर,सृष्टि को अपनी उद्योग शक्ति, व्याप्त बल से बनाता है

195. सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति है
196. ईश्वर सृष्टि, आत्मा के भोग और अपवर्ग (मोक्ष) के लिए बनाता है
197. तंमात्राएं
198.सृष्टि परस्पर बनी हुई है
199. ईश्वर की कामना (ईक्षण) सृष्टि निर्माण हेतु होती है
200. सृष्टि निर्माण और प्रलय
201. जो सूर्य, चंद्र, तारे, ग्रह आदि इस सृष्टि में है|वैसे ही इससे पहले वाली सृष्टियो में थे|
202. राजा व सेनापति दुष्टों का नाश करें
203. चक्रवर्ती राजा के गुण
204. राजा व सेनापति का सैन्य धर्म
205. राजा कौन बनना चाहिए, (गुण, कर्म)
206. राजा के मंत्री ,सभापति ,सभाध्यक्ष, कौन व कैसे हो
207. जल सेना
208.वायु सेना
209. अधिक ब्याज नहीं लेना चाहिए
210. भ्रष्टाचार मत करो
211. जो युद्ध में सम्मिलित नहीं है उनको मत मारो
212. कवच (armored jacket)
213. न्यायधीश के गुण ,कर्म
214.राजा और प्रजा का संबंध
215. बड़े सभापतियों ,मंत्रीयों के चमचे ना बनो
216. सबको रोजगार प्रदान करो
217. “पापी राजाओं” का नाश करो
218. राजपुरुष, असुर भाव को त्यागे
219. रानी के कर्तव्य
220. हत्यारें को सजा का प्रावधान
221. "दुष्ट पापियों" को दान देने वाले को दंड दो
222. व्यर्थ युद्ध करने वाले दुष्टो और राजाओं का नाश करो
223. चक्रवर्ती राजा बनने के लिए न्यायकारी राजाओं का दमन मत करो
224. राजा को अपने प्रजा जनों से मिलते-जुलते रहना चाहिए
225. कौन सा राष्ट्र सुखी होता है
226. राजा को अपने पिछलगु लोलुप लोगो से दूर रहना चाहिए

227. राजा अच्छा है ,तो उसकी प्रशंसा करो ,अगर बुरा है तो उसकी निंदा करो, त्याग करो
228. राजदूत के गुण ,कर्म
229. अगर हमसे (आर्यों) से भी कोई पाप हो तो, राजा उसको भी दंडित कर ,राज्य को सुचारू रूप से चलाएं
230. राजा की आवश्यकता क्यों?
231. राजदंड व्यवस्था
232. कौन राजा न बने
234. राजा को अपाहिज, दुर्बल और अनाथों का संरक्षण करना चाहिए
235 . मंत्री ,सभाअध्यक्ष शपथ ग्रहण
236. स्त्री मंत्रालय
237. युद्ध बंदियों (POW) के साथ अनुकूल व्यवहार करो
238. दो राष्ट्र, मित्रतापूर्वक अपने और दूसरे राष्ट्र की 'न्यायिक स्थिरता, रखने में मदद करें
239. उत्तम विदेश नीति
240.राजधर्म
241. सेनापति के गुण, कर्म
242. राजसूय यज्ञ
243. निषिद्ध आयुधो (Prohibited weapons) और अनुचित व्यवहार का युद्ध में प्रयोग करने वाले दुष्ट राजाओं को दंड दो
244. वही युद्ध करना चाहिए जिससे संसार का उपकार हो
245. अन्यायकारी ,दुष्ट ,पापी दुष्कर्मी ,राक्षसों ,के नाश की,दंड स्वरूप ईश्वर से प्रार्थना व उक्त सूक्त से राज– दंड व्यवस्था लागू करना
246. अन्यायकारी शोषक दुष्टों के विरुद्ध युद्ध करना आर्यों का कर्तव्य है
247. आर्य हो या अनार्य अगर आपके ऊपर युद्ध थोपे तो उनका भी नाश करो
248. मन्यु का धारण करो
249. राष्ट्रसभा , राज्यसभा, राजा केंद्रीय परिषद का कार्य ,अधिकार, व्यवस्था आदि का वर्णन
250. शोषक कौन?
251. स्वराज
252. विश्व में शांति स्थापित करो
253. अपना -पराया, देसी -विदेशी कोई भी आपके ऊपर युद्ध करें, हिंसा करें ,उनका नाश करो
254. राजा की सुरक्षा
255. राज तिलक उत्सव

256. युद्ध गीत
257. सेना व्यूह रचना
258. दुष्टो व शत्रुओं का लिखित रिकॉर्ड रखना चाहिए
259. "प्रजा हिंसक" छत्रिय को, राजा दंड दे
260. व्यभिचारी जार को दंड दो
261. भ्रूण हत्या की सजा
262 . सेना ध्वज रंग
263. राजा द्वारा अतिथि सत्कार
264.निर्बल को राजा मत बनाओ
265. रात्रि सुरक्षा सैनिक
266. चोर को दंड दो
267. प्रजा अपने राजा को सदा सुखदायक, शुभ कर्मों को करने के लिए प्रेरणा किया करें
268 .बलात्कारी को प्राण-दंड दो
269. शत्रु राजा, अगर अपनी गलती मान कर युद्ध से पीछे हट जाए, तो उसको मित्र बनाकर यथोचित प्रबंध करके अपनी सेना वापस बुला ले
270. बहुत ज्यादा पापियों को धार्मिक राजा मिलकर पराजित करें
271. चार प्रकार के सैनिक
272. राष्ट्र का स्वरूप
273. वैदिक राष्ट्रगान
274. राजा व मंत्री प्रजा की संतान की तरह रक्षा करें
275. शत्रु को उत्साह देने वाला भी शत्रु होता है
276 . शत्रु के उत्साही को दंड दो
277 . युद्ध में किनको हानि नहीं पहुंचानी चाहिए
278. राजा और सेनापति के पास राज्य में हथियारों की कमी नहीं होनी चाहिए
279. सेनापति, पुरुषार्थी मनुष्यों को ना मारे
280. युद्ध क्षेत्र में घायल सैनिकों हेतु चिकित्सा व अस्पताल का प्रबंध रखो
281. जो सुगुण राजा में है वह गुण राजा द्वारा प्रजा को भी धारण करवाने चाहिए
282. सबका भला हो
283. सब मिलकर उन्नति करें
284. मित्रता
285. पाखंडी दुष्ट से मत डरो

286. मानव महासागरों में द्वीपों पर यात्रा करने वाला हो
287. आत्मरक्षा उपदेश
288. जो मुझे हिंसित नहीं करता उसको मैं भी हिंसित न करूं
289 .मूर्ख, पापिनी ,नारियों से दूर रहो
290.मूर्ख ,पापी, पुरुषों से दूर रहो
291. माता- पिता की संपत्ति संतान की
292. आलसी दुष्टो को ज्ञान ना दो
293. नमस्ते
294. मनुष्य शरीर मिलने पर कैसे कर्म करने चाहिए
295. दुष्टों का ताड़न (सुधार दंड) करो
296. सदा स्त्रियों के बीच रमण करने वाले कामी ,लंपटो से दूर रहो
297. गर्भ हत्या पाप है
298. आर्यो (श्रेष्ठ) को दुष्टों का नाश करना चाहिए
299. दुष्ट पापी, करोड़ों भी हो तो सबको मारो
300.बिना कारण , दूसरों पर हिंसा करने वाले दुष्टो को मारो
301. व्यभिचार करना गलत है
302. जुआ खेलना पाप कर्म है
303. किसी के धर्मजनित सुख को नष्ट मत करो
304. अहिंसक को मत मारो , हिंसा मत करो
305. घास की तरह जड़ जमाते हुए आगे बढ़े
306. सभी मनुष्यों को सुख पूर्वक मिलकर, एक मन होकर रहना चाहिए
307. दुष्ट मनुष्यों का संग न करो
308. द्वेष भाव त्यागो
309. उत्तम वाणी को धारण करो
310. आर्य (श्रेष्ठ गुण कर्मयुक्त) दस्यु (दुष्ट गुण कर्मयुक्त)
311. दुष्टों का नाश करो ,उत्तम मनुष्यों की रक्षा करो
312. दुष्ट आचरण को त्यागो
313. अच्छा से अच्छा व्यवहार और बुरो से बुरा व्यवहार करना चाहिए
314. हिंसक मनुष्यों का साथ त्यागो
315. कुटिलतायुक्त सामर्थ्य, पदार्थ, किसी कुटिल का साथ , का कभी भी ग्रहण मत करो
316.बंधुओं के अधिकार को मत छीनो
317. दुष्ट को मित्र मत बनाओ
318. शत्रु के ऋणी मत रहो

319. झूठे स्त्री-पुरुषों का ताड़न करो
320. श्रद्धा (सत्य धारण)
321.छोटे बड़े भाइयों बंधुओं को एक विचार होकर उत्तम व्यवहार करना चाहिए
322. सभी मनुष्य बराबर है
323. अपाहिज विद्वान का सम्मान करो
324. छुआछूत खंडन
325. कामी लंपटो का त्याग करो
326. सत्यवादी धर्मात्मा, असत्यवादी अधर्मात्मा
327. किसी के घर अचानक बिना आज्ञा मत जाओ
328. पराया धन न लो
329.सबको आर्यत्व प्रदान करो
330. सबको विद्या ग्रहण का अधिकार है
331. मनुष्य बनो
332. धन मांगने वाले निर्धन की मदद करो
333. हिंसको की हिंसा धर्म है
334. स्वार्थ त्यागो
335. अच्छे कर्म करते हुए जीवन जियो
336.अपने साथ-साथ दूसरे मानवो का भी उपकार करो
337.सर्वहित कामना
338. डर को त्यागो
339. कुवासना ,कुसंस्कार आदि का नाश हो
340. सात- कुमर्यादाएँ
341. जीवन में सब कुछ उत्तम हो सुखद व कल्याणकारी हो
342. निर्बल कौन है?
343. समाज को आगे बढ़ाते हुए जिओ
344.ईर्ष्या मत रखो "हानियां"
345. स्वपन?
346. पाप कर्मों से निवृत्ति
347. ऋणी मत रहो
* ऋण समय पर उतार दो
348. काम, क्रोध को काबू रखो
349. तृष्णा का त्याग करो
350. अधर्म पथ पर मत चलो
351. रजोगुण और तमोगुण का त्याग करो

352. हिंसा व दुष्कर्म न करने की प्रतिज्ञा
353.अपने प्रिय व परिजनों से प्रेम से वार्ता करें
354. शुद्र पर हिंसा करने वाले को दंड दो
355. स्त्री के हिंसक को दंड दो
356.ब्राह्मण के हिंसक को दंड दो
357.हिंसक दुष्ट को दंड दो, मारो, नष्ट करो
358. स्वयं शुद्ध होकर ,दूसरों को शुद्ध करो
359. झूठ मत बोलो
360.शुभ सत्य ज्ञान सुनो
361. मैं विद्वानों का प्रिय बनू
362 .मैं सभी प्रजा का प्रिय बनू
363. मैं पशुओं का प्रिय बनू
364. गरीब भूखों को भोजन करवाया करो
365.अत्याचार मत करो
366. शांति सुक्त
367. अधोगामी कौन है?
368. असुर के लक्षण
369. सभी मनुष्यादि प्रजा के लिए कल्याणकारी बनो
370. सत्य ज्ञान को समाज में कहो, चाहे कोई बुरा कहे या भला
371. व्यर्थ की प्रतिज्ञा शपथ मत करो
372. मैं शूद्रों के प्रति अपराध बोध से मुक्त रहूं
373. मनुष्य (मैं) किन-किन पदार्थों ,विषयों ,ज्ञान-विज्ञान आदि में सिद्ध,समर्थ व सामर्थ्यवान होंऊ
374. मैं ब्राह्मणों से प्रीत करूं
375. मैं क्षत्रियों से प्रीत करूं
376.मैं वैश्यों से प्रीत करूं
377.मैं शुद्रों से प्रीत करूं
378.विद्वान चारों वर्णों के मनुष्यों का सम्मान व प्रीति करें
379. मैं हर तरह के अपराध बोध से पृथक रहूं व होऊ
380. मैं सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं
381. हम सभी एक दूसरे को मित्रवत दृष्टि से देखें
382. गृहस्थ आश्रम
383. स्त्री को शिक्षा का अधिकार
384. स्त्री को वेद विद्या का अधिकार

385. विवाह आयु (अवस्था)
386. कन्या, विवाहहेतु कैसा वर चयन करें
387. पुरुष, विवाह हेतु कैसी वधू का चयन करें
388. स्त्री युद्ध में जाया करें
389. शिक्षा व ब्रह्मचर्य के बाद विवाह
390. स्त्री का अपहरण करने वाले को दंड दो
391. नियोग
392. पुरुष पत्नीव्रता रहे,स्त्री पतिव्रता रहे
393. गर्भाधान संस्कार
394. गर्भाधान से पहले पुष्ट भोजन
395. मानव गर्भकाल
396. निसंतान दंपत्ति को अपने वंश हेतु अपने गोत्र का ही बच्चा गोद लेना चाहिए
397. मासिक धर्म में संभोग नहीं करना चाहिए
398 .यौन शिक्षा
399. धाई
400. स्त्रियां अध्यापिका बने
401. कन्याओं को गुरुकुल में स्त्रियां शिक्षा दें
402. स्त्री, भूविज्ञान को जाने
403. गृहस्थ स्त्री पत्नी तेरी संतान उत्पन्न करो
404. समान गुण कर्म स्वभाव वाली स्त्री पुरुष से विवाह करना चाहिए
405. स्वयंवर विवाह
406. स्त्री खगोलशास्त्री बने
407. वृद्ध (शरीर से) पुरुष का युवती स्त्री से विवाह निंदनीय है
408.स्त्री व पुरुष अगर एक दूसरे को पसंद नहीं करते तो उनका विवाह मत करो
409.पति-पत्नी सदा आपस में सुख के साथ रहे
410.10(ten) संतानों तक पैदा करने का उपदेश
411. प्रसव काल विद्या
413.विवाह संस्कार
414.एक समृद्ध खुशहाल घर की परिकल्पना
415. उत्तम संतानों उत्पन्न करो
416. एक पत्नी व्रत
417. गर्भ रक्षा करने का उपदेश

418.पुनर्विवाह
419. स्त्री को, विदुषी स्त्रियों में ही रहना चाहिए
420. हे स्त्रियों सदा सुखी रहो
421. भाई-बहन के विवाह का निषेध
422.स्त्री कमजोर नहीं है
423. स्त्री विद्वान पुरुषों को ही अपना मित्र बनाएं
424.स्त्री को यज्ञ का अधिकार
425.जहां नारी (पत्नी) की पूजा (मान–सम्मान) होती है वही उन्नति होती है
426. ब्रह्मचारिणी कन्या को आचार्या का उपदेश
427. स्त्री (पत्नी) पुरुष (पति) को एक दूसरे से व्यर्थ डरना डराना नहीं चाहिए
428. दंपत्ति सदा एक दूसरे के पूरक, सहायतार्थ कर्म करें
429. स्त्री (पत्नी) न ताड़ने योग्य है
430. स्त्री (पत्नी) अपने पति को उत्तम गुणों का उपदेश दिया करें
431. पत्नी सदैव अपने पति को दुर्व्यवहार व पाप से दूर रहने का उपदेश व रखने का कार्य करें
432. सुशिक्षित नारी किसी से दब के ना रहे
433. स्त्री न्याय विद्या ग्रहण करें
434. स्त्री न्यायाधीश बने
435. स्त्री कैसे पुरुषों को पति ना बनाएं
436. स्त्री राजनीति विद्या ग्रहण करें
437. स्त्री योग विद्या ग्रहण करें
438. पति पत्नी एक दूसरे के मित्र हैं
439. दूर क्षेत्रों ,विदेशों में विवाह करना चाहिए
440. युवावस्था में विवाह करना चाहिए
441.स्त्रियां वैध (doctor) बने
442. स्त्री विद्‌युत(electricity) विद्या जाने
443. स्त्रियां युद्ध में युद्धवाहन (tank, fighter jet etc.) को चलाते हुए युद्ध करें
444. विवाह-विच्छेद (divorce) की आधारभूत परिकल्पना
445. हे स्त्री, तू घर की साम्राज्ञी बन
446. हे स्त्री सभागृह में बातचीत करने वाली बनो
447. स्त्री भोजन बनाने की विद्या जाने
448. स्त्री कृषि विद्या जाने
449. स्त्री जीवन*

450. स्त्री सिलाई विद्या जाने
451. स्त्री के कार्य
452. रसोईघर विद्या
453. पशुपालन, पशुओं का यथा योग्य उपयोग
454. गौशाला (गाय पालन व रक्षा)
455. मांसाहार नहीं करना चाहिए
456. घोड़ा पालन
457. गाय न मारने योग्य है (अघन्या हैं)
458. लाभदायक जीवो पर दया करो
459. मानव आहार व पुष्टता का वर्णन
460. सूक्ष्मजीव
461. गौ हत्यारे को राजा मारे/दंड दे
462. लाभदायक पशुओं की हिंसा ना करो, अपितु उनकी रक्षा करो
463. गाय गव्य पदार्थ
464. पीड़ादायक ,रोग, व्याधि ,उत्पन्न करने वाले जीवो का नाश करो
465. हानिकारक जीवो को हटाओ/मारो
466. जीव जंतुओं की हिंसा करने वाले को दंड दो
467. चार दांतों वाले हाथी का वर्णन
468. डायनासोर जैसे भयंकर रक्त पिपासु जीवो का वर्णन
469. पिशाच (मांसाहारी मनुष्य) को अपने जलपान से दूर रखो
470. पिशाच (मांसाहारी मनुष्य) को दंड दो
471. घोड़े को मत मारो
472. घोड़े का मारने व मांस खाने वाले को दंड दो
473. मांस रक्त आदि से हवन नहीं करना चाहिए
474. व्यभिचारी मांसाहारी को दंड (ताड़ना) दो
475. गुरुत्वाकर्षण बल
476. विद्या का प्रचार करना चाहिए
477. वेद सबके लिए है
478. विद्वानों से शंका समाधान
479. वर्षा चक्र ,जल चक्र
480. पेड़ -पौधे चांद की चांदनी में पुष्ट होते हैं
481. समाधि अवस्था में वेद मंत्रों के अर्थों का ज्ञान लाभ
482. वेद ज्ञान अनादि है
483. वेद नित्य है

484.वेद के मंत्रों पर विचार करने से ज्ञान उदय
485.व्यापार
486. प्रातः काल महिमा
487.अविद्या का नाश करो,विद्या को बढ़ाओ
488.सबसे कमजोर का अस्तित्व (survival of the weakest)
489 विद्वानों के अलग मत रहो
490. सुखद निद्रा लो
491.योगिक सिद्धियां
492.दिन रात पृथ्वी पर सदा कहीं ना कहीं वर्तमान रहते हैं
493.विद्या महिमा
494.गणित विद्या
495.वेदवेता दमन ब्रहमचारी का तिरस्कार कर वेद विरुद्ध कार्य को करने वाले का नाश होता है
496.पापी माता-पिता का साथ मत दो
497.संतान माता-पिता को कष्ट ना दें
498.जल पवित्रकारक होता है
499.सूर्य और पृथ्वी को अलग अलग किया
500. गृहस्थो का विद्वानों के साथ सत्संग
501.योग के आठ अंग हैं
502. किला,गढ़,गांव,सभ्यता निर्माण कैसे व कैसा हो
503.बुद्धि कैसी हो
504.मेखला बंधन
505.केश औषधि वर्णन
506.सूर्य उदय होने के बाद तक होने वाले मनुष्य का तेज क्षीण होने लगता है
507.अंडाशय(overy) के रोग से महिलाओं के शरीर पर ज्यादा बाल आने लगते हैं
508.शाला निर्माण
509.परमेश्वर को जाने बिना मोक्ष संभव नहीं
510. आदिसृष्टि में प्रथम उत्पन्न ऋषियों को चार वेद का ज्ञान प्रकट हुआ
511.चारों वेदों के नाम
512.वेद वाणी आदि मनुष्य पर प्रकट हुई
513.ईश्वर साक्षात्कार (समाधि)से पहले जानने वाले विषय

514. जिस विधि से ऋषियों ने ईश्वर को जाना है वही एक विधि है अन्य कोई भी नहीं है
515.ब्रह्मचारी/ ब्रह्मचर्य महिमा
516 पृथ्वी कहीं से ऊंची, कहीं से नीची,कहीं पर समतल है
517.पृथ्वी महाभूत का गुण गंध है
518.मोक्ष अवस्था
519.यज्ञ कुशल विद्वान मनुष्य सामान्य मनुष्यों को यज्ञ की शिक्षा दें
520.पृथ्वी हाथ पैर आदि अवयवों से रहित है
521. वर्ण रहित मनुष्य
522.विभिन्न औषधीय वर्णन
523 पृथ्वी गोलाकार है
524.परा,पश्यंति,मध्यमा ,वैखरी
525 योगी सूक्ष्मवाणी (परा-पश्यंति) आदि का ज्ञान प्राप्त करता है
526.वेद ज्ञान महिमा
527. देव यज्ञ
528 वेद आदि ज्ञानवाणी आदि भाषा ज्ञान भाषा है
529. सबकी अपनी अपनी योग्यता होती है
530.हवन की राख का भक्षण
531. धरती पर ऋतु चक्र चंद्रमा के कारण व्यवस्थित होते हैं
532.सोम खाद्य अलग है सोम धारक अलग है
533.विद्‌युत चुंबकीय सूर्य प्रकाश
534.सूर्य में चुंबकीय क्षेत्र
535. पेड़ पौधे जानवरों से पहले पैदा होते हैं
536 .चुंबकत्व और वर्षा
537 .अपने शरीर में ही रोगों से लड़ने वाली शक्ति को बनाओ
538. यांत्रिक (बिजलीयुक्त) अस्त्र-शस्त्र
539. सूर्योदय दिशा
540. सूर्य प्रकाश चिकित्सा
541. अग्निहोत्र से रोगाणु आदि नष्ट-भ्रष्ट होते हैं
542. मानसिक दुर्भावना ,ईर्ष्या लोभ लालच आदि से मुक्ति
543. यज्ञ में विघ्न डालने वाले दुष्ट को सजा दो
544. वाक् विज्ञान
545.अंतरिक्षस्थ पिंडो को हाथी घोड़े नहीं चलाते,अपितु ईश्वर चलाता है।

546.ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की उपासना मत करो
547.शल्य चिकित्सा
548.ईश्वर त्रिपाद समस्या हल
549.वानप्रस्थ आश्रम
550. जिस विषय में आपकी रुचि है उसमें दक्षता प्राप्त करो
551. गुरु-आचार्य का शिष्य को वर्ण देना
552. आत्मा स्तुति (वीर-रस)
553.योग बल से आकाश गमन
554.अग्निहोत्र पुरोहित योग्यता
555.जीवात्मा सतोगुण को धारण कर रजोगुण, तमोगुण को त्याग कर परमात्मा प्राप्ति कर सकता है
556.चंद्र ग्रहण
557.संस्कृत "शब्द"
558. योगाचार्य गुण कर्म
559. जागरूक पुरुषार्थी को ही सफलता मिलती है
560. जल औषधि वर्णन
561. तिल तेल औषधि
562. निर्धनता "वर्णन" निर्धनता बहुत कष्टदायक,इसको दूर करो पुरुषार्थ से
563. गौदूध–गौघृत का सेवन करो
564. समाज में स्त्री पुरुष इस तरह प्यार से रहे जैसे माता पुत्र को प्यार करती है
565. दिशाओं के नाम
566. चावल पकाना
567. अलग माता-पिता से पैदा हुए भाई बहन मिलकर बंधु धर्म का पालन करें
568. वस्त्र आदि पहनने का उपदेश
569. वेदज्ञाता अगर वेद वाणी का ज्ञान अन्य को नहीं देता तो वह नष्ट भ्रष्ट हो जाता है
570.बहुत सारे भूगोल ग्रह हैं
571. यज्ञोपवित
572.पर्वतों में रहने वालों का सत्कार करो
573.वर्णसंकर का सम्मान करो
574.शूद्र का सत्कार करो
575.जंगली मनुष्य का आदर सत्कार करो

576.अस्त्र-शस्त्र बनाने वाले का सम्मान करो
577.गो,मछली और चींटी आदि को प्रेम हेतु, दया हेतु अन्न दो
578.एलियंस 👽 का भी मान सम्मान करो
579.योगाभ्यास के बिना खाली शब्द अर्थ, खंडन-मंडन आदि से परमात्मा को नहीं जाना व प्राप्त किया जा सकता
580.सूर्य किरण संसार को पुष्ट करती है
581.विद्वानों को एक साथ मिलकर सत्य सिद्धांतों पर स्थिर रहना चाहिए
582.अतिथि 3 दिनों तक ही घर में रुके
583.सत्य तक पहुंचने के तरीके
584.सुई
585.हर जगह का जल शुद्ध रखो
586.बादलों के विभिन्न प्रकार
587. वैदिक महीनों के नाम
588.अपना उद्धार स्वयं करो
589. ऋतुअनुसार सुख हेतु रंगों का चयन
590.भैंस (शब्द)
591.विभिन्न पशु -पक्षियों के व्यवहार व गुण व उनका यथा योग्य उपयोग
592.पंच भूतों के नाम
593.नदियों,पहाड़आदि पर एकांत जगह पर योगाभ्यास करना चाहिए
594.मनुष्य जीवन के यज्ञ(कर्तव्य)
595. विद्युत का अति सूक्ष्म विज्ञान
596.आप्त मनुष्य के गुण
597. जो व्यक्ति बुद्धिहीनो को बुद्धिमान व नीच वर्णों को उच्च वर्ण करते हैं वही महान विद्वान होते हैं
598. हे ईश्वर व राजन हमारे बीच उत्तम प्रश्न करता व उत्तम उत्तर दाताओं को उत्पन्न कीजिए
599. धर्मस्य मूलम अर्थम
600.चार युगों के नाम
601.सूर्य ,पृथ्वी से पहले उत्पन्न होता है
602.ईश्वर व गुरुजनों से मुझे उत्तम बुद्धि प्राप्त हो
603. प्रातकाल औषधियों का रस पियो
604.संतानों की हत्या मत करो
605. गाय का घी पिया करो

606. ईश्वर हमारी किस तरह मदद करता है वह कैसे कब हमारी बुद्धि में शुभ गुण कर्मों की प्रेरणा करता है इसको आत्मा नहीं जानता
607 .मनुष्य को पदार्थों का भोग त्याग भाव से करना चाहिए
608 .मनुष्य निष्काम कर्म करता हुआ 100 वर्ष जीने की कामना करें
609.जो मनुष्य जड़ प्रकृति की उपासना करते हैं वह अंधकार में गिरते हैं
610.वसंत ऋतु
611 .ग्रीष्म ऋतु
612.वर्षा ऋतु
613.शरद ऋतु
614.हेमंत ऋतु
615.शिशिर ऋतु
616. बिना विचारे वेद को धारण करने से प्रजा नष्ट भ्रष्ट होती है
617 .वेद को यथावत विचार करके ग्रहण करें
618. जो व्यक्ति वेद वाणी को कुमार्ग हेतु उपयोग करता है वह युवकों का हत्यारा होता है
619 .वेद ज्ञान सुपात्र जिज्ञासाओं को सिखाना चाहिए
620. पापी भ्रष्ट कामी लंपट मनुष्य वेद वाणी को ग्रहण करके भी समाज हित नहीं कर सकता
621. वेद ज्ञान कुपात्रों को मत दो
622. वेद विद्या को जानकर जो कुमार्ग पर चलता है वह जल्दी ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है
623 .वेद विद्या के विपरीत चलने वाला नष्ट भ्रष्ट हो जाता है
624. अब्रह्मचारी वेद वाणी का संपूर्ण लाभ नहीं ले सकता
625. ब्रह्मचारी को सताने वाले क्षत्रिय (नास्तिक) का सर्वनाश हो जाता है
626.ब्रह्मचारी विद्वानों को सिखाने वाला क्षत्रिय नास्तिक को दंड दो
627 .अधर्मी मनुष्य को उसका फल इसी जन्म में या अगले जन्म में मिलता है
628.ब्रह्मचारी विद्वानों के हानिकारक अपराधी नास्तिकों को दंड दो
629.मानसिक वाचनिक दैहिक 3 तरह के पाप-पुण्य कर्म होते हैं
630.जिन कर्मों से ईश्वर का अनुमान होता है वह कार्य ईश्वर द्वारा किए होते हैं
631.शुन्य(0) शब्द
632.आरामदायक वस्त्र पहने
633 .अतिथि सत्कार का फल
634. अतिथि सत्कार कैसे करें
635.झूठे पाखंडी पापी अतिथि का तिरस्कार करो

636.पुरुषार्थ हेतु आत्मस्तुति
637.भूतकाल में भविष्य भविष्य में भूतकाल रखा हुआ है
638.आधिदेविक आधिभौतिक अध्यात्मिक सुख-दुख
639.पितृ यज्ञ
640.पितृ ऋण
641. पितृ का हमारे प्रति वह हमारा पितृ के प्रति कर्तव्य
642. अन्न को नष्ट मत करो
643.वेद की मर्यादा से बाहर रहने वाले को मोक्ष नहीं मिलता
644.स्वतंत्र जहां चाहो वहां विचरण करो
645. पित्र कर्तव्य उपदेश
646. शुद्ध जल से भरी हुई कृत्रिम नालिया समाज में हो, बनाओ
647. नक्षत्र 28
648.शुद्ध छिंक ,अशुद्ध छिंक
649. स्वर्ण धातु महिमा
650. तर्क द्वारा ईश्वर का अंगीकार करो
651.उपनिषद शब्द
652.आशा (hope) महिमा , आशावान रहो
653.शरीर को स्वस्थ रखो
654. शास्त्रार्थ
655.मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ है
656.जिंदगी से दुखी,हारे हुए नकारात्मक,निराशावादी मनुष्य के लिए ईश्वर का उपदेश
657.सामाजिक शास्त्र समाज में भले बुरे का विधान
658.घोड़ा चाहिए तो अस्तबल में जाओ, गौशाला में नहीं .
(अर्थात logical बुद्धि का उपयोग किया करो)
659.जूते shoes
660. धूप से चलने वाले वाहन यंत्र
661. सुखी जीवन हेतु किसान का अनुसरण करो
662. अग्निहोत्र शुद्धि करता है
663. यज्ञ सदा सर्वहित हेतु करो
664. जैसा करोगे वैसा भरोगे
665. खरीदारी व्यवस्था
666. सूर्य से सीधे नजरें मत मिलाओ
667. अंतरिक्ष गमन करो

668. माता का संतान से वात्सल्य
669.माता पिता संतान को विद्या प्राप्ति के लिए आदेश दें
670.तर्क से ही पदार्थ विद्या प्राप्त होती है
671.यज्ञ संसार को पवित्र करो
672. विद्यार्थियों को भोजन बनाना सिखाओ
673. माता-पिता संतान को गलत शिक्षा व कष्ट ना दें
674.संतान माता को साथ रखें
675.माता से ज्ञान प्राप्त करो
676.माता को मन से भी कष्ट मत दो
677.विद्वानों के रसोइए
678. न्यायधीश के न्याय का विरोध आचरण ना करो
679. सूर्यास्त सूर्य को देखना चाहिए
680.है वैद्य लोगों आपस में औषधियों हेतु ज्ञान चर्चा कर रोगों का निदान करो
681 .सभी मनुष्य को शस्त्र धारण करना चाहिए
682. मुंडन चूड़ाकरण संस्कार
683.बालक के दांत निकलना उसका आहार आदि अन्नप्राशन संस्कार
684.प्राण ,अपान ,व्यान ,समान
685.उपनयन संस्कार
686.सूर्य में गायत्री आदि छंद कंपित है
687.अंत्येष्टि संस्कार
688. INFERTILITY रोग को दूर करो हे वैद्य
689.धन, धन को कमाता है
690.अध्यात्म
691.गुरुकुल ,गुरु शिष्य संबंध आचरण व्यवहार कर्तव्य आदि
692.आयुर्वान बनो
693. वर्ण व्यवस्था गुण कर्म प्रधान होती है
694. वेद चार हैं
695. पुरुषार्थ के बिना लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकती अर्थात पुरुषार्थी बनो
696.पाप कर्म को बुद्धि से दग्ध करो
697. दान ,दान महत्व
698. युवा पुरुषार्थ
699. मेघ विद्या
700. उपदेशों को तर्क वितर्क कर मनन कर के उसको धारण करें
701. बिना ज्ञान अर्जित किए हुए व्यर्थ तर्क मत करो

702. नशीले पदार्थों का बिना वैद्य परामर्श के सेवन मत करो
703. शूद्र कुल में उत्पन्न बालक, पढ़कर द्विज वर्ण धारण कर सकता है
704. विद्या किसको प्राप्त होती है और किसको प्राप्त नहीं होती
705. संवाद ,प्रश्नोत्तर, दान-रहित मूर्ख व्यक्ति समाज से दूर रहो
706. सपरिवार सुखी रहो
707. जटाजूट ब्रह्मचारी
708. ज्ञानवाणी वेद मंत्र सर्वत्र हैं
709.बिना चोटी वाले ब्रह्मचारी
710. दो लकड़ियों को आपस में रगड़ कर अग्नि को प्रकट करना
711. ग्रहण करने योग्य विद्या
712. वसु 24 से 40 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करने वाले
713. सन्यास आश्रम ,सन्यासियों के गुण कर्म
714. सन्यासी का सेवा सत्कार करना चाहिए
715. लिपि विद्या
716. विदेशों में जाकर भी धन कमाओ
717. रूद्र जो 44 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करते हैं
718. आदित्य जो 48 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करते हैं
719. अतिथि गुण कर्म
720. कुत्ता पालन
721. भाप शुद्ध जल होता है
722. बुद्धि का उपयोग सदा श्रेष्ठ कर्मों में करें
723. उपासना काल
724.आत्म नियंत्रण
725. यज्ञ कर्ता , वेदवेता ब्रह्मा
726. सबको शिक्षित करो
727. ईश्वर प्राप्ति समाधि में बाधक पाप कर्म
728. मोक्ष पद ब्रह्मानंद सर्वोपरि है, कोई इसके तुल्य नहीं
729. सूर्य का रंग सफेद है
730. किसी भी भाषा ,वाणी में ईश्वर स्तुति, प्रार्थना कर सकते हैं
731. प्राचीन और नवीन दोनों पथो को विद्वान के सानिध्य में ग्रहण करो
732. ऋषि गुण, कर्म ,धर्म
733. कर्म योग कर्म योगी गुण कर्म
734.ज्ञान योग, ज्ञान योगी के गुण-कर्म
735. ईश्वर से प्रार्थना मंत्र

736. ईश्वर स्तुति मंत्र
737.आचार्य गुण कर्म धर्म
738. मन इंद्रिय
739. मन एक है
740. चक्षु इंद्री
741. कान इंद्री
742. 33 देवता
743.ब्रह्मचर्य पालन, लाभ
744. ईश्वर उपासना का फल
745.वेद मंत्रों के तीन अर्थ
746.स्वाहा
747. शुभ कर्मों के बिना ईश्वर उपासना नहीं होती
748. संवाद ,प्रश्नोत्तर .दान रहीत, मूर्ख व्यक्ति, समाज से दूर रहो
749. मनुष्य वेदों को लुप्त ना होने दें
750. ज्वार-भाटा चंद्रमा के कारण
751. व्यापक-व्याप्य संबंध
752. वेद ज्ञान अनंत है
753. वेद ज्ञान किस तरह प्रकट होता है
754. मनुष्य अपनी इच्छा, बुद्धि अनुसार कोई भी कार्य ,रोजगार कर्म कर सकता है
755.ईश्वर की उपासना
756. शरीर कर्म-फल भोगने के लिए भोग साधन
757. योग उपासना
758. वायुयान विद्या
759. अग्निहोत्र हवन यज्ञ
760. एक ईश्वर की उपासना
761. चार वर्णों का विभाग
762. आठ वसु
763. बिजली
764. सोमरस
765. कर्मफल व्यवस्था
766. तकनीकी का विकास करो
767. प्राणायाम
768. धर्म(लक्षण)
769. ज्योतिष

770. पहिया विद्या
771. आकाश तत्व का गुण शब्द है
772. मृत्यु का समय निश्चित नहीं होता
773. अस्त्र-शस्त्र विद्या
774. मोक्ष किसको मिलता है
775. अहिंसित यज्ञ
776. विद्वान-अतिथि का सेवा सत्कार,,, किस प्रकार करना चाहिए
777. नाव ,पनडुब्बी विद्या
778. वैद्य के गुण कर्म
779. कुत्ते को शिक्षा
780. ऑर्गेनिक फार्मिंग
781. 10 दिशाएं
782. मानव आयु
783. औरतों का वर्ण धारण
784. ब्रह्मचर्य आश्रम
785. धरती , सूर्य के साथ अनुसरण ,अनु भ्रमण, गमन ,गति करती है
786. हाथी शिक्षा
787. कुआं विद्या
788. वात पित्त कफ
789. गुरुकुल परीक्षा
790. तार विद्या विद्युत
791. माली विद्या
792. पृथ्वी पर दिन-रात किस प्रकार होते हैं
793 .उषाकाल की धूप औषधि होती है
794. कृषि,खेती
795. माता-पिता , वृद्धों की सेवा करो
796. आकाश अनंत है
797. प्राण
798. तार विद्या टेलीफोन
799. वस्त्र बुनाई
800. सुखी जीवन की कुंजी क्या है
801. युद्ध में पापियों को मारने के लिए खंदक व गड्ढे बनाना
802. द्विज
803. संतान को माता-पिता की सेवा करनी चाहिए

804. छंद विद्या
805. वाणी के चार प्रकार
806. खेल-कूद
807. रॉकेट विद्या
808. सोनिक बूम (sonic boom)
809. गृहस्थ ,आभूषण पहन सकता है
810. अग्नि,विद्‌युत से चलने वाले वाहन,विमान
811. आचार्य,अध्यापक के गुण कर्म
812. धरती गमनशील है
813. छह ऋतु
814. गोत्र
815. योग विद्या से ज्ञान लाभ
816. सूर्य तारे(सूर्य) वसुओं से देखने पर पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण दिशाओं में आते जाते दिखते हैं वास्तव में यह झूठ है
817. कर्म स्वतंत्रता के कारण दूसरे के कर्मों का भोग
818. मानसिक विकारों से मुक्ति हेतु, वैद्य
819. सामवेद गायन
820. शिक्षित मानव के गुण कर्म धर्म
822. घी, त्वचा के लिए लाभदायक
823. कर्म बुद्धि युक्त हो
824. औषधि,वनों की रक्षा करो
825. उषाकाल, सूर्योदय के समय उठना चाहिए
826. किसको गुरु(मार्गदर्शक) बनाएं
827. उत्तम हवन-कर्ता कौन?
828. वसु,रुद्र, आदित्य देव
829. किसका प्रमाण मान्य है
830. सूर्य में अग्नि विद्‌युत(plasma) रूप है
831. दैहिक ,वाचनिक ,मानसिक कर्म होते हैं
832. सूर्य गमनशील है
833. अग्निहोत्र मंत्र-अर्थ के साथ करना चाहिए
834. अग्निहोत्र का समय
835. गुरु कौन हो
836. विद्वानों की निंदा, हिंसा ना करो
837. शत्रु = दुष्ट ,अन्यायकारी

838. शहद
839. बुद्धि (महत-तत्व) सर्वव्यापक है
840. ईश्वर आज्ञाअनुसार चलने वाला उपासक व्यक्ति अपराजित होता है सुखी रहता है
841. जगत ,जीवन के रहस्य हेतु विद्वानों से प्रश्न-उत्तर
842. समाज में उत्तम ,विद्वानों ,बुद्धिमान व्यक्तियों की प्रतिष्ठा करो
843. बिजली प्रकाश के माध्यम से अंतरिक्ष में संदेश भेजना
844. क्षत्रिय गुण,कर्म,धर्म
845. ब्राह्मण गुणधर्म
846. शुद्र गुणधर्म
847. वैश्य गुण कर्म धर्म
848. माता-पिता को बचपन में ही बच्चों को संस्कार शिक्षा व पाप कर्मों का ज्ञान देना चाहिए
849. सौरमंडल शिक्षा
850. सनातन धर्म
851. पहाड़ पर्वत निर्माण
852. नदियों के नामों का वैदिक अर्थ
853. विभिन्न नस्लो व शारीरिक लक्षणों से युक्त मनुष्यो से समान बर्ताव करो
854. अच्छा देखो ,अच्छा सुनो
855. मनुष्य शरीर के विभिन्न अंगों का कार्य वर्णन
856. विद्वान मनुष्य के गुण-कर्म
857. भूत, शब्दार्थ-संबंध अनादि है
858. व्यर्थ बकवास मत करो
859. हर बुराई को अपने से दूर रखें

ओ३म्

1. ईश्वर का निज नाम है

यजुर्वेद-

Y-2:13

Y-40:15

Y-40:17

2. ईश्वर सर्वव्यापक है।

ऋग्वेद-

1:1:4 , 3:55:5 , 7:99:7 , 8:39:8 , 9:13:6
1:6:1 , 3:55:10 , 7:100:1 , 8:41:1 , 9:15:4
1:8:10 , 4:3:7 , 7:100:2 , 8:41:3 , 9:17:1
1:9:1 , 4:7:1 , 7:100:3 , 8:45:17 , 9:18:1
1:9:10 , 4:53:5 , 7:100:4 , 8:52:3 , 9:28:5
1:13:10, 5:4:2 , 7:100:5 , 8:60:15 , 9:33:3
1:25:15 , 5:81:3 , 7:100:6 , 8:60:17 , 9:37:3
1:31:2 , 5:87:9 , 8:1:7 , 8:65:3 , 9:40:2
1:81:5 , 6:22:1 , 8:1:9 , 8:66:3 , 9:58:1
1:97:6 , 7:5:3 , 8:6:28 , 8:68:2 , 9:58:2
1:100:15, 7:36:9 , 8:6:30 , 8:70:5 , 9:58:3
1:115:1 , 7:66:4 , 8:11:8 , 8:74:10 , 9:58:4
1:154:1 , 7:73:3 , 8:12:7 , 8:81:2 , 9:64:30
1:154:2 , 7:76:1 , 8:12:12 , 8:83:7 , 9:67:14
1:154:3 , 7:78:1 , 8:13:11 , 8:102:11, 9:71:1
1:164:30, 7:88:2 , 8:17:14 , 9:2:9 , 9:71:7
2:24:10 , 7:97:6 , 8:19:32 , 9:5:1 , 9:72:6
2:24:11 , 7:99:1 , 8:19:37 , 9:5:2 , 9:74:2
3:20:3 , 7:99:2 , 8:23:24 , 9:6:5 , 9:74:4
3:49:1 , 7:99:3 , 8:31:10 , 9:11:4 , 9:74:5

सामवेद-

9:80:3 , 9:108:10	
9:82:3 , 9:108:12	S - 35
9:83:5 , 9:114:2	S - 40
9:84:2 , 10:4:5	S - 145
9:86:5 , 10:15:3	S- 366
9:86:6 , 10:17:6	S - 599
9:86:14 , 10:36:14	S - 617
9:86:39 , 10:55:6	S - 1304
9:89:6 , 10:81:1	S -1486
9:91:3 , 10:81:3	S -1568
9:92:1 , 10:82:2	S -1625
9:96:22 , 10:90:1	S -1672
9:98:7 , 10:90:4	S-1674
9:98:9 ,10:92:15	S-1875
9:101:7	
9:101:10	
9:103:6	
9:105:4	
9:106:1	
9:106:2	
9:106:9	
9:106:11	
9:107:1	
9:107:18	
9:108:7	

अथर्ववेद-

1:1:1 , 10:5:30 , 17:1:15
4:33:6 , 10:5:31 , 17:1:16
5:2:6 , 10:5:32 , 17:1:17
6:3:1 , 10:5:33 , 17:1:18
6:51:1 , 10:5:34 , 17:1:19
6:80:1 , 10:5:35 , 17:1:24
7:17:4 , 11:4:20 , 18:1:45
7:21:1 , 13:2:2 , 19:6:1
7:26:1 , 13:2:31 , 19:6:2
7:26:2 , 13:2:36 , 20:58:4
7:26:3 , 13:3:14 , 20:64:1
7:26:4 , 15:5:1 , 20:107:9
7:26:5 , 15:5:2 , 20:107:11
7:26:6 , 10:5:3
7:26:7 , 17:1:6
7:26:8 , 17:1:7
9:4:3 , 17:1:8
9:4:11 , 17:1:9
10:5:25, 17:1:10
10:5:26, 17:1:11
10:5:27, 17:1:12
10:5:28-29, 17:1:13-14

यजुर्वेद

Y - 1:4
Y - 5:15
Y -6:3
Y-11:6
Y-12:5
Y-17:17
Y -17:19
Y -19:56
Y -23:50
Y -31:1
Y -32:2
Y -32:8
Y -40:4
Y -40:8

3. ईश्वर सर्वज्ञ है।

ऋग्वेद-

1:1:1 , 9:63:20 , 9:86:23
1:9:1 , 9:64:30 , 9:86:39
1:9:7 , 9:66:1 , 9:86:44
5:81:2, 9:66:10 , 9:89:6
7:76:7 , 9:66:23 , 9:92:2
7:86:7 , 9:71:7 , 9:94:2
8:11:6 , 9:72:4 , 9:94:3
8:68:2 , 9:72:6 , 9:97:53
8:76:1 , 9:74:2 , 9:100:5
8:102:1 , 9:75:1 , 9:101:10
8:102:5 , 9:76:1 , 9:102:6
9:7:4 , 9:78:2 ,9:105:4
9:8:9 , 9:82:2 , 9:106:5
9:18:2 , 9:83:3 , 9:107:7
9:25:3 , 9:84:5 , 9:107:18
9:25:5 , 9:85:9 , 9:107:24
9:27:1 , 9:86:3 , 9:108:10
9:28:1 , 9:86:5 , 9:109:8
9:28:5 , 9:86:13 ,10:17:3
9:39:1 , 9:86:19

सामवेद-

S- 35
S-40
S-955

अथर्ववेद-

A -4:39:10

यजुर्वेद-

Y-2:4
Y-32:10
Y-40:8

4. ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप है|

ऋग्वेद -

1:1:8
1:10:11
4:26:3
5:42:2
5:54:7
6:22:3
9:65:5
9:65:8
9:76:1
9:84:5
9:85:3
9:86:10
9:86:35
9:96:8
9:97:32
9:99:6
9:101:2

अथर्ववेद-

10:8:1

5. ईश्वर ज्ञानस्वरूप है

ऋग्वेद-

1:1:9
1:2:1
1:2:5
1:115:1
3:55:2
7:78:3
7:79:3
7:79:4
8:68:2
9:11:8
9:97:37
9:98:7

अथर्ववेद-

A- 13:4:50
A-13:4:51

यजुर्वेद-

Y-17:17

6.ईश्वर सर्वशक्तिमान है

ऋग्वेद-

1:2:1 , 10:81:3

1:2:2

1:8:3

1:23:14

7:97:78

8:12:17

8:66:3

8:68:2

8:80:1

9:66:10

9:87:2

9:96:19

10:48:5

यजुर्वेद-

Y-40:8

7.ईश्वर सर्व अंतर्यामी है

ऋग्वेद-

1:2:1
1:2:6
1:4:3
1:9:6
1:9:9
1:31:1
1:97:6
1:115:1
7:38:6
7:78:2
9:78:2
9:86:36
9:98:5

सामवेद-

S- 688
S- 712
S- 814
S- 888

यजुर्वेद–

Y- 13:46
Y- 35:14
Y- 37:2

अथर्ववेद–

A- 2:1:1
A- 2:1:2
A- 7:111:1
A- 9:10:10
A- 9:10:11
A- 14:1:37
A- 15:5:1-16

8. ईश्वर वेदों का प्रकाशक है।

ऋग्वेद-

1:2:3 , 9:95:4
1:9:4 , 10:54:2
1:10:11, 10:90:9
1:40:5
1:59:5
1:164:35
4:26:1
4:42:7
6:61:13
9:12:6
9:25:5
9:47:3-4
9:63:25
9:65:3-4
9:67:13
9:78:1
9:86:12
9:86:33

सामवेद

S- 28

यजुर्वेद–

Y-31:7

अथर्ववेद–

A- 10:7:19-20
A- 13:1:12
A-19:6:13
A- 20:91:8

9. ईश्वर दुष्टों को दंड देता है

ऋग्वेद-

1:4:6
1:7:9
1:24:9
1:36:13
2:12:10
4:42:7
7:87:6
8:6:16
9:71:1
10:27:6

अथर्ववेद-

A- 16:7:1

यजुर्वेद-

Y- 40:8

10. ईश्वर करुणामयी है

ऋग्वेद-

1:4:10

1:9:5

1:25:1

11.ईश्वर सृष्टिकर्ता-धर्ता- हर्ता है

ऋग्वेद-

1:7:3 , 4:53:2 , 9:86:10
1:18:4, 4:53:3 , 9:86:36
1:18:5 , 4:53:7 , 9:97:18
1:30:16, 4:54:2 , 9:97:40
1:31:2 , 4:54:3 , 9:108:3
1:32:3 , 7:37:8 , 10:90:8
1:35:2 , 7:66:4 , 10:90:9
1:35:11, 7:80:1
1:50:10 , 8:41:4
1:188:9 , 8:44:11
2:15:4 , 9:3:6
2:38:1 , 9:26:3
3:20:5 , 9:34:1
4:17:17 , 9:84:5

सामवेद-

S- 599
S- 943

अथर्ववेद-

A- 4:30:1
A- 5:3:9

यजुर्वेद-

Y-13:3
Y- 13:4
Y-17:26
Y-17:27
Y- 17:82
Y- 31:2

12. ईश्वर अचल है

ऋग्वेद-

1:24:6
9:1:2
9:86:6
9:102:4

यजुर्वेद–

32:4
37:17
40:4
40:5

सामवेद-

72

अथर्ववेद–

7:2:1
9:10:8
10:2:26-27
10:10:12
10:10:17
18:4:5-6
20:25:5
20:34:12
20:132:2-3
20:135:1

13. ईश्वर अनादि है

ऋग्वेद-

1:31:1-3
1:72:1
1:164:20
3:20:4
9:36:3
9:59:4
9:67:8
9:68:2
9:71:7
9:77:2
9:86:20
10:27:7

यजुर्वेद–

Y-40:8

14 .ईश्वर सृष्टि की नियम व्यवस्था करता है

ऋग्वेद-

1:50:7
1:59:1-2
1:81:5
1:96:8
2:38:3
9:2:4
9:10:8

सामवेद–

S- 77

अथर्ववेद–

A-10:8:42

15. ईश्वर न्यायकारी है

ऋग्वेद-

1:90:9

7:60:1

7:93:6

7:64:3

7:66:4

7:66:7

7:93:7

8:67:8

8:70:6

9:88:8

अथर्ववेद–

6:63:2

13:4:5

18:1:34

18:1:49-50

18:1:54

18:4:54

16. ईश्वर अत्यंत सूक्ष्म है

ऋग्वेद-

9:76:4

9:81:2

9:86:15

9:95:4

10:86:1-23

यजुर्वेद-

Y-20:21

17. ईश्वर अपने विषय में हुए उपासक के पाप को क्षमा कर देता है

-उदाहरण- कभी ईश्वर को बुरा भला कहा हो

ऋग्वेद-

7:87:7

18. ईश्वर बहुनामी है

ऋग्वेद-

1:164:46

8:11:5

8:31:13

10:114:5

19. ईश्वर एक(1) है

ऋग्वेद-

1:7:10 , 10:82:3
1:52:14 , 10:114:5
2:13:3 , 10:121:1
2:13:6 , 10:121:3
3:55:1-22 , 10:121:8
3:56:2
5:81:1
7:98:6
8:13:9
8:15:3
8:15:11
8:16:8
8:17:15
8:58:2
8:62:2
10:48:7
10:81:3

सामवेद–

S- 372
S- 387
S- 389
S- 1125
S- 1341
S- 1620

यजुर्वेद– 25:10-11

Y- 5:14
Y- 12:117
Y- 17:19
Y- 17:26-27
Y- 17:30
Y -22:34
Y- 23:13
Y -23:50
Y- 27:25-26
Y- 37:2
Y- 40:4

अथर्ववेद–

2:1:3 , 13:3:17
2:2:1 , 13:4:12-13
2:2:2 , 13:4:15-24
3:13:4 , 18:2:50-51
4:2:7 , 19:23:20
4:10:6 , 19:23:22
4:37:11 , 19:45:5
5:11:6 , 20:34:17
5:16:1 , 20:36:1
5:28:8 , 20:61:6
7:21:1 , 20:62:10
8:9:25 , 20:65:1
8:9:26 , 20:132:1
9:9:10
9:10:28
10:2:14
10:8:11
10:8:28
10:10:24
13:2:3
13:2:26

20. ईश्वर अविनाशी है

ऋग्वेद-

2:35:2 , 9:37:3
3:20:3 , 9:66:11
3:28:5 , 9:84:2
3:55:1 , 10:15:3
3:55:2 , 10:25:7
4:1:1 , 10:27:14
5:54:7 , 10:92:15
7:4:6 , 10:149:3
7:60:1
8:101:11
9:3:1
9:3:8
9:9:4
9:27:4
9:28:1
9:28:3

सामवेद–

S- 35
S - 45

अथर्ववेद–

A-2:1:2
A- 13:2:1
A-18:3:40

21. ईश्वर के नियम अटूट है

ऋग्वेद-

R-2:38:9

अथर्ववेद–

19:46:1

19:46:2

19:46:3

19:46:4

19:46:5

19:46:6

19:46:7

22. ईश्वर चेतन (ज्ञानस्वरूप) है

ऋग्वेद-	सामवेद–	यजुर्वेद-
3:3:8	S- 642	Y-22:10
4:7:2		Y-22:11
7:32:24		Y-36:24
7:86:8		
8:13:18		
9:64:10		
9:97:33		

23. ईश्वर ज्ञान प्रकाश है

ऋग्वेद-

3:20:3

4:33:3

7:78:3

7:78:5

7:79:2

8:46:28

8:98:5

24. ईश्वर बंधन रहित है

ऋग्वेद-

R- 3:55:6

अथर्ववेद–

A- 16:1:1

25.ईश्वर का विस्तार अनंत∞ है

ऋग्वेद-	अथर्ववेद-
6:22:7	10:8:12
7:88:5	20:123:2

26. ईश्वर, आत्मा का मित्र है

ऋग्वेद-

4:17:17

7:63:6

7:66:2

8:44:14

9:2:6

10:25:10

10:86:1

अथर्ववेद–

A- 7:26:6

यजुर्वेद–

Y- 32:10

Y- 33:24

27. ईश्वर हर ज्ञान व कर्म का निमित्त कारण है

ऋग्वेद-	अथर्ववेद-
4:26:1	4:30:3
7:80:3	4:30:4
8:36:5	
8:43:14	

28. ईश्वर आत्मा का हित चाहता है

ऋग्वेद-

4:26:1

29. ईश्वर ने यह पृथ्वी आर्यों को दी है

ऋग्वेद-

4:26:2

30. ईश्वर प्रकृति में अनादि काल से सूक्ष्म रूप से व्याप्त है

ऋग्वेद-

4:32:13
8:44:20
9:32:4
9:37:2
9:38:6
9:40:2
9:107:1
10:27:19
10:65:1

सामवेद–

S-1670

यजुर्वेद–

Y-23:51
Y- 23:52
Y- 32:8

31. ईश्वर, जगत की उपमा से स्वयं को, मनुष्य के समक्ष प्रकाशित (वर्णित) करता है

ऋग्वेद-	सामवेद-
4:42:2	71

32.ईश्वर अनंत ∞ विद्या युक्त सत्ता है

ऋग्वेद-

4:42:7

8:99:8

सामवेद–

S-617

यजुर्वेद–

Y-37:2

33.ईश्वर अखंड है

ऋग्वेद-

1:54:6

7:62:4

7:87:7

7:93:7

9:101:3

9:107:2

यजुर्वेद–

Y-40:8

अथर्ववेद

A-6:122:1-2

A- 10:8:21

34. ईश्वर अहिंसक है

ऋग्वेद-

5:54:7

8:78:6

9:3:8

अथर्ववेद-

A- 20:134:1

35. ईश्वर पीड़ा से रहित है

ऋग्वेद-

5:54:7

अथर्ववेद-

4:16:8

36. ईश्वर पवित्र है

ऋग्वेद-		सामवेद–
6:4:3	, 9:75:4	S- 1403
7:87:6	, 9:82:2	S- 1404
7:97:7	, 9:83:1	S- 1558
8:13:18	, 9:85:9	अथर्ववेद
8:44:21	, 9:86:13	A-6:19:1-2
8:66:3	, 9:97:39	A- 17:1:20
8:95:8	, 9:97:42	
9:3:8	, 9:97:51	यजुर्वेद–
9:5:3	, 9:107:24	Y- 4:4
9:24:4		Y- 5:32
9:24:6-7		Y- 19:42-43

37. ईश्वर अजर है

ऋग्वेद-

6:4:3
6:22:3
8:1:2
8:6:35
8:23:20
8:99:7
9:72:6
10:50:5

सामवेद–

S- 24

अथर्ववेद-

A-10:8:44
A- 18:4:88
A- 20:105:3

38. ईश्वर अजन्मा है

ऋग्वेद-

6:50:14
7:35:13
10:27:7
10:64:4
10:82:6

यजुर्वेद–

5:33
34:53
40:8

अथर्ववेद-

A- 9:5:20-22
A- 9:5:24-27
A- 9:5:31:37
A- 9:9:7
A- 10:7:31
A-10:8:41
A- 10:8:41
A- 13:1:6
A- 10:2:22
A- 19:11:3

39. ईश्वर नित्य है

ऋग्वेद-

R- 10:31:4

अथर्ववेद-

A- 18:1:30

40. ईश्वर निर्विकार है

ऋग्वेद-

6:24:7

41. ईश्वर अनंत शक्तिशाली है

ऋग्वेद-

6:29:5
7:99:6
9:38:1
9:42:3
9:65:7
9:71:7
9:84:4
9:86:7
9:86:33
9:86:38
9:89:1
9:96:14
9:106:5
9:110:10

यजुर्वेद-

Y- 17:19
Y- 33:38

42. ईश्वर सर्वबल कारक है

ऋग्वेद-

8:99:8

43 .ईश्वर के तुल्य कुछ नहीं, ना हुआ, ना है ,ना होगा

ऋग्वेद-

7:32:23

8:24:17

8:62:2

8:70:5

10:89:6

सामवेद–

S-681

S- 1511

अथर्ववेद-

A-20:92:18

A-20:121:2

यजुर्वेद-

33:79

44.कुछ भी ईश्वर से महान नहीं है

ऋग्वेद-

8:6:15
8:24:17
8:70:5
10:89:6
10:89:11

यजुर्वेद–

8:36 , 33:79
23:65
27:36

सामवेद–

S- 278
S- 681

अथर्ववेद

A- 18:2:32
A- 20:83:1
A- 20:92:20
A-20:93:2
A- 20:121:2

45. ईश्वर सर्वद्रष्टा है

ऋग्वेद-

7:63:1 , 9:28:5 , 9:114:2

7:63:3-4, 9:37:2 , 9:81:2-3

7:66:14 , 9:40:1 , 10:82:2

7:66:16 , 9:41:5 , 10:92:15

8:11:8 , 9:60:1

8:13:10 , 9:67:22

8:75:7 , 9:86:11

8:98:10 , 9:86:23

9:1:2 , 9:89:1

9:8:9 , 9:92:2

9:13:9 , 9:107:16

सामवेद–

84

366

617

776

1199

यजुर्वेद–

17:18

17:19

अथर्ववेद

A- 4:20:1

A- 4:20:4

A- 4:20:5

46.ईश्वर जन्म-मरण से रहित है

ऋग्वेद-

7:66:1

9:88:8

9:110:4

यजुर्वेद-

20:26

33:79

40:8

47. ईश्वर सर्व ऐश्वर्यवान है

ऋग्वेद-

7:66:4

9:65:13

48. ईश्वर अमर है

ऋग्वेद-

7:76:1

8:23:19

8:80:10

9:68:8

9:69:5

9:103:5

9:108:12

10:21:4

यजुर्वेद–

37:16

सामवेद–

S- 12

S-35

S- 40

S- 1568

S- 1819

अथर्ववेद

A-10:8:44

A-11:2:3

A-12:2:33

A-18:1:34

49. ईश्वर निराकार है

ऋग्वेद-

7:97:6

9:16:6

9:108:12

यजुर्वेद-

40:8

50. ईश्वर अहिंसक कर्मों की प्रेरणा करता है

ऋग्वेद-

8:11:2

8:11:10

51. ईश्वर इंद्रियातीत है

ऋग्वेद-

1:33:2

1:115:1

7:97:5

9:97:9

सामवेद–

S- 617

यजुर्वेद–

Y- 40:4

52. ईश्वर पूर्ण है

ऋग्वेद-

8:39:10
8:46:21
8:68:2
8:75:1
9:74:2
9:93:1
10:92:15

अथर्ववेद-

A-10:8:29
A- 10:8:44

53. ईश्वर सर्व प्रेरक है

ऋग्वेद-

8:43:13-15 , 9:64:26
8:43:17 , 9:66:18
8:43:23 , 9:88:2
8:44:17 , 9:97:34
8:44:19 , 9:97:56
8:99:7 , 10:4:4
9:18:2 , 10:27:14
9:20:6
9:36:1

54. ईश्वर अपने कार्य हेतु किसी की सहायता नहीं लेता

ऋग्वेद- 8:62:2

सामवेद– S-1535

55. ईश्वर अनंत कर्मा है

ऋग्वेद-

8:66:12

8:68:1

8:68:2

8:76:7

9:3:10

56. ईश्वर दुष्टों के पाप क्षमा नहीं करता

ऋग्वेद-

R- 8:70:4

57. नास्तिक संशय निवारण

ईश्वर है या नहीं?

ऋग्वेद-

8:100:3-4

सामवेद–

S- 142-143

58. ईश्वर अस्त्र-शस्त्र द्वारा अभेद्य है

ऋग्वेद-

R- 9:1:2

59. ईश्वर ही मुक्ति स्थान है

ऋग्वेद-

9:25:4

अथर्ववेद-

A-10:8:41

यजुर्वेद-

32:6

32:9

32:10

34:44

60. ईश्वर स्वयंभू है

ऋग्वेद-

9:38:6 , 9:71:3
9:39:3 , 9:86:35
9:40:2 , 9:97:45
9:41:4 , 9:110:12
9:42:2

9:44:3
9:63:15
9:65:5
9:67:2
9:68:7
9:68:9

अथर्ववेद-

A-10:8:44

यजुर्वेद–

Y-23:63
Y- 40:8

61. ईश्वर त्रिकालज्ञ है

ऋग्वेद-

R- 9:71:7

R- 9:72:4

62.ईश्वर नित्य नूतन है

ऋग्वेद-

9:86:32

9:86:36

9:94:3

10:4:5

10:89:3

63. ईश्वर की शक्ति, चेतन स्वरूप है

ऋग्वेद-

9:86:37

9:86:42

9:86:43

64. ईश्वर एकरस व्यापक है

ऋग्वेद-

9:97:9

10:89:3

अथर्ववेद-

10:8:44

13:2:27

13:3:25

19:11:3

20:72:1

65. ईश्वर सर्वश्रेष्ठ है

यजुर्वेद–

Y- 17:82

Y- 38:24

66. ईश्वर सत्यस्वरूप है

ऋग्वेद-

9:97:37
9:97:46
9:97:48
10:55:6

यजुर्वेद–

Y- 17:82
Y- 33:39-40

सामवेद–

S-42
S-1395

अथर्ववेद-

20:64:2

67. ईश्वर में अविद्या दोष नहीं है

ऋग्वेद-

9:101:10

10:55:6

68.ईश्वर समस्त पदार्थों से सूक्ष्म है

ऋग्वेद-

10:86:1-23

69.ईश्वर, आत्मा से भिन्न है

ऋग्वेद-

10:82:7

यजुर्वेद–

17:31

32:10

अथर्ववेद-

A-9:5:1

A-9:5:3

70. ईश्वर ,प्रकृति से भिन्न है

ऋग्वेद-

10:95:5

यजुर्वेद–

17:31

32:10

अथर्ववेद-

A-9:5:1

A-9:5:3

71. ईश्वर को भौतिक पदार्थों से पाया नहीं जा सकता

ऋग्वेद-

10:86:2

72. ईश्वर निष्काम है

*ईश्वर के अंदर किसी वस्तु को प्राप्त करने की कामना नहीं है

ऋग्वेद-

10:89:3

अथर्ववेद-

10:8:44

73.ईश्वर सृष्टि का निमित्त कारण है

ऋग्वेद-

10:149:2

74.ईश्वर के हाथ पैर आदि नहीं है

सामवेद–

S- 72

75.ईश्वर किसी स्थान विशेष में, पर नहीं रहता है

अथर्ववेद-

1:32:1-2

11:3:26

11:3:28-29

76. ईश्वर कर्मफल दाता है

यजुर्वेद-

7:48

अथर्ववेद-

3:29:7

77.ईश्वर जीव के हर गुप्त कर्म को जानता व देखता है

अथर्ववेद-

4:16:2

4:16:5

10:8:30

78 .ईश्वर से कोई कहीं भी जाकर छिप नहीं सकता

अथर्ववेद-

4:16:4

79.ईश्वर कहां है?

अथर्ववेद-

4:30:7

80. ईश्वर हर वस्तु के अंदर व्याप्त होकर सृष्टि को नियम पूर्वक चला रहा है

अथर्ववेद-

4:30:7

81. ईश्वर के गुण (सामर्थ्य) कभी घटते नहीं हैं

यजुर्वेद–

36:4

अथर्ववेद-

4:35:1

82. ईश्वर सत्यधर्मी है

अथर्ववेद-

7:24:1

10:8:42

83. ईश्वर अपरिमित (परिमाण रहित) है

अथर्ववेद-

9:5:21

9:5:22

84. ईश्वर निष्पाप है

अथर्ववेद-

10:7:40

85. ईश्वर से आत्मा की देशकाल से नहीं, बल्कि ज्ञान की दूरी है

अथर्ववेद-

10:8:8

86.ईश्वर विद्वानों के निकट है अविद्वानों से दूर है

अथर्ववेद-

10:8:8

यजुर्वेद–

40:5

87. ईश्वर अदृश्यमान है

अथर्ववेद-

10:8:13

88. ईश्वर सनातन है

अथर्ववेद-

10:8:22

10:8:23

यजुर्वेद–

40:8

89. ईश्वर में असंख्य धन (ज्ञान,सामर्थ्य,गुण) है

अथर्ववेद-10:8:24

90. ईश्वर कारण रहित है

अथर्ववेद-

10:8:33

91. ईश्वर समस्त लोको को नियम में ठहरा कर चलाता रहता है

अथर्ववेद-

10:8:42

93. ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार है, का तर्क से वर्णन

अथर्ववेद-

11:3:22-24

94. ईश्वर आलस्य निद्रा से रहित है

अथर्ववेद-

11:4:24-25

13:2:28

13:2:42

95. ईश्वर सहनशील है

अथर्ववेद- 13:4:50, 13:4:51

ऋग्वेद- 9:20:1

96. ईश्वर सर्वेश्वर है

अथर्ववेद-

15:6:1-26

यजुर्वेद–

20:32

97. ईश्वर की धर्म व्यवस्था निश्चल है, सबके लिए समान है

अथर्ववेद-

18:1:34

98. ईश्वर के माता–पिता नहीं है

अथर्ववेद-

20:34:16

99 ईश्वर कर्मानुसार फल देता है

यजुर्वेद-17:27

100. ईश्वर राजाओं का राजा है

यजुर्वेद-

6:2

ऋग्वेद-

9:76:4

9:96:10

101. ईश्वर ,हर जीव, प्रकृति तत्व के भीतर (मध्य) में विराजमान है

लेकिन अधिष्ठातृपन (status) में सबसे ऊपर विराजमान है

यजुर्वेद-
17:30
31:5

102. .ईश्वर, सूक्ष्म से सूक्ष्म और महान से महान है

यजुर्वेद-

(20:21)×(20:32)

103.ईश्वर हर वस्तु के अंदर व बाहर है

यजुर्वेद-
23:52
32:7
40:5

104. ईश्वर आकाश की तरह व्यापक है

यजुर्वेद- 29:29 40:17

105.ईश्वर पापियों को कभी प्राप्त नहीं होता है

यजुर्वेद- 40:8

106. ईश्वर साकार (शरीर धारी) नहीं है

यजुर्वेद- 40:8

107. ईश्वर अवतार नहीं लेता

(अवतारवाद खंडन)

यजुर्वेद-

31:19

33:79

40:8

108: ईश्वर के विभिन्न नाम उसके गुणवाच्य हैं

यजुर्वेद-32:1

109: ईश्वर किसी वस्तु के ऊपर, नीचे या तिरछी दिशा में नहीं होता

यजुर्वेद- 32:2

110. ईश्वर हर जगह ओतप्रोत है

यजुर्वेद-
32:7

111.ईश्वर की कोई प्रतिमा (परिधि) नहीं है

यजुर्वेद-
32:3

112. ईश्वर षोडशी (16 कला वाला) है

यजुर्वेद-
32:5

113. ईश्वर सबसे बड़ा है

ऋग्वेद-

7:97:3

यजुर्वेद-

33:80

37:2

40:17

114. ईश्वर तत्व को चलायमान मानने वाले मूर्ख है

यजुर्वेद- 40:5

115. ईश्वर अभय है

अथर्ववेद-

1:21:1

116. ईश्वर अमर है

ऋग्वेद

10:48:5

117. आत्मा चेतन है

ऋग्वेद
2:5:1

118. आत्मा अल्प सामर्थ्र्यवान है

ऋग्वेद
1:7:7
8:102:9

सामवेद–
S-309

अथर्ववेद-

9:10:15

119.आत्मा, अनंत ज्ञान सामर्थ्य युक्त कभी नहीं हो सकता

ऋग्वेद-

1:7:7

8:68:8

120. जीवात्मा, मृत्यु के पश्चात कहां रहता है

ऋग्वेद-
1:35:6

121.आत्मा अविनाशी है

ऋग्वेद-	सामवेद–
1:58:1	S-532
1:58:3	S- 562
1:89:10	S- 1294
1:164:38	S- 1385
1:166:2	यजुर्वेद–
3:24:2	Y-25:25
7:11:1	Y-27:42

122. आत्मा कर्मफल भोगता है

ऋग्वेद-

1:58:2
1:58:3
1:164:20

अथर्ववेद-

3:29:7
9:9:20

सामवेद-

1278

123. आत्मा अजर है

ऋग्वेद-

1:58:4

124. आत्मा में भय गुण है

ऋग्वेद-

1:58:4

125.आत्मा अनादि है

ऋग्वेद-

1:63:3
1:164:20
2:1:14
2:2:9
3:56:3

यजुर्वेद-

17:30

सामवेद-
425
1737

126 आत्मा सनातन है

सामवेद–

S – 54

S- 531

127. आत्मा अजन्मा है

ऋग्वेद-

2:1:14

10:16:4

यजुर्वेद-

17:30

अथर्ववेद-

9:5:1-16

18:2:8-9

128. आत्मा को वाक शक्ति देने वाला ईश्वर है

ऋग्वेद-

1:96:4

1:164:37

8:101:16

10:48:2

129. शरीर ,आत्मा के ज्ञान, कर्म, भोग का साधन है

ऋग्वेद-	**सामवेद–**
1:164:37	S-1278
10:27:8-10	S-1279
10:27:16	
10:48:4	

130. ईश्वर, आत्मा को सत्य ज्ञान देता है

ऋग्वेद-

2:12:5
8:102:1
9:1:3
9:13:6
9:20:1
9:42:3
9:65:25
9:66:28
9:76:4
9:97:13
9:102:8
9:109:14
9:109:22
10:48:4

131. आत्मा के 3 शरीर होते हैं

ऋग्वेद-

3:20:2

3:56:3

9:103:2

132. आत्मा का कामना गुण है

ऋग्वेद-

3:22:1

यजुर्वेद–
7:48

133.आत्मा के साथ इंद्रियादि का संबंध

ऋग्वेद-

6:9:4-6

6:47:18

सामवेद–

700

134.ईश्वर आत्मा का सामर्थ्य ,बल बढ़ाता है

ऋग्वेद-

9:8:1

अथर्ववेद-

2:17:3

135. शरीर के अंदर आत्मा को ईश्वर का समन्वय

ऋग्वेद

9:96:7

10:27:16

सामवेद–
355

136. आत्मा में ज्ञान प्राप्त करने ,कर्म करने की इच्छा है

ऋग्वेद

9:108:10

यजुर्वेद- 2:21

137. हमारा हर कर्म हमारे सूक्ष्म शरीर में संस्कारवत बना रहता है

ऋग्वेद

10:9:8

सामवेद-851

138. पंचकोश

ऋग्वेद

10:13:3

सामवेद-

577
579
702
822
1187
1819

139. वृक्षों में आत्मा होती है

ऋग्वेद-

10:16:3

140. आत्मा, शरीर, प्राण नाडिया, मन आदि का नियंत्रक है धारक है

ऋग्वेद	सामवेद
6:9:6	1181
10:48:4	1270
10:49:9-10	1273
10:60:4-10	
10:135:3	
10:136:3	

141.आत्मा शरीर से भिन्न है

ऋग्वेद-

10:61:13

10:136:6

142. जीवात्मा को उन लोगों में शामिल होना चाहिए जिनको वेद ज्ञान मिलता है

ऋग्वेद-

10:154:1-2

10:154:5

143. हे जीवात्मा बलिदानी योद्धा बन

ऋग्वेद-

10:154:3

144. हे जीव श्रेष्ठ माता–पिता के घर जन्म लेने वाला बन

ऋग्वेद-

10:154:3

145. मृत्यु के उपरांत सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ रहता है

सामवेद-

S-90

146. आत्मा अमर है

ऋग्वेद-

1:164:30

6:9:4

सामवेद-

1282

अथर्ववेद-

9:10:8

9:10:16

147. आत्मा कर्म करने में स्वतंत्र है

सामवेद–

S- 1589

148. आत्मा अल्पज्ञ है

ऋग्वेद-

1:164:37

अथर्ववेद-

9:10:15

149.आत्मा अणु परिमाण है

अथर्ववेद-

10:8:25

150. आत्मा का कोई लिंग नहीं होता है

अथर्ववेद-

10:8:27

151. आत्मा कर्म करता है ईश्वर फल देता है

यजुर्वेद

7:48

152. आत्मा कभी भी ईश्वर तुल्य नहीं होसकती

अथर्ववेद-

20:92:18

सामवेद–

S-243

S-1155

153. आत्माओं की संख्या अनंत है

ऋग्वेद-

7:101:6

यजुर्वेद

Y- 16:54

Y- 33:96

सामवेद–

425

1737

154. आत्मा को शोकायुक्त ना करो

यजुर्वेद
25:43

155. आत्मा की इच्छा स्वतंत्र है

यजुर्वेद
17:26

156. कर्म अनादि है

यजुर्वेद-
20:76

157. निद्रा अवस्था में आत्मा की स्थिति

यजुर्वेद- 34:55

158. परग्रही जीवन(Aliens)

ऋग्वेद-

1:7:9

1:31:9

1:58:7

1:139:11

1:160:2

1:164:31

2:10:4

10:16:4

यजुर्वेद-

13:26

35:2

159.पुनर्जन्म

ऋग्वेद-

1:20:1 , 10:14:8
1:23:23-24 , 10:16:1-3
1:24:1-2 , 10:16:7
1:31:4 , 10:19:4-6
1:31:7 , 10:55:5
1:58:1 , 10:59:7
1:58:6 , 10:86:21
1:164:31-32 , 10:177:3
2:38:8
3:1:20-21
7:90:2
9:82:5

अथर्ववेद

6:53:2
11:4:14

सामवेद

851
1256
1711

यजुर्वेद

3:54-55
4:15
12:36-39
19:47
39:6

160. मोक्ष से पुनरावृति

ऋग्वेद-

1:24:1-2

1:31:4

10:19:4-5

10:24:6

161. सूर्य, तारों पर जीवन

ऋग्वेद-
1:39:11

यजुर्वेद
13:6

162. मृत्यु के बाद, आत्मा कर्मानुसार, शरीर प्राप्त करने के लिए दूसरे ग्रहों पर जाता है

ऋग्वेद- 10:16:3

यजुर्वेद 35:2

163. मृत्यु उपरांत जीवात्मा 12 दिनों तक सूर्य आदि जगहों पर घूम कर नया शरीर प्राप्त करती है

यजुर्वेद 39:6

164. हे जीव, शरीर छोड़ते समय 'ओ३म' का स्मरण कर

यजुर्वेद 40:15

165. आत्मा के अनंत जन्म हो चुके हैं

ऋग्वेद- 7:62:1

166.त्रेतवाद

ऋग्वेद-
1:22:16 ,10:56:1
1:24:1-2
1:26:6
1:30:9
1:30:16
1:36:19
1:96:2
1:164:15
1:164:20
2:38:1
3:29:14
10:14:7
10:27:14
10:81:3-4

यजुर्वेद
32:10

अथर्ववेद
9:9:20
18:4:3

167. कारण प्रकृति अनादि है

ऋग्वेद-

1:164:15

3:29:14

3:56:3

2:38:1

9:23:2

सामवेद

621

168.प्रकृति जड़ (चेतनारहित) है

ऋग्वेद-

10:27:11

10:27:19

169. कारण प्रकृति अविनाशी है

ऋग्वेद-

5:44:11

5:47:2

5:88:1

8:44:20

170. कारण प्रकृति का विस्तार अनंत है

अथर्ववेद-

10:8:12

171.प्रकृति त्रिगुणात्मक है

ऋग्वेद-
9:86:20

यजुर्वेद
15:9

172. प्रकृति जन्म रहित है

यजुर्वेद
23:56

173.कारण प्रकृति नित्य है

यजुर्वेद-
25:23

174. ईश्वर सृष्टि आत्मा के लिए बनाता है

ऋग्वेद-

1:22:19

8:12:12

8:17:12

8:63:3

9:8:1

9:15:1

10:86:12

सामवेद

1278

1825

अथर्ववेद-

9:5:1-25

175. जीवन उत्पत्ति

ऋग्वेद-

1:79:3

1:164:4

5:41:10

5:59:6

7:77:1

10:18:10-12

10:130:3-7

अथर्ववेद-

11:8:1-34

176.आत्मा के कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म होता है

ऋग्वेद-

3:1:21

10:177:3

सामवेद

715

यजुर्वेद-

39:7

अथर्ववेद-

20:91:8

177. आदि सृष्टि में युवावस्था (स्वयंपोषी) में जीवो की उत्पत्ति

ऋग्वेद-

7:77:1

178. ईश्वर सृष्टि ,आत्मा के सुख ,सामर्थ्य के बढ़ावे के लिए बनाता है

अथर्ववेद-

9:5:1-25

179.ईश्वर सृष्टि आत्मा के उद्धार के लिए बनाता है

ऋग्वेद-

8:63:3

9:15:1

सामवेद

1825

180. ईश्वर ने मनुष्य शरीर पुरुषार्थ करने के लिए बनाया है

अथर्ववेद-

10:2:5

181. मनुष्य शरीर महिमा का उपदेश

अथर्ववेद-

10:2:1-33

182.मानव शरीर रचना उपदेश

अथर्ववेद-

11:8:1-34

183. ईश्वर सृष्टि की रचना क्यों करता है?

ऋग्वेद-

1:22:19
1:30:16
7:99:4
8:63:3
9:15:1
9:46:1
9:69:1
9:108:10
10:86:12-13

अथर्ववेद-

7:3:1

सामवेद

1278

184. सृष्टि प्रवाह से अनादि है

*सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय, अनादि काल ,हमेशा से होती आ रही है

ऋग्वेद-

1:30:20

1:89:10

1:96:7

7:1:3

7:66:15

8:39:5

8:98:6

9:71:7

10:18:5

अथर्ववेद

9:9:11

185. कारण–कार्य भाव को जानने वाला ही विद्वान होता है

ऋग्वेद-

1:149:2
1:188:6
5:21:4

अथर्ववेद-
10:8:37-38

यजुर्वेद-
40:11

186.काल क्या है?

ऋग्वेद-

1:164:11-14

अथर्ववेद-

19:53:1-10

19:54:1-5

187.ऊपर–नीचे, दाएं–बाएं का अर्थ

ऋग्वेद-

1:164:19

अथर्ववेद-

9:9:19

188. उपादान कारण प्रकृति से बना कार्य रुप जगत अनित्य होता है

ऋग्वेद- 2:24:11

8:1:34

यजुर्वेद- 35:4

अथर्ववेद-

4:19:6

189.पदार्थ विद्या को प्राप्त करने का तरीका

ऋग्वेद-

4:5:3

यजुर्वेद-

15:6

190. ईश्वर ने सृष्टि को वेद वाणी (vedic mantra’s vibrations) से रचा है

ऋग्वेद-

5:42:9

9:70:1

9:78:1

यजुर्वेद-

40:8

अथर्ववेद-

9:10:6

13:1:53-54

191. ईश्वर ने सृष्टि को शब्दायमान रचा है

ऋग्वेद-

9:22:1

192. जगत सत्य है

ऋग्वेद-

7:87:6

193. ईश्वर ने सृष्टि को यज्ञ (ज्ञान,कर्म, भोग, मोक्ष पुरुषार्थ आदि) के लिए बनाया है

ऋग्वेद-

7:99:4

9:46:1

194. ईश्वर,सृष्टिको अपनी उद्योग शक्ति, व्याप्त बल से बनाता है

ऋग्वेद-

10:55:8

195. सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति है

ऋग्वेद-

10:81:2-3

10:86:7

10:86:10

10:100:1-12

अथर्ववेद-

7:6:1

196. ईश्वर सृष्टि, आत्मा के भोग और अपवर्ग (मोक्ष) के लिए बनाता है

ऋग्वेद-

10:100:1

197. तंमात्राएं

अथर्ववेद-

1:33:1-4

198.सृष्टि परस्पर बनी हुई है

अथर्ववेद-

10:7:41

199. ईश्वर की कामना (ईक्षण) सृष्टि निर्माण हेतु होती है

अथर्ववेद-

19:52:1

200. सृष्टि निर्माण और प्रलय

ऋग्वेद-

1:164:11 , 9:86:42 , 10:82:4
1:164:36 , 9:86:46 , 10:90:5
2:19:3 , 10:4:4 , 10:90:14
3:9:9 , 10:12:6 , 10:129:1-7
8:6:17 , 10:27:4 , 10:130:1-7
8:12:10 , 10:27:11 , 10:134:1
9:70:1-2 , 10:27:13, 10:190:3
9:70:4 , 10:27:14-15,
9:77:2 , 10:31:7-8
9:85:11 , 10:55:8
9:86:21 , 10:72:1-9
9:86:29 , 10:81:2-3

यजुर्वेद

17:19

अथर्ववेद–

8:9:1-8
9:9:8-9
9:10:17
10:7:26
10:8:39
10:8:40
13:2:26
20:91:4-5

201.जो सूर्य, चंद्र, तारे, ग्रह आदि इस सृष्टि में है|वैसे ही इससे पहले वाली सृष्टियो में थे|

ऋग्वेद-

10:190:3

202. राजा व सेनापति दुष्टों का नाश करें

ऋग्वेद-

1:4:8 , 1:53:4 , 2:13:9 ,4:2:6
1:7:9 , 1:78:4 , 2:14:4 , 4:3:6
1:11:7 , 1:79:6 , 2:15:9 , 4:3:14
1:26:4 , 1:80:7 , 2:20:8 , 4:4:1
1:27:8 , 1:101:2 , 2:30:5-6 , 4:4:3-4
1:33:4 , 1:112:23 , 3:8:6 , 4:5:4
1:35:10 , 1:123:5 , 3:12:3-4 , 4:10:3
1:36:13 ,1:129:6 , 3:24:1 , 4:16:8-9
1:36:15 ,1:129:10-11, 3:30:15-17, , 4:16:12
1:36:16 , 1:130:8-9 , 3:32:3-4 , 4:16:14
1:36:18 , 1:131:7 , 3:32:6 ,4:17:3
1:36:20 , 1:132:5 , 3:34:3 , 4:17:7
1:39:7-8 , 1:133:5-6 , 3:34:6 , 4:17:14
1:39:10 , 1:134:5 , 3:34:9 ,4:23:7
1:42:3 , 1:175:3 ,3:47:2 , 4:28:4
1:42:5 , 1:189:5 , 3:47:5 , 4:30:5
1:51:8-11 ,2:11:18-19, 3:48:5 , 4:39:1

4:50:2 , 6:23:2 , 8:40:6 **सामवेद**
5:2:9-10 , 6:25:2 , 8:77:3 **105**
5:29:4 , 6:27:4 , 8:77:6 **106**
5:29:10 , 6:28:7 , 8:92:31 **128**
5:30:13 , 6:43:1 , 9:61:19 **134**
5:31:7 , 6:45:24 , 9:79:3 **1652**
5:45:5 , 6:51:16 , 10:89:6
5:60:7 , 6:53:3-4 , 10:99:7
5:61:16 , 6:62:9 ,10:102:3-4
5:66:1 , 6:68:2 , 10:166:1-5
5:70:3 , 7:6:3
5:83:2 , 7:15:13
6:8:5 , 7:19:4
6:16:15 , 7:19:10
6:16:29 , 7:59:8
6:16:48 , 7:93:1-3
6:17:1-2 , 7:104:4-5
6:18:4 , 7:104:11
6:18:10 , 7:104:22
6:21:7 , 8:18:13-14

अथर्ववेद

1:8:3-4 , 10:1:18-19
1:16:1 , 10:5:48-50
1:16:3-4 , 10:6:1
2:5:6-7 , 10:6:6-17
2:11:3 , 10:6:20
4:36:1-10 , 11:10:1-27
4:40:1-8 , 16:1:2-5
5:14:2-6 , 16:7:1-13
5:29:2-3 , 16:8:1-33
5:29:10 , 18:2:28
5:31:1-12 , 18:2:31
6:75:1-2 , 19:28:1-10
6:88:3 , 19:29:1-9
6:134:3 , 19:66:1
7:84:3 , 20:11:6
7:90:1 , 20:74:5
7:108:1-2 , 20:74:7
7:114:2 , 20:79:2
8:2:1
8:3:1-26
8:4:1-25
9:2:1-18

यजुर्वेद

1:7-8
1:25-26
2:15
2:29
5:25-26
6:16
9:16
9:38
11:77-79
11:80
13:7
13:11
15:16-17
16:20-21
25:47-48
30:5
33:26

203. चक्रवर्ती राजा के गुण

ऋग्वेद-		यजुर्वेद
1:25:10-11	, 4:19:2	9:2
1:29:4	, 4:21:2	9:35
1:36:16	, 4:21:10	20:2
1:41:3	, 6:7:1	
1:52:4	, 6:29:6	
1:53:7	, 7:6:6	
1:54:6		
1:66:3		
1:121:4		
1:130:8		
2:27:12-13		
4:3:3		

204. राजा व सेनापति का सैन्य धर्म

ऋग्वेद-

1:32:1-15 , 1:54:4-5 , 2:11:18-19
1:33:6-15 , 1:55:5 , 2:30:9
1:36:7 , 1:80:5 , 2:33:11-12
1:36:15-16 , 1:80:11 , 3:24:1
1:36:18-19 , 1:80:13 , 3:31:19-20
1:37:7 , 1:84:4 , 3:34:10
1:39:3-5 , 1:100:9 , 3:40:9
1:40:8 , 1:102:7 , 3:48:5
1:41:3 , 1:112:14 , 4:3:14-15
1:42:2-4 , 1:116:21 , 4:4:5
1:51:2-4 ,1:117:15-16 , 4:4:15
1:51:6-7 , 1:117:21 , 4:9:7
1:52:10 , 1:119:4 , 4:12:2
1:52:15 ,1:132:4 , 4:15:5
1:53:7 , 2:1:8 , 4:16:8

4:16:11 , 5:32:4 , 6:66:8-9 ,8:8:1-23
4:18:9 , 5:32:6 , 6:68:2 , 8:22:3
4:19:4 , 5:34:6 , 6:75:1-4 , 8:26:6
4:19:7-8 , 5:36:5 , 6:75:16 , 8:37:2
4:20:1 , 5:44:1 , 6:75:19 ,8:37:6-7
4:20:3 ,5:48:5 ,7:1:13 , 8:77:3
4:22:3 , 5:57:2 ,7:8:1 , 8:77:6-7
4:22:9 , 5:62:6 , 7:18:14-15 , 10:102:1-12
4:24:3 , 6:19:8 ,7:18:17-18 , 10:131:1
4:24:7 , 6:19:13 , 7:20:3 , 10:133:1-5
4:26:4-5 , 6:23:2 ,7:21:6 सामवेद
4:27:3 , 6:25:3 , 7:24:6 95
4:30:3 , 6:25:5-6 , 7:27:2 311
4:30:13 , 6:25:8 , 7:30:2 401
4:38:1-3 , 6:27:5-6 , 7:56:18 414
4:38:6 ,6:31:4 ,7:82:1 1865
4:38:9 , 6:45:9 ,7:82:5
4:40:4 , 6:46:6 , 7:83:3-5
4:41:11 , 6:46:8 ,7:104:1-6
4:45:3 ,6:47:29-31, 7:104:19
5:4:5 , 6:53:4 ,7:104:21-22
5:28:3 ,6:59:8 ,7:104:25
5:29:11 , 6:63:2 ,8:2:8
5:32:2 ,6:63:10 ,8:7:1-36

अथर्ववेद-

अथर्ववेद			यजुर्वेद
1:7:6-7	, 6:126:1-3	, 20:21:8-9	8:44
1:19:1-2	, 6:134:1-3	, 20:37:3-5	8:46
1:21:2-4	, 7:50:4	, 20:43:1	9:37
1:27:1-2	,7:70:1-5	,20:70:1	10:8
1:29:2	,7:90:2-3	,20:90:2-3	11:15
2:5:5	, 7:108:1-2	,20:95:4	11:20
3:1:1-6	, 8:3:1-26	,20:125:1	11:77
3:2:4-6	, 8:4:1-25	,20:137:1	13:10
3:27:1-6	, 8:8:1-24	, 20:137:7-9	16:1
4:22:1-7	, 10:1:18-19		16:54-63
5:8:6	, 10:1:31		17:42-43
5:8:7-9	, 11:1:9		17:48-49
5:14:11-13	, 11:1:11		
5:20:1-12	, 11:9:1-26		
5:21:1-12	, 13:1:3		
5:29:10:11	, 13:1:29		
6:103:1-3	, 19:28:1-10		
6:104:1-3	, 19:29:1-9		
6:125:1	, 19:30:1-5		

205. राजा कौन बनना चाहिए, (गुण, कर्म)

ऋग्वेद-

1:36:17 , 4:3:4 ,4:20:6-8 , 5:31:2
1:41:3 ,4:4:3 , 4:21:1 , 5:32:5
1:54:6-7 ,4:4:10-12 , 4:22:2 , 5:34:9
1:55:3 ,4:4:6 , 4:24:1-2 , 5:35:1
1:57:6 ,4:10:2 , 4:24:6 , 5:35:4
1:61:8-9 ,4:12:4 , 4:29:2 , 5:35:7
1:61:11 ,4:15:5 , 4:29:4 , 5:36:2
1:66:3 ,4:16:6 , 4:30:1-2 , 5:40:3-4
1:84:9 , 4:16:11 , 4:38:10 , 5:48:4
1:85:9-10 , 4:16:18 , 4:40:2 , 5:54:14
1:100:13 ,4:17:5 , 4:50:9 , 5:58:4
1:121:3 ,4:17:8 , 5:4:3 , 6:1:13
2:27:13 ,4:17:10 , 5:4:8 , 6:3:8
3:48:3-5 ,4:17:12 , 5:25:2 , 6:5:3
3:51:5 ,4:19:4 , 5:28:4 , 6:7:3
4:3:1 ,4:20:2 , 5:29:9 ,6:18:5-6

6:18:19 , 7:6:2 ,8:26:17-19
6:19:11 , 7:7:1-2 , 8:35:1-22
6:20:3 , 7:7:4 , 8:37:4
6:23:2-4 , 7:9:2 , 8:92:2
6:24:1-2 , 7:18:16 , 8:97:10
6:29:4 , 7:20:1-2 , 9;113:1-4
6:30:5 ,7:20:4 , 9:119:1-13
6:34:2 , 7:26:4 , 10:173:1-6
6:36:4 , 7:27:3
6:37:5 , 7:28:2
6:45:16-17 , 7:30:1
6:47:16 , 7:34:17
6:49:2 , 7:40:4
6:51:4 , 7:46:2
6:52:6 , 7:47:2
6:66:11 , 7:56:18
6:68:5 , 7:56:1-2
6:68:7 , 7:66:6
6:71:1-2 , 8:2:15
6:71:4 ,8:2:26
7:3:9 , 8:22:6

सामवेद
74

अथर्ववेद

1:21:1 , 20:54:1
1:29:6 , 20:55:1-3
2:6:3-5 , 20:77:1
4:17:1 , 20:90:1
4:18:7 , 20:94:1
5:4:7-8 , 20:96:2
6:87:2-3
6:88:1
6:92:1
6:101:2
13:1:34
18:1:37-40
18:3:15
19:24:1-3
19:24:6
19:24:8
20:14:3
20:15:6

यजुर्वेद

9:25-28 , 30:1
9:36, 33:16
9:40 , 33:26
10:17
10:32
11:15
11:27
12:11
12:13-14
12:17
12:23
12:33
12:117
13:14-15
17:24
17:41
18:28
18:37
20:4-10

206. राजा के मंत्री ,सभापति ,सभाध्यक्ष, कौन व कैसे हो

ऋग्वेद-

1:41:1 , 1:53:5-11 , 1:79:7-10 , 1:158:4
1:41:5 , 1:54:3-6 , 1:80:9-10 ,1:173:10
1:41:7 , 1:54:8-9 , 1:84:6-7 , 2:27:12
1:42:4-10 , 1:54:11 , 1:86:7-9 , 2:28:10
1:43:5-6 , 1:55:2-4 , 1:91:20 , 2:28:11
1:44:2 , 1:55:7-8 , 1:97:3-4 , 2:30:4
1:46:6 , 1:57:1-3 , 1:100:14 , 3:34:6
1:47:3 , 1:57:5-6 , 1:101:4 , 4:1:7
1:47:5 , 1:61:6-9 , 1:104:11 , 4:4:6-8
1:51:5 , 1:61:12 , 1:106:4 , 4:4:12
1:51:9-12 , 1:61:14-15 , 1:114:4 , 4:10:5
1:52:4-6 , 1:62:12 , 1:114:7-9 , 4:16:15
1:52:8 , 1:63:4 , 1:129:2 , 4:17:4
1:52:10 , 1:76:2-4 , 1:136:5 , 4:19:11
1:52:15 , 1:77:3-4 , 1:157:2, 4:29:3

4:38:3	यजुर्वेद	सामवेद
4:40:3	6:1-2	1101
4:41:2-3	6:7	1102
5:3:8	6:26	1103
5:35:3	6:33	
5:43:12	7:17	
6:18:2	7:29	
6:49:2	8:38	
6:73:2	10:22	
7:1:10	12:6	
7:4:3	12:22	
7:18:24	16:50	
7:34:20	17:11-12	
7:69:6-8	17:53	
8:22:6	18:53	
8:26:19	20:50	
8:35:1-23	27:6	
8:47:1-13	29:20	
8:67:13-14		
8:92:30		

अथर्ववेद-

1:30:4

7:12:1-4

7:118:1

18:3:15-16

18:3:19-20

20:15:1-3

20:35:1-7

20:35:11-12

2:35:16

20:56:1-6

20:63:1-2

, 20:77:6

, 20:109:1-3

,20:122:1-2

, 20:124:4-5

, 20:125:4

, 20:128:1

207. जल सेना

ऋग्वेद-

1:80:8

208.वायु सेना

ऋग्वेद-

1:85:4-5

1:94:11

1:100:10

1:102:3

1:102:5

1:112:12

1:123:5

6:46:11

7:68:3

8:7:4

8:7:7

8:7:26

209. अधिक ब्याज नहीं लेना चाहिए

ऋग्वेद-

1:104:3

8:66:9

210. भ्रष्टाचार मत करो

ऋग्वेद-
1:104:8

211. जो युद्ध में सम्मिलित नहीं है उनको मत मारो

ऋग्वेद- 1:112:22

212. कवच (armored jacket)

ऋग्वेद

1:116:15
5:33:7
6:75:1
6:75:18

अथर्ववेद

19:58:4

यजुर्वेद

16:35

17:49

29:38

213. न्यायधीश के गुण ,कर्म

ऋग्वेद-

1:114:7
1:129:1
1:176:1
2:27:1-2
2:27:7-8
2:27:14
3:15:4
4:3:5
4:55:4
5:41:2
5:67:3
6:16:31-32
6:60:2
7:36:4
7:60:9

214.राजा और प्रजा का संबंध

ऋग्वेद-

1:130:1 , 4:19:6 , 4:49:1-6 , 6:68:8
3:31:18-20 , 4:20:1 , 5:3:5 , 7:6:1
3:53:20 , 4:20:4 , 5:4:10 ,7:7:6
4:2:16-17 , 4:21:6 , 5:5:4 ,7:7:8
4:3:2 , 4:22:1 , 5:5:9 ,7:15:8
4:3:16 , 4:29:1 ,5:30:11 , 7:16:1
4:4:9 , 4:29:5 , 5:33:5 , 7:18:4
4:4:14 , 4:30:16 , 5:35:3 , 7:19:7
4:9:7-8 , 4:31:3 , 5:38:5 ,7:30:5
4:10:6 , 4:31:10 , 6:16:9 , 7:34:15
4:16:16 , 4:32:21 , 6:18:7 ,7:34:22
4:16:18 , 4:41:3 , 6:19:10 , 7:68:7
4:16:21 , 4:41:11 ,6:34:3 , 7:68:9
4:17:21 , 4:44:5 ,6:45:5 ,7:71:1

7:85:1
8:22:13
8:35:15
8:77:1
9:61:14
10:29:3
10:29:4

सामवेद

1051-1052

यजुर्वेद

6:37
9:17-18
9:39
10:34
14:9
15:60-61
17:86
19:9
23:20
23:28
38:19

अथर्ववेद

3:3:1
3:3:3-5
5:8:1-2
6:87:1
6:98:1
7:35:1
7:58:1-2
7:85:1
7:86:1
19:14:1
19:24:4-5
19:24:7
20:1:2-3
20:3:1
20:17:2
20:18:5
20:21:11
20:23:5-9
20:77:1
20:78:1
20:79:1
20:80:1-2
20:124:1
20:127:8-9

215. बड़े सभापतियों ,मंत्रीयों के चमचे ना बनो

ऋग्वेद-

1:138:4

216. सबको रोजगार प्रदान करो

ऋग्वेद-

1:140:13

4:40:1

217. “पापी राजाओं” का नाश करो

ऋग्वेद-

2:14:5

218. राजपुरुष, असुर भाव को त्यागे

ऋग्वेद-

2:33:9

7:85:1

219. रानी के कर्तव्य

ऋग्वेद-

2:30:8

5:46:7-8

6:75:13

6:75:15

7:15:14

10:102:2

10:159:1-6

यजुर्वेद

10:26-27

13:16-18

19:10

अथर्ववेद

7:49:1-2

220. हत्यारें को सजा का प्रावधान

ऋग्वेद-

2:34:9

221."दुष्ट पापियों" को दान देने वाले को दंड दो

ऋग्वेद-

5:32:7

222. व्यर्थ युद्ध करने वाले दुष्टो और राजाओं का नाश करो

ऋग्वेद-

3:34:3

7:104:22

223. चक्रवर्ती राजा बनने के लिए न्यायकारी राजाओं का दमन मत करो

ऋग्वेद-

7:104:22

224. राजा को अपने प्रजा जनों से मिलते–जुलते रहना चाहिए

ऋग्वेद-

3:37:11

3:40:8

3:40:9

225. कौन सा राष्ट्र सुखी होता है

ऋग्वेद-	सामवेद
4:1:6	56
4:6:	96
4:18:8	220
5:32:2	यजुर्वेद
5:63:1	19:45
5:82:2	
6:27:7	अथर्ववेद
7:34:11	7:25:2
8:73:18	
8:97:12	

226. राजा को अपने पिछलगु लोलुप लोगो से दूर रहना चाहिए

ऋग्वेद-

4:4:3

227. राजा अच्छा है ,तो उसकी प्रशंसा करो ,अगर बुरा है तो उसकी निंदा करो, त्याग करो

ऋग्वेद-

4:4:9

4:17:20

228. राजदूत के गुण ,कर्म

ऋग्वेद-

4:9:6

5:6:8

5:43:8

7:9:5

229. अगर हमसे (आर्यों)से भी कोई पाप हो तो, राजा उसको भी दंडित कर ,राज्य को सुचारू रूप से चलाएं

ऋग्वेद-

4:12:4

230. राजा की आवश्यकता क्यों?

ऋग्वेद-

4:17:16

6:19:7

7:32:10-11

7:33:12

8:92:13

10:131:3

अथर्ववेद

20:57:8

231.राजदंड व्यवस्था

ऋग्वेद-

4:18:9 , 6:51:14
4:18:13 , 6:53:5
4:19:3 , 7:94:12
1:116:16 , 7:104:1
2:34:9 , 7:104:3-5
1:37:7 , 7:104:7-8
4:25:7 , 7:104:10
4:28:3-4 , 7:104:16-17
4:30:6 , 8:70:1
4:50:2 , 8:77:3
5:3:7
5:14:4
5:32:7
5:34:7
5:42:10
6:13:5
6:16:31-32
6:19:12

यजुर्वेद

23:21
30:5
30:6-22
35:19

अथर्ववेद

1:7:1
1:7:4
1:8:1
3:3:6
4:18:2-4
5:8:3
5:14:6
5:31:1-13
8:3:15
8:6:17-18
19:49:9-10
20:136:10

232. कौन राजा न बने

ऋग्वेद-

4:30:4

4:38:5

6:44:11

यजुर्वेद

23:23

23:30

अथर्ववेद

19:47:6

20:127:13

234. राजा को अपाहिज, दुर्बल और अनाथों का संरक्षण करना चाहिए

ऋग्वेद-

4:30:9
6:66:7
8:22:10
8:35:19-20
8:38:8
8:73:3
8:73:7
10:40:8

यजुर्वेद

18:77

अथर्ववेद

20:17:3

20:17:10

235 . मंत्री ,सभाअध्यक्ष शपथ ग्रहण

ऋग्वेद-

5:43:12

236. स्त्री मंत्रालय

ऋग्वेद-

5:46:8

7:49:1

7:49:2

237. युद्ध बंदियों (POW) के साथ अनुकूल व्यवहार करो

ऋग्वेद-

5:52:6

238. दो राष्ट्र, मित्रतापूर्वक अपने और दूसरे राष्ट्र की 'न्यायिक स्थिरता, रखने में मदद करें

ऋग्वेद-

5:66:6

239. उत्तम विदेश नीति

ऋग्वेद-

5:66:6

7:82:1

अथर्ववेद

20:137:7

240.राजधर्म

ऋग्वेद-

6:19:9-12 , 6:71:3 , 7:32:8 , 8:26:2 , 10:89:9
6:20:4-5 , 6:71:6 ,7:32:25 , 8:26:4-5 , 10:102:2
6:20:12 , 6:73:3 , 7:34:11-13 , 8:26:7-8 , 10:102:3
6:22:9 , 6:75:9-10 , 7:34:21 , 8:26:11 , 10:102:4
6:24:2 , 7:6:5 , 7:42:3 , 8:26:13
6:26:3 , 7:15:8 ,7:46:3-4 , 8:32:11
6:28:7 , 7:15:10 , 7:48:3-4 , 8:35:4
6:31:4 , 7:15:15 ,7:60:10 , 8:35:7
6:37:5 , 7:16:10 , 7:64:1-3 , 8:35:8-22
6:40:1 , 7:18:1 , 7:68:1 , 8:47:1
6:42:1 ,7:19:2 , 7:68:6 , 8:67:21
6:45:1 , 7:19:6 , 7:82:1 , 8:73:1-12
6:45:6-8 , 7:20:10 , 7:82:5 , 8:77:5
6:47:7 , 7:25:6 ,7:83:3-4 , 8:77:8
6:63:11 ,7:27:1 , 8:18:8 , 10:29:5
6:68:10 , 7:28:3 , 8:22:7 , 10:40:8

सामवेद

410
412
413
1006
1114
1452

यजुर्वेद-

7:17 , 33:12
8:23 , 33:69
9:31-34 , 33:84
10:32-33 ,34:22
11:15
12:18
12:116
13:12
13:47-49
15:1
16:1
16:18
18:77
20:1
23:22
29:48
30:5-22

अथर्ववेद-

1:9:2
1:18:1
7:50:2
10:1:22
14:2:69-70
15:9:1-3
19:15:1-6
19:16:1-2
19:24:5
20:11:9-10
20:136:1-2

241. सेनापति के गुण, कर्म

ऋग्वेद-		सामवेद
7:4:3	, 8:10:1-6	1351
7:19:11	, 8:26:20-25	1863
7:21:4	, 8:27:8	1867
7:22:7	, 8:33:3-7	1868
7:23:4-6	, 9:61:1	
7:25:1	, 9:61:30	
7:25:4	, 9:62:1-17	
7:67:3-4	, 9:62:19	
7:85:2-3	, 9:62:23	
8:3:19	, 9:62:28-29	
8:8:1-7	, 10:102:1	
8:8:9-11	, 10:160:1-5	
8:8:13-14	, 10:174:2	
8:8:17-18	, 7:64:2	
8:8:21	, 7:64:4	
8:8:23		
8:9:1-21		

अथर्ववेद-

1:19:3 , 19:29:1-9
1:28:1-2 , 19:30:1-5
3:2:1-3 , 20:7:1-4
3:27:1-6 , 20:11:3
4:31:2 , 20:12:1-7
5:14:8-9 , 20:17:6
5:21:1-12 , 20:17:9
6:65:1-3 , 20:17:11
6:66:1-3 , 20:19:1
6:67:1-3 , 20:21:7
7:44:1 , 20:29:3-5
7:51:1 , 20:30:2
7:62:1 , 20:35:10
7:63:1 , 20:45:1-3
7:71:1 , 20:46:1-3
7:93:1 , 20:47:3
10:5:44 , 20:57:13
11:9:1 , 20:73:1
13:1:1 , 20:73:4
19:13:1-11 , 20:89:11
19:28:1-10 , 20:94:11
, 20:137:14

यजुर्वेद-

3:61 , 17:63
6:20 , 18:68-74
7:22 , 19:71
7:37 , 20:48
8:44 , 20:53
8:53 , 27:7
9:5 , 29:56
9:13-14 , 29:57
10:33
12:34
13:9-10
16:3
16:7
16:9-11
16:15-16
16:51
17:10
17:33
17:35-39
17:42
17:48-51

242. राजसूय यज्ञ

ऋग्वेद-

7:64:1

243. निषिद्ध आयुधो (Prohibited weapons) और अनुचित व्यवहार का युद्ध में प्रयोग करने वाले दुष्ट राजाओं को दंड दो

ऋग्वेद-

7:82:1

244. वही युद्ध करना चाहिए जिससे संसार का उपकार हो

ऋग्वेद-

7:82:5

245. अन्यायकारी ,दुष्ट ,पापी दुष्कर्मी ,राक्षसों ,के नाश की,दंड स्वरूप ईश्वर से प्रार्थना व उक्त सूक्त से राज– दंड व्यवस्था लागू करना

ऋग्वेद-

7:104:1-25

246. अन्यायकारी शोषक दुष्टों के विरुद्ध युद्ध करना आर्यों का कर्तव्य है

ऋग्वेद-

9:99:1

247. आर्य हो या अनार्य अगर आपके ऊपर युद्ध थोपे तो उनका भी नाश करो

ऋग्वेद-

10:38:3

10:83:1

10:102:3

248. मन्यु का धारण करो

- जब कोई बिना किसी बात के हमे परेशान करता है, मारता है ,तब उस दुष्ट हिंसक पापी मनुष्य को दंड देने के लिए जो हमारे अंदर क्रोध उत्पन्न होता है, उसको मन्यु कहते हैं

ऋग्वेद-

10:83:1-7

10:84:1-7

अथर्ववेद

4:31:1-7

4:32:1-7

249. राष्ट्रसभा , राज्यसभा, राजा केंद्रीय परिषद का कार्य ,अधिकार, व्यवस्था आदि का वर्णन

ऋग्वेद-

10:125:1-8

250. शोषक कौन?

सामवेद

305

251.स्वराज

सामवेद

410

412

413

252. विश्व में शांति स्थापित करो

सामवेद

1248

253. अपना –पराया, देसी –विदेशी कोई भी आपके ऊपर युद्ध करें, हिंसा करें ,उनका नाश करो

अथर्ववेद-

1:19:3

6:6:3

13:3:31

254. राजा की सुरक्षा

अथर्ववेद-

1:30:1

4:17:4

यजुर्वेद-

7:17

255. राज तिलक उत्सव

अथर्ववेद-

3:4:1-7

4:8:1-7

256. युद्ध गीत

अथर्ववेद-

3:26:1-6

19:13:1-11

यजुर्वेद-
17:41

257. सेना व्यूह रचना

अथर्ववेद-

3:27:1-6

यजुर्वेद-
17:40

258. दुष्टो व शत्रुओं का लिखित रिकॉर्ड रखना चाहिए

अथर्ववेद-

7:50:5

259. "प्रजा हिंसक" छत्रिय को, राजा दंड दे

अथर्ववेद-

8:4:13

260.व्यभिचारी जार को दंड दो

अथर्ववेद-

8:6:16

20:96:15-16

261. भ्रूण हत्या की सजा

अथर्ववेद-

8:6:18

262 . सेना ध्वज रंग

अथर्ववेद-

11:10:2

11:10:7

263. राजा द्वारा अतिथि सत्कार

अथर्ववेद-

15:10:1

15:10:2

264.निर्बल को राजा मत बनाओ

अथर्ववेद-

18:2:60

265. रात्रि सुरक्षा सैनिक

अथर्ववेद-

19:47:3

19:47:4

19:47:5

266. चोर को दंड दो

अथर्ववेद-

19:1:9-10

19:50:5

267. प्रजा अपने राजा को सदा सुखदायक, शुभ कर्मों को करने के लिए प्रेरणा किया करें

अथर्ववेद-

20:78:1

268 .बलात्कारी को प्राण-दंड दो

अथर्ववेद-

20:96:15

20:96:16

269. शत्रु राजा, अगर अपनी गलती मान कर युद्ध से पीछे हट जाए, तो उसको मित्र बनाकर यथोचित प्रबंध करके अपनी सेना वापस बुला ले

अथर्ववेद-

20:137:7

270. बहुत ज्यादा पापियों को धार्मिक राजा मिलकर पराजित करें

अथर्ववेद-

20:137:9

271. चार प्रकार के सैनिक

यजुर्वेद- 7:44

272. राष्ट्र का स्वरूप

यजुर्वेद-
10:1-5
14:9
22:22

273. वैदिक राष्ट्रगान

**यजुर्वेद-
22:22**

274. राजा व मंत्री प्रजा की संतान की तरह रक्षा करें

यजुर्वेद
10:34

275. शत्रु को उत्साह देने वाला भी शत्रु होता है

यजुर्वेद 13:12

276. शत्रु के उत्साही को दंड दो

यजुर्वेद
13:12

277. युद्ध में किनको हानि नहीं पहुंचानी चाहिए

यजुर्वेद
16:15

16:16

278. राजा और सेनापति के पास राज्य में हथियारों की कमी नहीं होनी चाहिए

यजुर्वेद 16:10

279. सेनापति, पुरुषार्थी मनुष्यों को ना मारे

यजुर्वेद
16:3

280. युद्ध क्षेत्र में घायल सैनिकों हेतु चिकित्सा व अस्पताल का प्रबंध रखो

यजुर्वेद 17:48

281. जो सुगुण राजा में है वह गुण राजा द्वारा प्रजा को भी धारण करवाने चाहिए

यजुर्वेद
19:9

282. सबका भला हो

ऋग्वेद

1:26:9

2:13:12

7:72:5

7:73:5

7:98:2

अथर्ववेद

1:31:4

283. सब मिलकर उन्नति करें

ऋग्वेद-
1:30:7
1:30:12
6:37:2
7:82:4
10:191:2-4

यजुर्वेद-
9:22

अथर्ववेद
6:64:1-3
20:131:6-11

284. मित्रता

ऋग्वेद-

1:41:8

4:1:3

4:26:5-6

5:7:1

5:9:6

5:10:4

5:65:4-5

6:48:18

7:31:1

10:117:4-7

285. पाखंडी दुष्ट से मत डरो

ऋग्वेद-

1:41:9

286. मानव महासागरों में द्वीपों पर यात्रा करने वाला हो

ऋग्वेद-

1:46:7

1:46:9-11

1:47:2

1:47:7

1:85:5

1:117:14-15

यजुर्वेद-

6:21

287. आत्मरक्षा उपदेश

:जो आपको मारे उसको मारो

ऋग्वेद-

1:50:13

4:50:2

अथर्ववेद

10:1:27

288. जो मुझे हिंसित नहीं करता उसको मैं भी हिंसित न करूं

ऋग्वेद-

1:50:13

289 .मूर्ख, पापिनी ,नारियों से दूर रहो

ऋग्वेद-

1:71:7

4:5:5

4:16:10

290.मूर्ख ,पापी, पुरुषों से दूर रहो

ऋग्वेद-

4:5:5

291. माता- पिता की संपत्ति संतान की

ऋग्वेद-

1:73:9

292. आलसी दुष्टो को ज्ञान ना दो

ऋग्वेद-

1:77:1

1:120:1

1:120:2

293. नमस्ते

ऋग्वेद-

1:84:5
1:114:11
1:139:9
2:21:2
2:38:8
3:2:8
3:18:4
3:33:8
3:33:10
7:95:4

अथर्ववेद

1:10:2
6:13:1-3
11:2:15-16
11:2:31
11:4:2
11:4:7-8

यजुर्वेद-

16:1
16:8
36:20-21

294. मनुष्य शरीर मिलने पर कैसे कर्म करने चाहिए

ऋग्वेद-
1:87:5

अथर्ववेद
10:2:5

295. दुष्टों का ताड़न (सुधार दंड) करो

ऋग्वेद

1:94:9

4:19:3

6:14:6

8:67:17

अथर्ववेद

10:1:12

296. सदा स्त्रियों के बीच रमण करने वाले कामी ,लंपटो से दूर रहो

ऋग्वेद

1:104:5

7:21:5

297. गर्भ हत्या पाप है

ऋग्वेद

1:104:8

1:114:7

अथर्ववेद
8:6:18

298. आर्यों (श्रेष्ठ) को दुष्टों का नाश करना चाहिए

ऋग्वेद

2:11:18

2:11:19

5:53:14

299. दुष्ट पापी, करोड़ों भी हो तो सबको मारो

ऋग्वेद

2:14:4

अथर्ववेद
8:8:7

300.बिना कारण ,दूसरों पर हिंसा करने वाले दुष्टो को मारो

ऋग्वेद

2:24:9

4:50:2

अथर्ववेद
5:31:1-10

301. व्यभिचार करना गलत है

ऋग्वेद

2:29:1

7:21:5

अथर्ववेद

8:6:16

302. जुआ खेलना पाप कर्म है

ऋग्वेद

2:29:5

4:31:7

5:85:8

6:53:3

6:53:5

10:34:1-14

अथर्ववेद

7:50:1

303. किसी के धर्मजनित सुख को नष्ट मत करो

ऋग्वेद

2:32:2

7:74:3

304. अहिंसक को मत मारो
हिंसा मत करो

ऋग्वेद

2:34:9
6:54:7

अथर्ववेद
18:2:36

सामवेद
176

305. घास की तरह जड़ जमाते हुए आगे बढ़े

ऋग्वेद

3:8:11

306. सभी मनुष्यों को सुख पूर्वक मिलकर, एक मन होकर रहना चाहिए

ऋग्वेद-

3:14:4

10:191:2-4

अथर्ववेद-

3:30:5-7

6:64:1-3

6:74:1

6:74:3

7:52:1-2

307. दुष्ट मनुष्यों का संग न करो

ऋग्वेद-

3:15:1

4:3:13

5:53:14

6:61:9

7:6:3

7:58:6

8:18:11

10:152:4

308. द्वेष भाव त्यागो

ऋग्वेद-	अथर्ववेद-	यजुर्वेद-
3:22:4	5:3:6	5:26
3:27:3	18:2:47	
4:11:6		
4:25:7		
5:68:4		
5:70:2		
5:87:8		
6:10:7		
7:40:6		
7:66:18		
9:85:8		
10:126:4-7		
10:152:5		

309. उत्तम वाणी को धारण करो

ऋग्वेद-

3:22:4
3:23:5
3:24:2
3:26:9
3:27:2
3:31:13
3:53:2
4:12:6
4:23:9
4:24:10
4:33:1
5:27:4-5
5:46:2
6:52:9
6:61:13
6:67:10
7:73:3

अथर्ववेद-

1:34:3
7:97:5-6
16:2:2-3

310. आर्य (श्रेष्ठ गुण कर्मयुक्त)
दस्यु (दुष्ट गुण कर्मयुक्त)

ऋग्वेद-	अथर्ववेद-	सामवेद
3:34:9	18:1:21	47
4:30:18	19:45:4	989
6:18:3	20:11:9	1515
6:60:6	20:126:19	
7:33:7		
9:63:5		
9:63:14		

यजुर्वेद-

33:82

311. दुष्टों का नाश करो , उत्तम मनुष्यों की रक्षा करो

ऋग्वेद-

3:34:9 , 6:21:8
3:46:2 , 6:22:8
3:51:7 , 6:33:3
4:4:5 , 6:53:6
4:24:8 , 6:60:6
4:30:8 , 7:25:3
4:30:18 , 7:56:20
4:50:2 , 8:35:12
5:2:6
5:4:6
5:7:10
5:36:3
6:19:12

सामवेद

989

अथर्ववेद-

5:14:9
20:11:9

यजुर्वेद

10:8

312. दुष्ट आचरण को त्यागो

ऋग्वेद

3:39:7

4:3:13

6:15:5

10:126:4-7-

अथर्ववेद

19:8:4

313. अच्छा से अच्छा व्यवहार और बुरो से बुरा व्यवहार करना चाहिए

ऋग्वेद **अथर्ववेद** **यजुर्वेद-**

4:2:9 , 7:25:3 **3:8:5** **10:8**

4:4:5 , 7:46:4 **5:14:9**

4:24:8 , 7:59:2

4:50:2

5:2:6

5:4:6

6:18:1

6:20:4

6:53:7

6:61:3

6:66:5

7:18:21

314. हिंसक मनुष्यों का साथ त्यागो

ऋग्वेद

4:3:13

4:23:7

5:3:7

5:53:14

8:18:11

8:79:9

अथर्ववेद

5:14:3

10:1:1-2

10:1:32

315. कुटिलतायुक्त सामर्थ्य, पदार्थ, किसी कुटिल का साथ , का कभी भी ग्रहण मत करो

ऋग्वेद

4:3:13

316.बंधुओं के अधिकार को मत छीनो

ऋग्वेद

4:3:13

317. दुष्ट को मित्र मत बनाओ

ऋग्वेद

4:3:13

4:5:5

4:11:6

318. शत्रु के ऋणी मत रहो

ऋग्वेद

4:3:13

319. झूठे स्त्री-पुरुषों का ताड़न करो

ऋग्वेद

4:5:5

4:16:10

320. श्रद्धा (सत्य धारण)

ऋग्वेद

4:23:9-11
4:26:1
5:2:8
5:12:2-3
5:15:2
5:51:2
5:63:1
5:65:2
10:128:4
10:151:1-5

यजुर्वेद

1:5

अथर्ववेद

11:3:25

321.छोटे बड़े भाइयों बंधुओं को एक विचार होकर उत्तम व्यवहार करना चाहिए

ऋग्वेद-

4:33:5

अथर्ववेद

3:30:3

322. सभी मनुष्य बराबर है

ऋग्वेद

5:60:5

10:63:1

अथर्ववेद

3:30:5-7

सामवेद

404

323. अपाहिज विद्वान का सम्मान करो

ऋग्वेद

6:38:1

324. छुआछूत खंडन

ऋग्वेद

6:50:7

अथर्ववेद

3:30:6

12:3:32

325. कामी लंपटो का त्याग करो

ऋग्वेद

7:21:5

326. सत्यवादी धर्मात्मा, असत्यवादी अधर्मात्मा

ऋग्वेद

7:28:4

7:104:12

327. किसी के घर अचानक बिना आज्ञा मत जाओ

ऋग्वेद

7:55:6

328. पराया धन न लो

ऋग्वेद

8:21:16

329.सबको आर्यत्व प्रदान करो

ऋग्वेद

9:63:5

330. सबको विद्या ग्रहण का अधिकार है

ऋग्वेद

10:32:8

यजुर्वेद
26:2

331. मनुष्य बनो

ऋग्वेद

10:53:6

332. धन मांगने वाले निर्धन की मदद करो

ऋग्वेद-

10:117:4-6

333. हिंसको की हिंसा धर्म है

अथर्ववेद

5:14:2-6

5:14:9-10

10:1:4-6

10:1:14-15

10:1:23

सामवेद

311

334. स्वार्थ त्यागो

सामवेद

1355

335. अच्छे कर्म करते हुए जीवन जियो

सामवेद

1874

336.अपने साथ–साथ दूसरे मानवो का भी उपकार करो

अथर्ववेद

1:10:2

यजुर्वेद

17:76

337.सर्वहित कामना

अथर्ववेद

1:31:4

11:2:29

338. डर को त्यागो

अथर्ववेद

2:15:1-6

339. कुवासना ,कुसंस्कार आदि का नाश हो

अथर्ववेद

2:24:1-8

7:100:1

340. सात– कुमर्यादाएँ

अथर्ववेद

5:1:6

341. जीवन में सब कुछ उत्तम हो सुखद व कल्याणकारी हो

यजुर्वेद
36:9-11

अथर्ववेद
5:9:8

342. निर्बल कौन है?

अथर्ववेद-
5:16:1-11

343. समाज को आगे बढ़ाते हुए जिओ

अथर्ववेद-
5:27:3

344.ईर्ष्या मत रखो "हानियां"

अथर्ववेद-

6:18:1-3

7:45:1-2

345. स्वपन?

अथर्ववेद-

6:46:1-2

16:5:1-10

19:56:1-6

19:57:1-5

346. पाप कर्मों से निवृत्ति

अथर्ववेद

6:114:1

6:115:1-3

6:116:1-3

7:115:1-4

347. ऋणी मत रहो

* ऋण समय पर उतार दो

अथर्ववेद

6:117:1-3

6:118:2

348. काम, क्रोध को काबू रखो

अथर्ववेद

7:95:1-3

7:96:1

349. तृष्णा का त्याग करो

अथर्ववेद

7:113:1

7:113:2

350. अधर्म पथ पर मत चलो

अथर्ववेद

8:1:10

351. रजोगुण और तमोगुण का त्याग करो

अथर्ववेद 8:2:1

352. हिंसा व दुष्कर्म न करने की प्रतिज्ञा

अथर्ववेद

8:4:15

<u>353.अपने प्रिय व परिजनों से प्रेम से वार्ता करें</u>

अथर्ववेद

9:5:30

354. शुद्र पर हिंसा करने वाले को दंड दो

अथर्ववेद- 10:1:3

355. स्त्री के हिंसक को दंड दो

अथर्ववेद-
10:1:3

356.ब्राह्मण के हिंसक को दंड दो

अथर्ववेद-
10:1:3
13:3:1-25

357.हिंसक दुष्ट को दंड दो, मारो, नष्ट करो

अथर्ववेद-

10:1:1-6

10:1:17-19

10:1:23

10:1:26-27

10:1:31

18:2:31

19:45:1

358. स्वयं शुद्ध होकर ,दूसरों को शुद्ध करो

अथर्ववेद-

12:3:26

359. झूठ मत बोलो

अथर्ववेद-

12:3:52

19:44:8

19:44:9

360.शुभ सत्य ज्ञान सुनो

अथर्ववेद-

16:2:4

361. मैं विद्वानों का प्रिय बनू

अथर्ववेद-
17:1:2
17:1:21

यजुर्वेद-
18:48

362 .मैं सभी प्रजा का प्रिय बनू

अथर्ववेद-

17:1:3

19:32:8

19:62:1

यजुर्वेद-

18:48

363. मैं पशुओं का प्रिय बनू

अथर्ववेद-

17:1:4

17:1:21

यजुर्वेद-

18:47

364. गरीब भूखों को भोजन करवाया करो

अथर्ववेद-
18:2:30
20:131:12

365.अत्याचार मत करो

अथर्ववेद-
18:2:36

366. शांति सुक्त

- संपूर्ण ब्रह्मांड के सुख शांति की कामना

अथर्ववेद-
19:9:1-14
19:10:1-10
19:11:1-6

यजुर्वेद-
36:17

367. अधोगामी कौन है?

अथर्ववेद-
20:128:2

368. असुर के लक्षण

यजुर्वेद-
2:30

369. सभी मनुष्यादि प्रजा के लिए कल्याणकारी बनो

यजुर्वेद- 11:45

370. सत्य ज्ञान को समाज में कहो, चाहे कोई बुरा कहे या भला

यजुर्वेद-12:42

371. व्यर्थ की प्रतिज्ञा शपथ मत करो

यजुर्वेद-12:90

372. मैं शूद्रों के प्रति अपराध बोध से मुक्त रहूं

यजुर्वेद- 20:17

373. मनुष्य (मैं) किन-किन पदार्थों ,विषयों ,ज्ञान-विज्ञान आदि में सिद्ध,समर्थ व सामर्थ्यवान होंऊ

यजुर्वेद-
18:1-27
21:29-47
21:49-58
22:33

374. मैं ब्राह्मणों से प्रीत करूं

यजुर्वेद-
18:48

375. मैं क्षत्रियों से प्रीत करूं

यजुर्वेद-
18:48

376.मैं वैश्यों से प्रीत करूं

यजुर्वेद-
18:48

377.मैं शुद्रों से प्रीत करूं

यजुर्वेद-
18:48

378.विद्वान चारों वर्णों के मनुष्यों का सम्मान व प्रीति करें

यजुर्वेद- 18:48

379. मैं हर तरह के अपराध बोध से पृथक रहूं व होऊ

यजुर्वेद-
20:14-17
20:20

380. मैं सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं

यजुर्वेद- 36:18

381. हम सभी एक दूसरे को मित्रवत दृष्टि से देखें

**यजुर्वेद-
36:18**

382. गृहस्थ आश्रम

(पति–पत्नी जीवन)

ऋग्वेद-

1:14:7 , 1:92:13-15 ,1:190:1 , 4:55:9
1:48:2-3 , 1:113:9-10 , 2:3:5-6 , 4:58:8
1:48:8 , 1:119:6-7 , 2:41:19-21, 5:1:11
1:48:10-13 , 1:123:3 , 3:13:4 , 5:5:5-7
1:48:15-16 , 1:123:7 , 3:33:13 , 5:8:1
1:49:1 , 1:123:11 , 3:53:4 , 5:37:3
1:49:3 , 1:124:6 , 3:57:3-4 , 5:47:1
1:50:1-3 , 1:124:8 , 4:14:4 , 5:47:6
1:56:1-2 , 1:124:11-12, 4:16:10 , 5:61:6-7
1:56:4 , 1:144:4 , 4:51:3 , 5:61:9
1:62:8-9 , 1:166:10 , 4:51:9 , 5:61:11
1:62:11 , 1:179:3-4 , 4:52:7 , 5:75:9
1:86:1 , 1:179:6 , 4:55:3 , 5:76:12-14

5:79:2-3
6:49:7
6:51:5
6:61:5
6:61:7
6:64:1
6:64:4
7:1:6
7:2:7
7:24:2
7:39:1
7:42:4
7:43:2
7:47:4
7:54:1-3
7:55:1
7:55:5-6

, 7:55:8
, 7:56:6
, 7:56:8-9
, 7:59:10
, 8:31:5-8
, 8:33:17-18
, 8:87:1-6
, 10:18:7
, 10:40:12
, 10:85:24-26
, 10:85:42
, 10:85:44
, 10:85:46-47
, 10:183:1
, 10:183:2

यजुर्वेद-

3:41-43 , 12:55 , 23:37
3:44-45 , 12:57 , 36:13-16
5:28 , 12:60 , 37:12
6:35 , 12:64 , 38:6-8
8:2-12 , 13:19 , 38:13
8:21-27 , 13:22 ,
8:30-33 , 13:24
8:42-43 , 13:35
8:48 , 14:1-5
8:51 , 14:8
8:54-57 , 14:11
11:30 , 15:10 -13
11:40 , 15:54-55
11:50-53 , 15:63
11:57 , 17:55-56
11:62 , 17:98
11:69-71 , 19:18
11:73-74 , 19:87
12:30 , 20:58-59

अथर्ववेद

2:30:1-5 , 9:6.1:1-8 , 14:1:5 ,19:31:1-14
3:12:1-9 , 9:6.2:1-13 ,14:1:59, 19:55:1-6
3:24:6 , 9:6.3:1-9 ,14:1:63, 19:58:6
3:30:2-3 , 9:6.4:1-10 ,14:2:17
6:9:1-3 , 9:6.5:1-10 , 14:2:24-27
6:78:1-3 , 9:6.6:1-14 , 14:2:31-33
6:81:1-3 , 12:3:6-12 , 14:2:40
6:122:3 , 12:3:17 , 14:2:43
6:139:1-5, 12:3:39 , 14:2:59-64
7:38:1-5 , 14:1:17-22 , 14:2:71
7:46:1-3 , 14:1:26-27 , 15:11:1-2
7:47:1-2 , 14:1:30-32 , 15:12:1-11
7:48:1-2 ,14:1:38-46 , 15:13:1-14
7:73:1-6 , 14:1:52 , 18:3:68-69
9:6:1-8 , 14:1:55 ,18:4:48-50

383. स्त्री को शिक्षा का अधिकार

ऋग्वेद-

1:30:11 , 5:41:7
1:46:1 , 6:61:1
1:48:9-18 , 6:61:3
1:48:14 , 7:34:1-8
1:49:4 , 8:33:19
1:56:2
1:71:3-4
1:124:13
1:164:41
2:3:8
3:31:6
3:61:1
4:41:9
4:51:8

अथर्ववेद

14:1:7
14:2:71
20:129:13

यजुर्वेद-

8:43
10:7
11:60-61
12:53-55
13:24
14:14
15:54
20:85-86
26:2

384. स्त्री को वेद विद्या का अधिकार

ऋग्वेद-

1:48:14

1:49:4

1:124:13

1:164:41

6:61:1

अथर्ववेद

14:1:7

14:2:71

20:129:13

यजुर्वेद

8:43

11:60-61

12:53-54

26:2

385. विवाह आयु (अवस्था)

ऋग्वेद-

1:45:1

1:56:2

1:117:13

3:31:7

5:2:1-3

10:40:11

10:85:21-22

10:85:40-41

अथर्ववेद

11:5:18

यजुर्वेद

6:13

15:53

386. कन्या, विवाहहेतु कैसा वर चयन करें

ऋग्वेद

1:56:2-4
1:113:17
1:127:1
2:35:4
3:57:3
4:5:7
5:34:1
6:22:5
6:64:5

अथर्ववेद

6:9:1
12:2:39

यजुर्वेद

11:58
12:66
38:2

387. पुरुष, विवाह हेतु कैसी वधू का चयन करें

ऋग्वेद	अथर्ववेद	यजुर्वेद
1:56:4	6:1:9	11:58
1:123:2	14:1:62	15:8
2:35:4		19:44
3:57:3		
4:51:2-5		
4:51:7-8		
5:5:2		
5:5:5		
6:64:5		
6:65:1-4		
7:10:3		
7:47:3		
10:85:21-22		
10:85:40		

388. स्त्री युद्ध में जाया करें

ऋग्वेद

1:82:5

1:123:5

5:30:9

6:75:13

6:75:15

10:102:2

10:102:6

10:102:11

यजुर्वेद

11:50

13:26

16:24

17:44-45

29:50

389. शिक्षा व ब्रह्मचर्य के बाद विवाह

ऋग्वेद-

1:112:9

4:21:2

4:51:7-8

5:2:2-4

अथर्ववेद-

11:5:6

11:5:18

390. स्त्री का अपहरण करने वाले को दंड दो

ऋग्वेद- 1:116:16

391. नियोग

ऋग्वेद-

1:123:2

10:10:1-14

10:18:8

10:40:2

10:40:5

अथर्ववेद-

14:2:3-4

18:3:1-4

392. पुरुष पत्नीव्रता रहे स्त्री पतिव्रता रहे

ऋग्वेद- 1:124:6

393. गर्भाधान संस्कार

ऋग्वेद-

3:48:2-3

5:32:12
6:66:3
8:23:21

अथर्ववेद-

14:2:14
14:2:37-39

यजुर्वेद-

8:10
8:29-30
19:88

394. गर्भाधान से पहले पुष्ट भोजन

ऋग्वेद-

3:48:2

395. मानव गर्भकाल

ऋग्वेद-

5:78:7-9

10:184:3

यजुर्वेद-

8:28

अथर्ववेद

1:11:6

3:23:2

5:25:10-13

396. निसंतान दंपत्ति को अपने वंश हेतु अपने गोत्र का ही बच्चा गोद लेना चाहिए

ऋग्वेद-

7:4:8

397. मासिक धर्म में संभोग नहीं करना चाहिए

ऋग्वेद-

10:85:30

398 .यौन शिक्षा

Sexual education

ऋग्वेद-

10:85:30
10:85:34
10:85:37
10:85:40-41
10:86:16-17
10:184:1-3

यजुर्वेद-

19:76
19:84
19:88

अथर्ववेद-

5:25:1-3
5:25:8-9
6:11:1-3
14:2:37-39

399. धाई

ऋग्वेद-

1:140:3

यजुर्वेद

10:7

12:2

400. स्त्रियां अध्यापिका बने

ऋग्वेद-

2:3:8

2:17:9

3:33:1-3

4:41:9

7:40:7

401. कन्याओं को गुरुकुल में स्त्रियां शिक्षा दें

ऋग्वेद-

3:33:1-3

4:41:9

402. स्त्री, भूविज्ञान को जाने

ऋग्वेद-

3:38:3

6:61:3

7:34:1

403. गृहस्थ स्त्री पत्नी तेरी संतान उत्पन्न करो

ऋग्वेद- 3:53:4

404. समान गुण कर्म स्वभाव वाली स्त्री पुरुष से विवाह करना चाहिए

ऋग्वेद-

4:16:10
4:51:6
4:51:8-9
4:58:8
6:75:4

अथर्ववेद-

14:1:8-9
14:1:29
14:2:71

यजुर्वेद

6:13

405. स्वयंवर विवाह

ऋग्वेद-

6:64:6

10:27:12

यजुर्वेद

8:7

8:8

8:9

406. स्त्री खगोलशास्त्री बने

ऋग्वेद-

4:34:1

407. वृद्ध (शरीर से) पुरुष का युवती स्त्री से विवाह निंदनीय है

ऋग्वेद-

8:2:19

<u>408.स्त्री व पुरुष अगर एक दूसरे को पसंद नहीं करते तो उनका विवाह मत करो</u>

ऋग्वेद-

10:85:32

409.पति-पत्नी सदा आपस में सुख के साथ रहे

ऋग्वेद-

10:85:42

10:85:43

410. 10(ten) संतानों तक पैदा करने का उपदेश

ऋग्वेद-

10:85:45

यजुर्वेद

19:48

411. प्रसव काल विद्या

अथर्ववेद

1:11:1-6

413.विवाह संस्कार

अथर्ववेद

1:14:1-4
2:36:1-8
6:82:1-3
7:37:1
14:1:6-64
14:2:1
14:2:17
14:2:26-30
14:2:65-68
14:2:73-75
20:127:12

ऋग्वेद-

10:85:43-46
5:3:2
10:85:6
10:85:38
10:85:24-25
10:85:33

यजुर्वेद-

11:49
18:38-43
36:14-16
36:24

414.एक समृद्ध खुशहाल घर की परिकल्पना

अथर्ववेद-

3:12:1-9

415. उत्तम संतानों उत्पन्न करो

अथर्ववेद-

3:23:1-6

416. एक पत्नी व्रत

अथर्ववेद-

7:37:1

7:38:4

417. गर्भ रक्षा करने का उपदेश

ऋग्वेद-

10:162:1-4

अथर्ववेद-

8:6:1-26

20:96:11-14

यजुर्वेद-
8:26-27

418.पुनर्विवाह

अथर्ववेद-

9:5:27

9:5:28

419. स्त्री को, विदुषी स्त्रियों में ही रहना चाहिए

अथर्ववेद-

11:1:13

420. हे स्त्रियों सदा सुखी रहो

ऋग्वेद-

10:18:7

अथर्ववेद

12:2:31

18:3:57

यजुर्वेद-

8:42

421. भाई-बहन के विवाह का निषेध

अथर्ववेद-

18:1:1-16

422.स्त्री कमजोर नहीं है

अथर्ववेद-

20:126:9

423. स्त्री विद्वान पुरुषों को ही अपना मित्र बनाएं

अथर्ववेद-

20:126:9

424.स्त्री को यज्ञ का अधिकार

यजुर्वेद-
5:28

अथर्ववेद-

20:126:10

425.जहां नारी (पत्नी) की पूजा (मान–सम्मान) होती है वही उन्नति होती है

अथर्ववेद-

20:135:5

426. ब्रह्मचारिणी कन्या को आचार्या का उपदेश

यजुर्वेद-
6:24-25

427. स्त्री (पत्नी) पुरुष (पति) को एक दूसरे से व्यर्थ डरना डराना नहीं चाहिए

यजुर्वेद-
6:35

428. दंपत्ति सदा एक दूसरे के पूरक, सहायतार्थ कर्म करें

यजुर्वेद-
8:7
8:8

429. स्त्री (पत्नी) न ताड़ने योग्य है

यजुर्वेद-
8:43

430. स्त्री (पत्नी) अपने पति को उत्तम गुणों का उपदेश दिया करें

यजुर्वेद-
8:43

431. पत्नी सदैव अपने पति को दुर्व्यवहार व पाप से दूर रहने का उपदेश व रखने का कार्य करें

यजुर्वेद-
8:48

432. सुशिक्षित नारी किसी से दब के ना रहे

यजुर्वेद-10:7

433. स्त्री न्याय विद्या ग्रहण करें

यजुर्वेद-
11:60

434. स्त्री न्यायाधीश बने

यजुर्वेद-
12:63

ऋग्वेद-
5:46:8

435. स्त्री कैसे पुरुषों को पति ना बनाएं

यजुर्वेद-
12:62

436. स्त्री राजनीति विद्या ग्रहण करें

यजुर्वेद- 11:60

437. स्त्री योग विद्या ग्रहण करें

यजुर्वेद-
11:60

ऋग्वेद-
2:41:17

438. पति पत्नी एक दूसरे के मित्र हैं

यजुर्वेद- 11:62

439. दूर क्षेत्रों ,विदेशों में विवाह करना चाहिए

यजुर्वेद-
11:72

440. युवावस्था में विवाह करना चाहिए

यजुर्वेद- 15:53

441.स्त्रियां वैध (doctor) बने

यजुर्वेद-

12:88

12:92

12:94

19:15

20:56

33:59

ऋग्वेद-

3:31:6

442. स्त्री विद्युत(electricity) विद्या जाने

यजुर्वेद- 38:4

443. स्त्रियां युद्ध में युद्धवाहन (tank, fighter jet etc.) को चलाते हुए युद्ध करें

यजुर्वेद-
29:50

444. विवाह-विच्छेद (divorce) की आधारभूत परिकल्पना

ऋग्वेद-
4:16:10

445. हे स्त्री, तू घर की साम्राज्ञी बन

ऋग्वेद-
10:85:46

अथर्ववेद-

14:1:43-44

446. हे स्त्री सभागृह में बातचीत करने वाली बनो

अथर्ववेद-

14:1:20-21

447. स्त्री भोजन बनाने की विद्या जाने

यजुर्वेद-
11:56
ऋग्वेद-
1:28:3

448. स्त्री कृषि विद्या जाने

यजुर्वेद- 14:21

449. स्त्री जीवन*

* for females

ऋग्वेद-

1:48:5-8	, 1:123:10-11	, 4:52:1-6	, 8:33:19
1:48:13	, 1:123:13	, 5:41:18	,10:85:26
1:48:15-16	, 1:124:3-4	, 5:46:8	,10:85:27
1:49:1-3	, 1:164:40	, 5:47:1	, 10:85:44
1:50:1	, 2:3:5	, 5:79:2-9	
1:71:3	, 2:32:4-6	, 5:80:1-6	
1:79:1	, 2:41:16	, 6:61:14	
1:92:7	, 3:31:6	, 6:66:1	
1:92:14-15	, 3:33:12-13	, 7:34:4-5	
1:113:12-15	, 3:38:3	, 7:34:7	
1:113:17	, 3:57:3	, 7:41:7	
1:113:19	, 3:60:1-4	, 7:56:7	
1:123:5	, 4:14:3	, 8:33:19	

यजुर्वेद-

11:61-63 , 17:54
12:53-54 , 20:58
13:19-20 , 20:60
13:22 , 20:85-86
13:26 , 23:36-37
14:2-5 , 26:20
14:12-13 , 29:50
14:21-22 , 34:10
15:54 , 35:5
15:58-59 , 35:21
15:63-64 , 37:12
17:3 , 38:2-4
17:6

अथर्ववेद

7:46:1-3
7:47:1-2
7:48:1-2
11:1:13
11:1:14
11:5:18

450. स्त्री सिलाई विद्या जाने

ऋग्वेद-
2:32:4

451. स्त्री के कार्य

ऋग्वेद-

1:22:11 , 6:75:15
1:30:11 , 8:33:19
1:49:2-3 , 10:85:26-27
1:56:2 , 10:85:46
1:123:5
2:3:8
2:41:17
2:41:18
3:31:6
5:41:7
5:46:8
6:61:3
6:61:6
6:61:14
6:75:13

अथर्ववेद

11:1:14
14:1:20-22
14:1:43-44
14:2:75

यजुर्वेद

10:7
11:50
11:56
11:62
13:20
14:21
14:22

452. रसोईघर विद्या

ऋग्वेद-

1:28:1-8

453. पशुपालन, पशुओं का यथा योग्य उपयोग

ऋग्वेद-

1:10:7
1:29:1
1:49:3
1:120:8-9
1:121:5
4:57:4
10:100:12

यजुर्वेद

6:11
18:26-27
21:59-60

अथर्ववेद

2:26:1-4

454. गौशाला (गाय पालन व रक्षा)

ऋग्वेद-
1:121:9-10
4:31:13
4:32:18
5:4:11
5:31:1
6:53:9
10:19:3
10:19:8
10:101:8-9
10:169:1-4

अथर्ववेद
3:14:1-6
8:3:15-17
18:4:32-36
18:4:39-40
19:24:5
19:31:1

सामवेद
187
998

455. मांसाहार नहीं करना चाहिए

ऋग्वेद-

1:162:1

अथर्ववेद
2:18:4
8:3:15
12:2:42-43
12:3:43

456. घोड़ा पालन

ऋग्वेद-

1:162:14

10:101:7

यजुर्वेद
25:29
25:31
25:38-39
25:41
25:45

457. गाय न मारने योग्य है (अघन्या हैं)

ऋग्वेद-
1:164:27

1:173:1

2:14:3

8:75:8

यजुर्वेद
13:49

अथर्ववेद
3:30:1
8:3:15
8:7:25
18:4:30

458. लाभदायक जीवो पर दया करो

ऋग्वेद-

1:168:10

10:169:1

459. मानव आहार व पुष्टता का वर्णन

ऋग्वेद-

1:187:1-11
3:52:2
3:47:1
3:52:4-5
3:52:7-8
5:73:8
8:2:9
8:48:1-12
8:77:10

यजुर्वेद

18:12
19:21-23
23:8

460. सूक्ष्मजीव

ऋग्वेद-

1:191:1-5

1:191:7

अथर्ववेद

2:31:2

2:32:5

461. गौ हत्यारे को राजा मारे/दंड दे

ऋग्वेद-

2:14:3

7:56:17

अथर्ववेद

1:16:4

8:3:15

यजुर्वेद

30:18

सामवेद

1668

462. लाभदायक पशुओं की हिंसा ना करो, अपितु उनकी रक्षा करो

ऋग्वेद-

4:6:3-4

7:58:3

10:169:1

यजुर्वेद

12:32

13:47

13:50-52

अथर्ववेद

1:16:4

463. गाय गव्य पदार्थ

ऋग्वेद-

6:6:14

8:2:3

8:3:1

सामवेद
575

464. पीड़ादायक ,रोग, व्याधि ,उत्पन्न करने वाले जीवो का नाश करो

ऋग्वेद-

10:87:1-25

465. हानिकारक जीवो को हटाओ/मारो

अथर्ववेद-

2:31:1:5 , 11:9:17

2:32:1-6

4:3:1-7

5:23:1-3

6:50:1

6:50:3

8:6:10-15

10:4:1-13

10:4:15-20

यजुर्वेद-

13:8 , 16:58

13:47

13:49-51

15:17

466. जीव जंतुओं की हिंसा करने वाले को दंड दो

अथर्ववेद-
5:31:2-3
8:3:15
12:2:15-16

467. चार दांतों वाले हाथी का वर्णन

अथर्ववेद-

11:9:17

468. डायनासोर जैसे भयंकर रक्त पिपासु जीवो का वर्णन

अथर्ववेद- 11:9:17

यजुर्वेद- 16:58

469. पिशाच (मांसाहारी मनुष्य) को अपने जलपान से दूर रखो

अथर्ववेद- 12:3:43

470. पिशाच (मांसाहारी मनुष्य) को दंड दो

अथर्ववेद-

12:3:43

2:18:4

8:3:15

471. घोड़े को मत मारो

अथर्ववेद-

8:3:15

1:16:4

यजुर्वेद-

13:48

25:35

472. घोड़े का मारने व मांस खाने वाले को दंड दो

अथर्ववेद-

8:3:15

1:16:4

यजुर्वेद-

25:35-36

473. मांस रक्त आदि से हवन नहीं करना चाहिए

यजुर्वेद-

19:81

474.व्यभिचारी मांसाहारी को दंड (ताड़ना) दो

यजुर्वेद-

23:21

475. गुरुत्वाकर्षण बल

ऋग्वेद

1:2:4
1:5:4
1:7:8
1:8:7
1:10:2-3
1:55:7
1:56:5
2:12:2
2:12:12
4:13:3
6:60:10

अथर्ववेद

9:9:9
12:1:48
20:123:2

यजुर्वेद

1:26

476. विद्या का प्रचार करना चाहिए

ऋग्वेद

1:3:7-9
1:43:3
1:45:6
1:74:3
1:75:2
1:83:3
1:139:5
2:43:2-3
4:5:11
4:23:8
4:50:1
5:40:8
5:41:7
5:43:7
6:31:4
6:72:3
7:72:3

अथर्ववेद

7:99:1
7:104:1

5:27

477. वेद सबके लिए है

ऋग्वेद	यजुर्वेद
1:3:10	20:12
1:3:12	26:2
1:7:1	
1:8:8	
1:9:4	
1:12:12	
1:31:10-11	
1:43:9	
7:79:1	
8:6:10	
10:141:2	

478. विद्वानों से शंका समाधान

ऋग्वेद

1:4:4

1:120:3-4

5:74:2

यजुर्वेद

4:24

479. वर्षा चक्र ,जल चक्र

ऋग्वेद

1:6:4-5
1:6:9
1:7:3
1:7:6
1:7:8
1:8:7
1:23:18
1:32:1-2
1:164:51
2:30:3
8:6:20
10:68:6

अथर्ववेद

6:22:1
9:10:22

सामवेद

148
1399
1532

480. पेड़ -पौधे चांद की चांदनी में पुष्ट होते हैं

ऋग्वेद

1:14:3

481. समाधि अवस्था में वेद मंत्रों के अर्थों का ज्ञान लाभ

ऋग्वेद

1:10:4

1:27:4

8:6:10

8:36:7

9:97:35

10:71:1-3

482.वेद ज्ञान अनादि है

ऋग्वेद

6:61:1

8:6:9

8:6:11

8:52:9

8:75:6

9:99:4

10:31:1

यजुर्वेद

12:51

483.<u>वेद नित्य है</u>

यजुर्वेद 33:77

484.वेद के मंत्रों पर विचार करने से ज्ञान उदय

ऋग्वेद

1:72:6

1:73:10

485.व्यापार

अथर्ववेद

3:15:1-8

486. प्रातः काल महिमा

अथर्ववेद

3:16:1-2

यजुर्वेद

34:34

487.अविद्या का नाश करो,विद्या को बढ़ाओ

अथर्ववेद

3:18:1-16

3:25:1-5

3:26:6

4:21:3

6:8:1-3

12:3:21

488.सबसे कमजोर का अस्तित्व (survival of the weakest)

अथर्ववेद

3:29:3

12:2:21

489 विद्वानों के अलग मत रहो

अथर्ववेद

12:2:50

490. सुखद निद्रा लो

अथर्ववेद

4:5:1-2

491.योगिक सिद्धियां

अथर्ववेद

4:14:3-4

यजुर्वेद

17:67-68

17:71

492. दिन रात पृथ्वी पर सदा कहीं ना कहीं वर्तमान रहते हैं

अथर्ववेद 4:18:1

493.विद्या महिमा

अथर्ववेद

4:21:3-7

6:139:3

7:27:1

494.गणित विद्या

अथर्ववेद

5:15:1-11
5:16:1-11
7:4:1
13:4:15-18
19;22;8-10
19:23:1-17
19:47:3-5

यजुर्वेद

17:2
18:24-25

495.वेदवेता दमन ब्रहमचारी का तिरस्कार कर वेद विरुद्ध कार्य को करने वाले का नाश होता है

अथर्ववेद

5:9:1-15

12:5:5-11

12:5:15-16

12:5:21

12:5:27

12:5:38

12:5:41

12:5:44

496.पापी माता-पिता का साथ मत दो

अथर्ववेद 5:30:4

497.संतान माता-पिता को कष्ट ना दें

अथर्ववेद
6:110:3

यजुर्वेद
10:23

498.जल पवित्रकारक होता है

अथर्ववेद
6:51:2
6:124:2

499.सूर्य और पृथ्वी को अलग अलग किया

अथर्ववेद
6:61:2
9:9:8

500. गृहस्थो का विद्वानों के साथ सत्संग

अथर्ववेद

6:73:1-3

6:123:1

यजुर्वेद

17:73

29:28

501.योग के आठ अंग हैं

अथर्ववेद

6:92:1

13:3:19

502. किला,गढ़,गांव,सभ्यता निर्माण कैसे व कैसा हो

अथर्ववेद

6:106:1-3

9:3:1-31

503.बुद्धि कैसी हो

अथर्ववेद

6:108:1-5

यजुर्वेद

17:74

504.मेखला बंधन

अथर्ववेद
6:133:1-5

505.केश औषधि वर्णन

अथर्ववेद
6:136:1-3
6:137:1-3

506.सूर्य उदय होने के बाद तक होने वाले मनुष्य का तेज क्षीण होने लगता है

अथर्ववेद 7:14:2

507.अंडाशय(overy) के रोग से महिलाओं के शरीर पर ज्यादा बाल आने लगते हैं

अथर्ववेद

8 : 6 : 5

508.शाला निर्माण

अथर्ववेद
9:3:1-31

509.परमेश्वर को जाने बिना मोक्ष संभव नहीं

अथर्ववेद

9:9:21

510. आदिसृष्टि में प्रथम उत्पन्न ऋषियों को चार वेद का ज्ञान प्रकट हुआ

अथर्ववेद
10:7:14

511.चारों वेदों के नाम

ऋग्वेद

10:90:9

यजुर्वेद

18:29

20:12

31:7

अथर्ववेद

10:7:20

11:7:24

15:6:8-9

19:6:13

512.वेद वाणी आदि मनुष्य पर प्रकट हुई

अथर्ववेद
10:9:1

513.ईश्वर साक्षात्कार (समाधि)से पहले जानने वाले विषय

अथर्ववेद

10:10:2

514. जिस विधि से ऋषियों ने ईश्वर को जाना है वही एक विधि है अन्य कोई भी नहीं है

अथर्ववेद 11:3:32-49

515.ब्रह्मचारी/ ब्रह्मचर्य महिमा

अथर्ववेद
11:5:1-26

516. पृथ्वी कहीं से ऊंची, कहीं से नीची,कहीं पर समतल है

अथर्ववेद
12:1:2

517.पृथ्वी महाभूत का गुण गंध है

अथर्ववेद 12:1:23-25

518.मोक्ष अवस्था

ऋग्वेद

9:113:7-11

9:114:3

सामवेद

1847

यजुर्वेद

17:14

519.यज्ञ कुशल विद्वान मनुष्य सामान्य मनुष्यों को यज्ञ की शिक्षा दें

ऋग्वेद

10:2:5

520.पृथ्वी, हाथ पैर आदि अवयवों से रहित है

ऋग्वेद

10:22:14

521. वर्ण रहित मनुष्य

ऋग्वेद

10:53:4-5

10:119:6

522.विभिन्न औषधीय वर्णन

ऋग्वेद

अथर्ववेद

10:59:10 19:34:1-10

10:97:1-23 19:35:1-5

यजुर्वेद 19:36:1-6

12:89 19:38:1-3

12:91 19:39:1-10

12:100

523 पृथ्वी गोलाकार है

ऋग्वेद अथर्ववेद

1:164:34-35

9:10:13-14

10:58:3

यजुर्वेद

22:24

23:62

524.परा,पश्यंति,मध्यमा,वैखरी

ऋग्वेद

10:67:4

525 योगी सूक्ष्मवाणी (परा-पश्यंति) आदि का ज्ञान प्राप्त करता है

ऋग्वेद

10:67:4

526.वेद ज्ञान महिमा

अथर्ववेद

3:30:4
5:17:1-18
9:10:4-5
9:10:21
10:9:1-27
18:4:45-47
19:42:1-2

सामवेद

1298-1299
1300-1303
1740-1742

ऋग्वेद

10:71:1-6

527. देव यज्ञ

ऋग्वेद

10:70:1-11

528 वेद आदि ज्ञानवाणी आदि भाषा ज्ञान भाषा है

ऋग्वेद

10:70:1

529. सबकी अपनी अपनी योग्यता होती है

ऋग्वेद

10:71:7

10:117:9

530.हवन की राख का भक्षण

ऋग्वेद

10:76:7

531. धरती पर ऋतु चक्र चंद्रमा के कारण व्यवस्थित होते हैं

ऋग्वेद

10:85:18

अथर्ववेद

7:81:1

532.सोम खाद्य अलग है सोम धारक अलग है

ऋग्वेद

10:85:3

533.विद्युत चुंबकीय सूर्य प्रकाश

ऋग्वेद

10:96:3-4

10:96:8

534.सूर्य में चुंबकीय क्षेत्र

ऋग्वेद

10:96:8

535. पेड़ पौधे जानवरों से पहले पैदा होते हैं

ऋग्वेद

10:97:1

536 .चुंबकत्व और वर्षा

ऋग्वेद

10:99:6

537 .अपने शरीर में ही रोगों से लड़ने वाली शक्ति को बनाओ

ऋग्वेद

10:100:10

538. यांत्रिक (बिजलीयुक्त) अस्त्र-शस्त्र

ऋग्वेद

10:102:4-10

539. सूर्योदय दिशा

ऋग्वेद

10:110:4

10:139:1

540. सूर्य प्रकाश चिकित्सा

ऋग्वेद

10:116:5

10:170:2

सामवेद

1454

अथर्ववेद

1:22:1-2

541. अग्निहोत्र से रोगाणु आदि नष्ट-भ्रष्ट होते हैं

ऋग्वेद

10:118:1

10:118:7-8

542. मानसिक दुर्भावना ईर्ष्या लोभ लालच आदि से मुक्ति

ऋग्वेद

10:164:1-5

अथर्ववेद

6:45:1-3

543. यज्ञ में विघ्न डालने वाले दुष्ट को सजा दो

ऋग्वेद

10:171:2

544. वाक् विज्ञान

ऋग्वेद

10:177:2

545. अंतरिक्षस्थ पिंडो को हाथी घोड़े नहीं चलाते , अपितु ईश्वर चलाता है।

S-सामवेद

172

546. ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की उपासना मत करो

ऋग्वेद	सामवेद
7:104:14	242
8:1:1	1360

547.शल्य चिकित्सा

सामवेद

S-244

548. ईश्वर त्रिपाद समस्या हल

सामवेद

618
619
620

549.वानप्रस्थ आश्रम

सामवेद-

S-623

550. जिस विषय में आपकी रुचि है उसमें दक्षता प्राप्त करो

सामवेद-

S-706

551. गुरु-आचार्य का शिष्य को वर्ण देना

सामवेद

S-938

552. आत्मा स्तुति (वीर-रस)

सामवेद

S-949-954

S-979

S-988-989

S-1047-1050

S-1719

S-1849-1859

S-1862

S-1867-1868

S-1870

553. योग बल से आकाश गमन

सामवेद

1217

यजुर्वेद

17:67-68

554.अग्निहोत्र पुरोहित योग्यता

सामवेद

S-1219

555. जीवात्मा सतोगुण को धारण कर रजोगुण, तमोगुण को त्याग कर परमात्मा प्राप्ति कर सकता है

सामवेद

S-1262

S-1263

556. चंद्र ग्रहण

सामवेद

S-1277

557. संस्कृत “शब्द”

अथर्ववेद-

4:21:4

11:1:35

सामवेद

1753

558. योगाचार्य गुण कर्म

यजुर्वेद
11:5-6

सामवेद

1780-1781

559. जागरूक पुरुषार्थी को ही सफलता मिलती है

सामवेद

S-1826

S-1827

560. जल औषधि वर्णन

अथर्ववेद-

1:4:4

561. तिल तेल औषधि

अथर्ववेद-

2:8:3

562. निर्धनता "वर्णन"

निर्धनता बहुत कष्टदायक, इसको दूर करो पुरुषार्थ से

अथर्ववेद-

2:14:1-6

5:7:1-10

563. गौदूध-गौघृत का सेवन करो

अथर्ववेद-

2:26:4-5

564. समाज में स्त्री पुरुष इस तरह प्यार से रहे जैसे माता पुत्र को प्यार करती है

अथर्ववेद-

12:3:23

565. दिशाओं के नाम

अथर्ववेद-

11:6:18
12:3:24
12:3:55-58
18:3:25-28
18:3:30-33
19:16:1
19:17:1
19:17:3
19:17:5
19:17:7
19:27:14
20:120:1
20:125:1

यजुर्वेद

14:13
16:64-66

566. चावल पकाना

अथर्ववेद-
12:3:29-30

567. अलग माता-पिता से पैदा हुए भाई बहन मिलकर बंधु धर्म का पालन करें

नोट– [माता एक पिता अलग-अलग पिता एक माता अलग-अलग]

अथर्ववेद–

12:3:40

568. वस्त्र आदि पहनने का उपदेश

अथर्ववेद-

12:3:51

569. वेदज्ञाता अगर वेद वाणी का ज्ञान अन्य को नहीं देता तो वह नष्ट भ्रष्ट हो जाता है

अथर्ववेद-

12:4:2-3
12:4:12-13
12:4:19-21
12:4:25-26
12:4:34
12:4:48
12:4:51-52

570.बहुत सारे भूगोल ग्रह हैं

Y-15;33

571. यज्ञोपवित

Y-16:17

19:31

572.पर्वतों में रहने वालों का सत्कार करो

Y-16:22

573.वर्णसंकर का सम्मान करो

Y-16:26

574.शूद्र का सत्कार करो

Y-16:29

16:32

575.जंगली मनुष्य का आदर सत्कार करो

Y-16:34

576.अस्त्र-शस्त्र बनाने वाले का सम्मान करो

Y-16:36

577.गो,मछली और चींटी आदि को प्रेम हेतु, दया हेतु अन्न दो

Y-16:37-38

16:40

578.एलियंस👽 का भी मान सम्मान करो

Y-16:45

579.योगाभ्यास के बिना खाली शब्द अर्थ, खंडन-मंडन आदि से परमात्मा को नहीं जाना व प्राप्त किया जा सकता

R-10:82:3

Y-17:31

40:12

580.सूर्य किरण संसार को पुष्ट करती है

Y-17:58

581.विद्वानों को एक साथ मिलकर सत्य सिद्धांतों पर स्थिर रहना चाहिए

Y-17:73

582.अतिथि 3 दिनों तक ही घर में रुके

Y-19:14

583.सत्य तक पहुंचने के तरीके

Y-18:58

584.सुई

Y-23:33

585.हर जगह का जल शुद्ध रखो

Y-22:25

586.बादलों के विभिन्न प्रकार

Y-22:26

587. वैदिक महीनों के नाम

Y-22:31

VEDIC MOTIVATION

588.अपना उद्धार स्वयं करो

Y-23:15

589. ऋतुअनुसार सुख हेतु रंगों का चयन

Y-24:11

590.भैंस (शब्द)

Y-24:28

ECOLOGY

591.विभिन्न पशु -पक्षियों के व्यवहार व गुण व उनका यथा योग्य उपयोग

Y-24:1-40

29:58-59

592.पंच भूतों के नाम

Y-26:1

593.नदियों,पहाड़आदि पर एकांत जगह पर योगाभ्यास करना चाहिए

Y-26:15 **S-72**

594.मनुष्य जीवन के यज्ञ(कर्तव्य)

Y-28:1-45

595. विद्युत का अति सूक्ष्म विज्ञान

Y-29:13

596.आप्त मनुष्य के गुण

Y-29:37

597. जो व्यक्ति बुद्धिहीनो को बुद्धिमान व नीच वर्णों को उच्च वर्ण करते हैं वही महान विद्वान होते हैं

Y-29:37

598. हे ईश्वर व राजन हमारे बीच उत्तम प्रश्न करता व उत्तम उत्तर दाताओं को उत्पन्न कीजिए

Y-30:10

599. धर्मस्य मूलम अर्थम

Y-30:11

600.चार युगों के नाम

Y-30:18

601.सूर्य ,पृथ्वी से पहले उत्पन्न होता है

Y-31:20

602.ईश्वर व गुरुजनों से मुझे उत्तम बुद्धि प्राप्त हो

Y-32:14-15

603. प्रातकाल औषधियों का रस पियो

Y-34:34

604.संतानों की हत्या मत करो

Y-35:7

605. गाय का घी पिया करो

Y-35:17

606. ईश्वर हमारी किस तरह मदद करता है वह कैसे कब हमारी बुद्धि में शुभ गुण कर्मों की प्रेरणा करता है इसको आत्मा नहीं जानता

Y-36:4

607 .मनुष्य को पदार्थों का भोग त्याग भाव से करना चाहिए

Y-40:1

608 .मनुष्य निष्काम कर्म करता हुआ 100 वर्ष जीने की कामना करें

Y-40:2

609.जो मनुष्य जड़ प्रकृति की उपासना करते हैं वह अंधकार में गिरते हैं

Y-40:9

40:12

610.वसंत ऋतु

Y-13:25

611 .ग्रीष्म ऋतु

Y-14:6

612.वर्षा ऋतु

Y-14:15

613.शरद ऋतु

Y-14:16

15:18

614.हेमंत ऋतु

Y-14:27

615.शिशिर ऋतु

Y-15:27

616. बिना विचारे वेद को धारण करने से प्रजा नष्ट भ्रष्ट होती है

A- 12:4:5

12:4:8

617 .वेद को यथावत विचार करके ग्रहण करें

A- 12:4:5

<u>618. जो व्यक्ति वेद वाणी को कुमार्ग हेतु उपयोग करता है वह युवकों का हत्यारा होता है</u>

A- 12:4:7

619 .वेद ज्ञान सुपात्र जिज्ञासाओं को सिखाना चाहिए

A- 12:4:10

12:4:40

620. पापी भ्रष्ट कामी लंपट मनुष्य वेद वाणी को ग्रहण करके भी समाज हित नहीं कर सकता

A- 12:4:22

621.वेद ज्ञान कुपात्रों को मत दो

A- 12:4:23

622. वेद विद्या को जानकर जो कुमार्ग पर चलता है वह जल्दी ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है

A- 12:4:28

623 .वेद विद्या के विपरीत चलने वाला नष्ट भ्रष्ट हो जाता है

A- 12:4:37-39

624. अब्रह्मचारी वेद वाणी का संपूर्ण लाभ नहीं ले सकता

A- 12:4:43-44

12:4:46

<u>625. ब्रह्मचारी को सताने वाले क्षत्रिय (नास्तिक) का सर्वनाश हो जाता है</u>

A- 12:5:5-11

12:5:44-50

626.ब्रह्मचारी विद्वानों को सिखाने वाला क्षत्रिय नास्तिक को दंड दो

A- 12:5:51-52

12:5:60

627 .अधर्मी मनुष्य को उसका फल इसी जन्म में या अगले जन्म में मिलता है

A- 12:5:57

628.ब्रह्मचारी विद्वानों के हानिकारक अपराधी नास्तिकों को दंड दो

A-12:5:60-73

13:3:1-25

629.मानसिक वाचनिक दैहिक 3 तरह के पाप-पुण्य कर्म होते हैं

A-13:3:21

19:9:2-5

19:40:1

630.जिन कर्मों से ईश्वर का अनुमान होता है वह कार्य ईश्वर द्वारा किए होते हैं

A-13:4:29-40

ZERO

631.शुन्य(0) शब्द

A-14:2:19

632.आरामदायक वस्त्र पहने

A-14:2:51

633 .अतिथि सत्कार का फल

A-15:10:3-11

15:11:3-11

15:12:4-11

<u>634. अतिथि सत्कार कैसे करें</u>

A-15:11:1-3

15:11:11

635.झूठे पाखंडी पापी अतिथि का तिरस्कार करो

A-15:13:11-12

636.पुरुषार्थ हेतु आत्मस्तुति

A-16:3:1-6

16:9:4

637.भूतकाल में भविष्य भविष्य में भूतकाल रखा हुआ है

A-17:1:19

638.आधिदेविक आधिभौतिक अध्यात्मिक सुख-दुख

A-17:1:28

19:44:6

20:129:8

639.पितृ यज्ञ

A-18:1:44-47

18:1:51-52

18:1:56-58

18:1:60-61

18:2:21

18:2:34

18:2:49

18:3:19-20

Y-2:32-34

19:49-70

18:3:42

18:3:44-46

18:3:59

18:4:41-44

18:4:51-52

18:4:63-68

18:4:71-87

640.पितृ ऋण

Y-19:11

641.पितृ का हमारे प्रति वह हमारा पितृ के प्रति कर्तव्य

Y-19:49-70

642. अन्न को नष्ट मत करो

A 18:3:53

643.वेद की मर्यादा से बाहर रहने वाले को मोक्ष नहीं मिलता

A 18:2:38-45

644.स्वतंत्र जहां चाहो वहां विचरण करो

A 18:3:19

645. पित्र कर्तव्य उपदेश

A -18:3:10

18:3:14

18:3:19-22

18:3:45

646. शुद्ध जल से भरी हुई कृत्रिम नालिया समाज में हो, बनाओ

A 18:4:57

647. नक्षत्र 28

A 19:7:2-5

648.शुद्ध छिंक ,अशुद्ध छिंक

A 19:8:5

649. स्वर्ण धातु महिमा

A 19:26:1-4

650. तर्क द्वारा ईश्वर का अंगीकार करो

A -19:37:3

Y- 5:25

6:3

8:41

651.उपनिषद शब्द

A -19:41:1

652.आशा (hope)

महिमा , आशावान रहो

A -19:52:2

19:52:5

653.शरीर को स्वस्थ रखो

A -19:60:1 19:67:1-8

654. शास्त्रार्थ

A -20:89:1

655.मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ है

A -20:126:1-23

656.जिंदगी से दुखी,हारे हुए नकारात्मक,निराशावादी मनुष्य के लिए ईश्वर का उपदेश

A -20:126:16-17

657.सामाजिक शास्त्र समाज में भले बुरे का विधान

A -20:128:2-13

658.घोड़ा चाहिए तो अस्तबल में जाओ, गौशाला में नहीं .

(अर्थात logical बुद्धि का उपयोग किया करो)

A -20:129:17-18

659.जूते shoes

A -20:135:2

660.धूप से चलने वाले वाहन यंत्र

A -20:143:1

661.सुखी जीवन हेतु किसान का अनुसरण करो

A -20:143:8

<u>662.अग्निहोत्र शुद्धि करता है</u>

Y-1:2

1:9

1:13

37:9

663.यज्ञ सदा सर्वहित हेतु करो

Y-2:23

664.जैसा करोगे वैसा भरोगे

Y-2:28

665.खरीदारी व्यवस्था

Y- 3:50

666.सूर्य से सीधे नजरें मत मिलाओ

Y- 5:43

667. अंतरिक्ष गमन करो

Y- 6:21

7:16

668. माता का संतान से वात्सल्य

Y- 6:36

669.माता पिता संतान को विद्या प्राप्ति के लिए आदेश दें

Y- 11:44

670.तर्क से ही पदार्थ विद्या प्राप्त होती है

Y- 8:56

671.यज्ञ संसार को पवित्र करो

Y- 8:63

672. विद्यार्थियों को भोजन बनाना सिखाओ

Y- 11:59

673. माता-पिता संतान को गलत शिक्षा व कष्ट ना दें

Y- 10:23

11:68

674.संतान माता को साथ रखें

Y- 12:78

675.माता से ज्ञान प्राप्त करो

Y- 12:15

676.माता को मन से भी कष्ट मत दो

Y- 12:15

677.विद्वानों के रसोइए

Y- 12:26

678. न्यायधीश के न्याय का विरोध आचरण ना करो

Y- 12:90

679. सूर्यास्त सूर्य को देखना चाहिए

Y- 13:56

680.है वैद्य लोगों आपस में औषधियों हेतु ज्ञान चर्चा कर रोगों का निदान करो

Y- 12:96

681 .सभी मनुष्य को शस्त्र धारण करना चाहिए

Y- 11:67

682.मुंडन चूड़ाकरण संस्कार

A- 6:68:1-3

683.बालक के दांत निकलना उसका आहार आदि अन्नप्राशन संस्कार

A- 6:140:1-3

684.प्राण ,अपान ,व्यान ,समान

A- 10:2:13

8:2:46

19:51:1

Y- 18:2

22:23

22:33

685.उपनयन संस्कार

A- 11:5:3

686.सूर्य में गायत्री आदि छंद कंपित है

R-10:14:16

687.अंत्येष्टि संस्कार

R-10:16:7

10:16:9-12

Y-39:1-3

39:10

40:15

688. INFERTILITY रोग को दूर करो हे वैद्य

R-10:39:7

689.धन, धन को कमाता है

R - 10:117:8

690.अध्यात्म

Rigved –

10:136:1-6

सामवेद-

7-9
14
19
21
23
26
32
55
152
297
320
325

367
524
530
534
545
933
934
945
961-964
1126
1127
1176

1177
1180
1182

यजुर्वेद-

7:4-9

17:67-68

40:1-17

अथर्ववेद-

5:5:1-9

5:6:11-14

5:9:7

8:9:1

9:10:9

9:10:10

9:10:19

10:8:43

17:1:20

20:126:2

691.गुरुकुल ,गुरु शिष्य संबंध आचरण व्यवहार कर्तव्य आदि

सामवेद-

672-679

705-707

710

720-722

734-736

745

747-748

764-766

803

811

856-858

864-866

869

871-872

875

919-926

935

937-939

990

999-1000

1029-1030

1061-1066

1076-1077

1093-1095

1105

1116-1117

1122-1126

1130-1133

1220-1221

1264-1265

1329-1334

1396-1398

1775-1776

अथर्ववेद-

7:15:1

7:89:1-4

यजुर्वेद-

6:14-15

7:33-34

9:1:15-16

12:3:47

18:2:5

18:2:27

692.आयुर्वान बनो

अथर्ववेद-

2:28:1-5	7:32:1	13:2:37
2:29:1-3	7:33:1	18:2:3
2:29:7	7:53:2-3	18:4:48
3:11:2-6	7:53:6	18:4:53
3:31:8-10	8:2:2	19:32:1
4:10:6	8:2:8	19:32:3
6:76:2	8:5:21	19:67:1-8
6:78:3	12:1:62	19:69:1-4
6:110:2	12:2:32	19:70:1
6:133:5	12:2:45	20:96:8-9

यजुर्वेद-

5:27

12:100

34:47

35:15

35:17

36:24

40:2

693. वर्ण व्यवस्था गुण कर्म प्रधान होती है

R-

4:44:6

6:22:10

7:88:4

8:2:18

9:112:1

9:112:3

10:86:19

10:125:5

samved-

216

A-

20:128:6-7

694.वेद चार हैं

R-4:58:2-3

A-10:7:20

Y-17:90-91

31:7

695.पुरुषार्थ के बिना लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकती अर्थात पुरुषार्थी बनो

Rigved Yajurved

240	7:72:1
416	12:2:23
441	18:1:54
551	18:3:8
852	20:31:3
1258	20:125:3
1345	20:126:16-17
1606	20:130:1-6
1826-1827	

696.पाप कर्म को बुद्धि से दग्ध करो

Rigved-

5:45:11

697.दान ,दान महत्व

Rigved-

5:52:15 , 10:117:2-3

6:45:33

7:18:22

7:37:4

8:31:2

10:107:7-11

698.युवा पुरुषार्थ

Rigved-

5:61:13

6:5:1

7:4:2

8:100:1

8:100:3

A-

3:24:5

699.मेघ विद्या

Rigved-

5:83:1

5:83:4-8

700.उपदेशों को तर्क वितर्क कर मनन कर के उसको धारण करें

Rigved-:

6:16:16 , 6:51:1 , 7:64:4

701.बिना ज्ञान अर्जित किए हुए व्यर्थ तर्क मत करो

Rigved-

6:17:8

702.नशीले पदार्थों का बिना वैद्य परामर्श के सेवन मत करो

Rigved-

6:20:6

703.शूद्र कुल में उत्पन्न बालक, पढ़कर द्विज वर्ण धारण कर सकता है

Rigved-

6:22:10

A-

20:36:10

704.विद्या किसको प्राप्त होती है और किसको प्राप्त नहीं होती

Rigved-

6:28:4

6:51:1

7:76:5

9:73:6

9:101:5

Samved

268

875

A-4:21:4

705.संवाद ,प्रश्नोत्तर, दान-रहित मूर्ख व्यक्ति समाज से दूर रहो

Rigved-

6:47:13

6:52:3

6:61:11

6:72:1

7:104:2-3

10:182:3

706.सपरिवार सुखी रहो

Rigved-

6:51:5

अथर्ववेद-
1:4:1
3:30:2-3

707.जटाजूट ब्रह्मचारी

Rigved-

6:55:2

Yajurved

16:29

16:59

708.ज्ञानवाणी वेद मंत्र सर्वत्र हैं

Rigved-

6:61:11

8:13:8

9:22:1

709.बिना चोटी वाले ब्रह्मचारी

Rigved-

6:75:17

Yajurved

16:29

16:59

710.दो लकड़ियों को आपस में रगड़ कर अग्नि को प्रकट करना

Rigved- **A-10:8:20**

7:1:1

711.ग्रहण करने योग्य विद्या

Rigved- **S-990**

7:10:4

8:32:1

10:64:3

Yajurved-

10:5

11:1

11:59-60

15:6

15:9

712.वसु 24 से 40 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करने वाले

Rigved-

7:11:4

7:35:14

8:101:15

Yajurved-

4:21

6:32

11:55

713.सन्यास आश्रम ,सन्यासियों के गुण कर्म

Rigved- **S-648**

7:13:1-3

7:14:2

7:15:2-4

7:42:4-5

अथर्ववेद

9:6:1-27

18:2:35

714.सन्यासी का सेवा सत्कार करना चाहिए

ऋग्वेद-

7:14:1

7:15:2

अथर्ववेद

9:6:1-8

715.लिपि विद्या

ऋग्वेद-

7:15:9

716.विदेशों में जाकर भी धन कमाओ

ऋग्वेद-

7:33:2

717.रूद्र जो 44 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करते हैं

ऋग्वेद-

7:35:14

8:101:15

यजुर्वेद-4:20-21
6:32 , 11:55

718. आदित्य जो 48 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करते हैं

ऋग्वेद-

7:35:14

8:101:15

10:63:13

यजुर्वेद-

4:21

6:32

719.अतिथि गुण कर्म

अथर्ववेद

9:6(1-6):1-END=FULL KAND

15:12:1-3

15:13:1-10

15:14:1-24

15:15:1-9

15:16:1-7

15:17:1-10

15:18:1-5

ऋग्वेद-

7:42:4-5

720.कुत्ता पालन

ऋग्वेद-

7:55:5

721.भाप शुद्ध जल होता है

ऋग्वेद-

7:60:4

722.बुद्धि का उपयोग सदा श्रेष्ठ कर्मों में करें

ऋग्वेद-

7:64:5

7:66:8

7:67:5

8:18:16

9:5:8

723.उपासना काल

ऋग्वेद-

7:63:5

7:65:1

7:66:7

7:75:2

8:13:13

724.आत्म नियंत्रण

ऋग्वेद-	सामवेद–
7:69:1-2	179
7:89:2	341
8:33:8-14	416
8:33:16-18	945
8:34:18	950
8:36:1	
8:69:13	
8:93:10-18	
8:99:1-2	
8:103:1	
10:53:7	
10:58:1-12	

725.यज्ञ कर्ता , वेदवेता ब्रह्मा

ऋग्वेद-

7:70:6

10:71:11

10:107:6

726.सबको शिक्षित करो

ऋग्वेद

7:74:1-2

727.ईश्वर प्राप्ति समाधि में बाधक पाप कर्म

ऋग्वेद-

7:86:4-6

728.मोक्ष पद ब्रह्मानंद सर्वोपरि है, कोई इसके तुल्य नहीं

ऋग्वेद-

8:1:5

729.सूर्य का रंग सफेद है

ऋग्वेद-

7:77:3

8:1:1

अथर्ववेद-
20:135:8

730.किसी भी भाषा ,वाणी में ईश्वर स्तुति, प्रार्थना कर सकते हैं

ऋग्वेद-

8:15:1 , 8:68:10

8:16:1-2 , 8:76:5

731.प्राचीन और नवीन दोनों पथो को विद्वान के सानिध्य में ग्रहण करो

ऋग्वेद-

8:27:10

732.ऋषि गुण, कर्म ,धर्म

ऋग्वेद-

यजुर्वेद-34:49

8:26:10

8:51:3

8:59:6

9:86:4

10:63:4

10:71:1-3

अथर्ववेद-

2:35:2

2:35:4

9:10:19

19:41:1

सामवेद-

1519

733. कर्म योग कर्म योगी गुण कर्म

ऋग्वेद-

7:89:2-4 , 9:34:5
7:92:1 , 9:61:15-17
7:92:4 , 9:68:2-7
7:94:1-12 , 9:72:3
7:104:18 , 9:73:3
8:1:3 , 9:73:7-8
8:1:19 , 9:85:1
8:1:33 , 9:87:8-9
8:2:4 , 9:92:1
8:2:6 , 9:96:1
8:2:8-10 , 9:96:21
8:2:14-15 , 9:100:1
8:2:19-21 , 9:106:2-3
8:2:27 , 9:109:2
8:2:31-39 , 9:29:1-2
8:3:5-6
8:3:9-13
8:3:16-20
8:4:9
8:4:14-15
8:4:18
8:5:7
8:5:10-39
8:45:16
8:61:11
8:64:6
8:70:13
8:97:3
9:9:2-3

सामवेद-

441

734.ज्ञान योग, ज्ञान योगी के गुण-कर्म

ऋग्वेद-

7:94:1-11
7:104:18
8:2:27
8:5:7
8:5:8-21
8:5:23-27
8:5:31-39
8:45:16
8:61:11
8:97:9
9:16:6
9:68:1
9:68:5
9:68:7
9:73:3
9:73:7
9:82:4
10:4:5
10:99:3

735.ईश्वर से प्रार्थना मंत्र

ऋग्वेद-

7:62:2-4
7:65:4
7:66:1-2
7:66:16
7:67:5
7:67:7
7:75:2
7:79:4-5
7:80:3-6
7:86:4-5
7:87:7-8
7:88:2
7:89:1-5
7:104:1-3
7:104:6
7:104:10
7:104:24
8:1:18
8:1:21
8:1:27
8:6:18
8:13:1
8:13:5
8:13:7
8:13:11-12
8:13:14
8:13:16
8:13:21-22
8:13:27-28
8:14:1-2
8:14:6
8:15:4
8:15:6
8:16:11-12
8:17:1-5
8:19:19
8:19:25
8:19:28
8:23:12
8:23:14
8:39:2-3
8:44:11
8:44:23
8:45:36
8:45:40-42
8:48:15
8:60:8
8:60:20
8:61:13-14
8:64:1
8:65:9
8:68:9
8:78:1-4
8:79:8
8:80:5-8
8:81:1
8:97:7-8
8:98:10
8:98:12
9:1:5
9:2:1
9:29:4-6
9:30:3
9:52:1
9:67:21
9:74:6
9:78:5
9:79:1
9:81:4
9:96:4
9:96:16
9:97:6
9:97:27
9:97:28
9:97:43
9:97:44
9:97:53
9:114:4
10:20:1
10:33:3
10:43:11
10:60:6
10:152:3
10:152:4

सामवेद-	अथर्ववेद-	यजुर्वेद
1	1:9:2-4	3:37
6	1:13:1-2	11:7
15	1:20:3	19:41-43
24	4:23:1-4	22:11-12
29	4:24:1-7	22:14
52	5:3:1-2	30:2
76	6:58:3	32:14
100	11:1:21	34:36
274	11:2:19-21	36:8-9
479	20:108:1-3	37:10
611		
653		
1154		
1326		
1593		
1875		

736.ईश्वर स्तुति मंत्र

ऋग्वेद-

7:62:1
7:63:1
7:76:1
7:78:5
7:80:3
8:1:2
8:6:1-2
8:11:1-2
8:12:1-2
8:12:7
8:12:14-15
8:12:31-32
8:13:3
8:13:10
8:13:15
8:13:25-26
8:13:30
8:13:31-32
8:14:7
8:14:9
8:14:10-12
8:14:14
8:15:1-3
8:15:7
8:15:10
8:16:1
8:16:7
8:19:26
8:32:14
8:32:17
8:39:1
8:43:26
8:44:17
8:44:19
8:49:1
8:49:4-8
8:51:5
8:60:3
8:60:10
8:60:12
8:64:3
8:70:1
8:79:3
8:80:3
8:81:4
8:95:8
9:64:1-2
9:97:23-24
10:187:1

यजुर्वेद

30:2-3

सामवेद–

2

5

27

39

61

87

98

107

109

205

224

350

777

941

1170

1462

1843

1844

1845

737.आचार्य गुण कर्म धर्म

सामवेद–

707
747
765
766
841
842
871
872
889
890
891
919-924
999-1000
1011-1012
1061-1066
1131-1134
1169
1233-1234
1237
1332
1413
1463-1464
1544
1561
1563
1744-1745

यजुर्वेद

6:14

अथर्ववेद-

3:20:3
6:110:1-2
6:141:1-2

ऋग्वेद-

8:18:1-2

8:18:5

8:18:12

8:18:16-19

8:19:26

8:19:35

738.मन इंद्रिय

ऋग्वेद-

8:29:1

8:29:8

8:32:24

8:33:8

8:92:10-20

8:99:1-2

10:60:8-10

सामवेद–

1003

1004

यजुर्वेद-

34:1-6

739.मन एक है

यजुर्वेद-

34:1

740.चक्षु इंद्री

ऋग्वेद-

8:29:2

741.कान इंद्री

ऋग्वेद-
8:29:3

742. 33 देवता

ऋग्वेद-

8:28:1

8:30:2

8:35:3

8:39:9

8:57:2

9:92:3

अथर्ववेद-

6:139:1

10:7:13

10:7:23

10:7:27

12:3:16

19:27:10

20:13:14

यजुर्वेद- 20:11

34:47

743.ब्रह्मचर्य पालन, लाभ

ऋग्वेद-

8:33:12-14

8:33:16

8:34:18

8:96:3

8:96:4-5

8:96:13-15

8:96:17

9:16:7

10:86:16

यजुर्वेद-

34:51

अथर्ववेद-

11:5:1

744.ईश्वर उपासना का फल

ऋग्वेद-

8:45:1-13
8:50:1
8:51:9
8:52:1
8:58:1
8:62:5
8:68:13-19
8:74:13-14
8:79:6
8:93:28
8:95:5
8:96:12
8:96:16
8:100:10
8:102:14
8:103:4-5
8:103:11
8:103:13
9:14:4-5
9:16:6
9:20:2
9:36:4
9:42:5

9:51:4
9:67:11-12
9:68:9-10
9:69:2
9:71:4-6
9:72:2-6
9:73:9
9:74:4
9:74:8
9:76:3
9:77:4
9:80:1-2
9:81:1
9:85:7
9:86:1
9:87:7
9:92:1
9:92:5-6
9:96:8
9:96:12
9:96:22
9:97:36
9:98:3

9:99:7
9:100:8
9:103:2
9:106:13
9:114:1-2
10:58:1-12
10:61:25
10:71:1
10:187:3

अथर्ववेद-

1:10:3
10:8:22
10:8:32
11:7:5
15:6:1-26
15:7:3
15:7:5
15:8:3
15:9:3

यजुर्वेद

7:6
19:73

सामवेद–

360

488

540

822

830

846

874

934

1039

1266

1286

1321

1477

1479

1581

1590

1591-1592

745.वेद मंत्रों के तीन अर्थ

ऋग्वेद-
8:60:9

यजुर्वेद
17:92

746.स्वाहा

ऋग्वेद-
8:63:4
10:70:11
अथर्ववेद-
2:16:1-5
2:17:1-7
2:18:1-5
3:26:1-6
5:9:1-6
5:24:1-17
5:26:1-12
6:10:1-3
6:48:1-3
19:22:1-19
19:23:1-29
19:43:1-8
यजुर्वेद-9:14
9:20

747. शुभ कर्मों के बिना ईश्वर उपासना नहीं होती

ऋग्वेद-
8:70:13
9:20:7

748.संवाद ,प्रश्नोत्तर .दान रहीत, मूर्ख व्यक्ति, समाज से दूर रहो

ऋग्वेद-
8:101:4

749. मनुष्य वेदों को लुप्त ना होने दें

ऋग्वेद-
8:101:15

750.ज्वार-भाटा चंद्रमा के कारण

ऋग्वेद-
9:33:1

751. व्यापक-व्याप्य संबंध

ऋग्वेद-
9:89:5
9:108:10
9:109:21
10:82:7
सामवेद–
1670

752. वेद ज्ञान अनंत है

ऋग्वेद-
9:91:3
9:97:9
10:114:8

753. वेद ज्ञान किस तरह प्रकट होता है

ऋग्वेद-
9:97:34
10:71:1-3

754. मनुष्य अपनी इच्छा, बुद्धि अनुसार कोई भी कार्य ,रोजगार कर्म कर सकता है

ऋग्वेद- **सामवेद-**

9:112:3 **706**

755.ईश्वर की उपासना

ऋग्वेद-

1:1:7-8 , 7:104:14

1:18:6 , 8:1:1

1:22:20-21 , 8:6:44

1:23:15

1:24:3

1:24:12

1:36:19

1:50:5-6

1:54:1

3:32:7-9

3:53:12

3:59:8

7:5:7

7:63:5

सामवेद-

362

756. शरीर कर्म-फल भोगने के लिए भोग साधन

ऋग्वेद-

1:2:6

1:58:1

10:16:8

10:27:9

10:135:1

सामवेद-

1259

757.योग उपासना

ऋग्वेद-

1:5:3	7:5:1	8:19:17	9:9:4	9:63:20
1:6:1	7:66:15	8:25:22	9:11:6	9:65:16
1:10:8-9	7:67:8	8:33:8-16	9:12:2	9:65:25
1:18:6	7:78:2	8:43:27	9:13:7	9:66:20
1:23:4	7:86:2-7	8:44:11	9:14:5	9:66:29
1:38:5	7:88:3	8:58:1	9:14:7	9:71:3-4
1:65:1	7:90:4	8:69:13-15	9:15:3	9:71:6
1:130:3	7:100:1	8:69:18	9:15:7-8	9:72:1
1:176:6	8:1:17	8:95:4-5	9:24:5	9:72:6
2:25:2	8:6:10	8:96:16	9:25:2	9:73:8
3:59:8	8:6:12	8:100:5	9:26:1	9:76:4
4:24:4	8:6:18	8:100:10	9:27:1-2	9:81:1
4:26:1	8:13:21	8:101:9	9:28:1-2	9:85:5
4:33:2	8:14:8	8:102:22	9:51:1	9:86:17
5:81:1	8:19:14	9:3:2	9:63:6	9:86:31

9:86:47

9:91:3

9:92:3-4

9:93:1

9:95:1

9:96:8

9:96:22

9:97:57

9:58:6

9:100:7

9:104:2

9:107:2

9:107:9-12

9:107:22

9:109:12

9:109:16

9:109:18

9:109:20-21

9:113:6

10:13:3

10:15:14

10:56:1

10:71:1

10:86:1-23

यजुर्वेद

7:4-9

7:11-15

7:39-40

11:1-6

19:91

37:2

40:6-7

सामवेद-

16
67
92
94
101
152
163
367
379
451
461
472
534
552

570
647
701-702
742
934
945
981
1084-1087
1266
1469
1569
1577
1681
1854

1869

अथर्ववेद-

8:9:3
8:9:7
9:10:1-2
9:10:25
10:2:28-29
10:2:31-32
10:8:43
10:10:2-3

758. वायुयान विद्या

ऋग्वेद-

1:5:3
1:6:2
1:12:1
1:13:4
1:14:12
1:20:3
1:22:2
1:22:14
1:23:2
1:30:19
1:31:3
1:34:1-5
1:34:7
1:34:9-12
1:37:14

1:38:12
1:46:3
1:52:1
1:56:1
1:74:7
1:85:5-7
1:87:2
1:87:6
1:88:1-2
1:94:10
1:104:1
1:108:4
1:111:1
1:112:2
1:118:1-2

1:162:2
1:183:1
2:18:1
2:18:3-7
2:40:3
8:22:2

अथर्ववेद-

20:24:9

यजुर्वेद

10:19
11:13

759. अग्निहोत्र हवन यज्ञ

ऋग्वेद-

1:6:8	1:74:4	3:19:1	8:6:19
1:12:3-5	1:84:18	3:28:1	8:19:5
1:13:5	1:92:5	3:28:4-5	8:19:18
1:13:2-3	1:110:6	3:59:5	8:19:22
1:15:11	1:134:6	4:12:1	8:19:23
1:18:8	1:142:11	4:50:5	8:44:1
1:24:11	2:3:10	4:58:8	8:44:5
1:25:17	3:2:5-6	5:5:1	10:11:1
1:31:5	3:2:9	6:69:6	10:12:1
1:36:11	3:4:5	7:67:7	10:14:13
1:36:13	3:4:9-10	7:70:1-2	10:14:14
1:44:10-11	3:17:2	7:73:1	10:14:15
1:44:3	3:18:3	7:98:1	10:15:12

10:17:10	**सामवेद-**
10:30:25	**46**
10:46:7	**70**
10:69:2	**660**
10:70:5	**661**
10:87:1	**1023**
10:110:10-11	**1513**
10:118:1-9	**1514**
10:122:5-7	**1566**
10:132:1-3	**1747**
10:150:2	

यजुर्वेद-

1:2-3

1:9

1:19

2:1-2

2:6-9

3:1-4

17:55-57

18:51

18:63

21:29-40

27:21

37:9

38:17

अथर्ववेद-

18:4:15-27

19:64:1-4

760. एक ईश्वर की उपासना

ऋग्वेद-

1:7:10

1:13:10

1:44:5

1:52:14

1:96:2

1:96:7-8

2:13:3

2:13:6

7:88:1

761. चार वर्णों का विभाग

ऋग्वेद-

1:8:6

1:33:3

1:38:13

1:122:15

10:90:11-12

762. आठ वसु

ऋग्वेद-

1:9:9

1:96:6

1:143:6

1:164:27

1:7:9

3:20:5

763.बिजली

ऋग्वेद-

1:12:2

1:14:8

1:166:6

3:29:1

3:39:9

3:46:4

4:8:6

10:93:8

10:106:1-11

यजुर्वेद-

29:4

764.सोमरस

ऋग्वेद-

1:16:1
1:16:3
1:16:5-8
1:18:4-5
1:21:3
1:23:4
1:28:6
1:28:9
1:43:9
1:44:9
1:45:9
1:47:1
1:54:8
1:55:2
1:56:1
1:84:1
1:91:8-12
1:108:11-13,
1:130:2
1:134:6
1:135:6
1:137:3
1:177:3
2:11:11
2:14:1-2
2:16:4
2:36:1-6
2:37:1-6
3:32:1
3:32:5
3:36:6-8
3:40:4-7
3:47:2

3:51:10-11 ,

4:44:4

5:29:5

5:40:1

5:51:3

6:43:1

6:47:3-4

6:68:10-11

6:69:2

6:69:7

7:90:2

8:2:12

8:91:2-4

8:91:6-7

10:85:2-3

सामवेद-

535

538

821

765.कर्मफल व्यवस्था

ऋग्वेद-

1:20:1	1:97:1	10:9:8-9
1:22:7	3:1:21	10:16:3
1:23:22	3:20:3	10:100:7
1:23:23	7:18:10	10:135:1-2
1:24:9	7:104:1-5,	10:177:3
1:24:14	8:14:14	
1:25:16	8:41:10	
1:30:16	8:61:18	
1:97:1	9:86:43	

सामवेद-

90

1256

1257

अथर्ववेद-

4:16:6

यजुर्वेद-

2:28

40:4

766. तकनीकी का विकास करो

ऋग्वेद-

1:20:2
1:20:6
1:22:1
1:23:3
1:25:7
1:26:10
1:30:1-4
1:30:17-19,
1:34:1-9
1:37:1
1:37:9
1:46:3
1:46:8
1:51:13
1:52:1

1:61:16
1:64:7
1:65:4-5
1:92:16-17
1:94:1-2
1:94:10-11
1:100:16
1:104:1
1:108:4-5
1:134:3
1:166:4
3:14:1
3:14:3
3:22:1
3:23:1

3:35:2-3
3:58:3
5:30:1-2

767.प्राणायाम

ऋग्वेद-	अथर्ववेद-
1:23:4	6:132:5
1:23:6	11:3:54-55
1:23:21	11:4:11
1:75:5	**सामवेद-**
8:100:1	401
9:91:1	1469
9:92:3	1736

768.धर्म(लक्षण)

ऋग्वेद-

1:25:1-4
1:25:6
1:25:8
1:25:12
1:29:5
1:63:5
1:65:2
1:80:16
1:116:14
1:140:10
1:151:3
2:1:2
3:58:7
4:6:4
4:9:6
4:23:9-11
4:32:24
4:43:7
4:55:2
4:56:2
5:1:8
5:2:8
5:2:11
5:3:11
5:8:1
5:15:2
5:28:5
5:29:1
5:43:7
5:51:2
5:52:3
5:63:1
5:63:7
5:64:3
5:72:2
5:74:1
5:75:7-8,
6:2:3
6:3:7
6:10:1
6:14:3
6:16:30
6:19:3
6:47:16
6:54:7
6:67:5
7:2:9
7:16:5
7:34:9
7:39:4
7:56:12
8:11:2
8:101:7
9:1:7
9:68:7
9:97:37
10:56:3

सामवेद-

176

अथर्ववेद-

2:35:3

3:25:5

11:1:16

यजुर्वेद-

38:14

769.ज्योतिष

ऋग्वेद-

1:25:8

1:164:12-14

सामवेद-

457

अथर्ववेद-

19:7:1-5

19:8:1

770.पहिया विद्या

ऋग्वेद-

1:30:14

1:121:13

4:3:10

771. आकाश तत्व का गुण शब्द है

ऋग्वेद-

1:37:9

अथर्ववेद-

5:10:8

772.मृत्यु का समय निश्चित नहीं होता

ऋग्वेद-		यजुर्वेद-
1:38:5	10:18:6	5:27
1:53:11	10:37:14	11:46
1:91:6	10:59:1	18:49
1:93:3	10:85:42	18:54
7:77:5	10:100:5	20:2
7:90:6	10:107:2	23:32
8:18:22	10:161:2-5	34:47
8:44:30	10:186:1	35:15
8:59:7		
10:18:4		

अथर्ववेद-

2:13:3-4

3:5:4

3:11:2-4

3:31:8-9

5:30:17

6:110:2

7:53:2

8:2:5

8:2:8-9

8:7:22

10:3:16

11:9:26

11:10:1

12:2:29

19:27:8

19:28:1

19:67:1-8

19:69:1-4

19:70:1

20:96:8-9

सामवेद-

43

184

1840

773. अस्त्र-शस्त्र विद्या

ऋग्वेद-	**यजुर्वेद-**
1:39:2	**16:9**
1:39:10	
1:52:5	
1:52:8	
1:53:4	
1:61:13	
1:80:12	
1:86:9	
4:4:2	
7:82:3	
8:2:42	
8:7:25	
10:103:7	
10:103:12	

774. मोक्ष किसको मिलता है

ऋग्वेद-		अथर्ववेद-
1:43:4	3:60:3	9:10:1
1:52:9	4:23:9	
1:68:2	4:35:3	सामवेद
1:72:2	4:40:5	589
1:72:4	7:59:12	1267
1:110:4	10:53:10	1269
1:116:25	यजुर्वेद-	1303
1:125:6	3:60	
1:140:5	40:6	
1:164:23	40:11	
1:190:7		

775. अहिंसित यज्ञ

ऋग्वेद-	सामवेद	अथर्ववेद-
1:44:2-3	17	19:42:4
3:2:7		
3:24:2		
3:27:2		
3:27:4		
4:37:1		
5:17:1		
5:26:3		
5:49:4		
6:10:1		
7:2:4		
9:86:7		

776. विद्वान-अतिथि का सेवा सत्कार,,, किस प्रकार करना चाहिए

ऋग्वेद-

1:44:4
1:44:6
1:51:1
1:61:1
1:84:5
1:87:1
1:128:5
1:128:7
1:138:1
3:2:8
3:26:9
3:27:5-6
3:27:9
3:27:13
3:28:3
3:30:11
3:31:15-17
3:37:4
3:46:1
3:51:4
3:62:14
3:62:17
4:9:4
4:16:4
4:24:3
4:44:3
5:1:8-9
5:1:11
5:8:2
5:10:1
5:13:1
5:13:4
5:13:6
5:17:2
5:18:1
5:18:4
5:22:1
5:22:4
5:25:3
5:26:1
5:28:2
5:31:11-12
5:41:5
5:41:8-9
5:42:4
5:44:13
5:50:1-3
5:52:2

5:52:5
5:52:16
5:54:1-2
5:57:1
5:59:5
5:61:4
5:67:4
5:72:1
6:2:7
6:13:4
6:15:4
6:21:1
6:21:6
6:21:11
6:45:5
6:49:6
6:51:9-10
6:51:12
6:52:6
6:57:3

6:61:14
6:62:10
6:63:4
6:67:3-5
6:67:8
6:67:11
6:68:2
6:67:4
6:75:14
7:2:3
7:8:4
7:9:1
7:9:3
7:9:5
7:14:1
7:18:6
7:18:12
7:21:7
7:23:1
7:31:9

7:33:5
7:34:10
7:34:14
7:36:6
7:42:4
7:43:1
7:44:2
7:58:1-2
7:58:5
7:60:5
7:61:2
8:41:1

अथर्ववेद-

9:6(2):1-13
9:6(3):1-9
9:6(4):1-10
9:6(5):1-10
9:6(6):1-14

यजुर्वेद-

15:10
15:47
16:19-20
16:22
16:24-46
19:14
26:4-5
26:10
27:40-41
33:18
37:11

777. नाव ,पनडुब्बी विद्या

ऋग्वेद-

1:46:7-8
1:182:5-6
10:101:2

यजुर्वेद-

21:6-8

778. वैद्य के गुण कर्म

ऋग्वेद-	अथर्ववेद-	यजुर्वेद-
1:50:11-12	1:3:6-9	11:38
1:91:1-16	1:12:3	12:80-81
1:127:10	1:17:1-4	12:87
6:74:1-4	2:33:1-7	12:93-97
10:16:6	6:14:1-2	16:4-5
10:39:1-11	9:8:1-22	19:1
10:60:12		20:66
10:161:1-5		
10:162:1-6		
10:163:1-6		

779. कुत्ते को शिक्षा

ऋग्वेद- 1:53:8

यजुर्वेद- 16:27

780. ऑर्गेनिक फार्मिंग

यजुर्वेद- 12:69-70

781. 10 दिशाएं

ऋग्वेद-1:62:4

5:47:4

782.मानव आयु

ऋग्वेद-	यजुर्वेद-	अथर्ववेद-	सामवेद
1:64:14	3:62	3:11:2-4	454
1:73:9	19:37	3:12:6	
1:89:9		4:10:7	
2:27:10		12:2:28	
2:33:2		18:4:70	
3:36:10		19:12:1	
5:54:15		19:67:1-8	
6:2:5			
6:4:8			
6:10:7			
6:13:6			
6:17:15			
6:24:10			
7:66:16			
8:79:6			
9:58:4			
10:18:4			
10:85:39			

783. औरतों का वर्ण धारण

ऋग्वेद-

1:71:3 (वैश्य)

5:30:9 (क्षत्रिय)

1:82:5 (क्षत्रिय)

1:123:5 (क्षत्रिय)

6:64:3 (क्षत्रिय)

6:75:13 (क्षत्रिय)

6:75:15 (क्षत्रिय)

8:33:19 (ब्राह्मण)

784. ब्रह्मचर्य आश्रम

ऋग्वेद- **यजुर्वेद-**

1:83:4 **13:1**

1:164:43

1:165:2

3:15:4

4:15:7-10

4:41:9

5:2:2

7:34:4

8:33:12-13

अथर्ववेद-

6:133:1-5

785.धरती , सूर्य के साथ अनुसरण ,अनु भ्रमण, गमन ,गति करती है

ऋग्वेद-

1:164:9

1:164:17

10:147:1

786. हाथी शिक्षा

ऋग्वेद-

1:84:17

787. कुआं विद्या

ऋग्वेद-

1:85:11

4:50:3

10:101:5-7

10:101:11

788. वात पित्त कफ

ऋग्वेद-

1:85:12

789.गुरुकुल परीक्षा

ऋग्वेद-

1:87:5

1:121:6-7

1:125:1

अथर्ववेद-

10:2:5

790.तार विद्या विद्युत

ऋग्वेद-

1:88:1

791.माली विद्या

ऋग्वेद-

1:88:3

792.पृथ्वी पर दिन-रात किस प्रकार होते हैं

ऋग्वेद-

1:92:1 , 1:124:5

1:95:1 , 4:3:10

1:123:4 , 6:47:21

793 .उषाकाल की धूप औषधि होती है

ऋग्वेद-

1:92:3

1:124:10

794. कृषि,खेती

ऋग्वेद-

1:97:2

1:117:5

1:117:8

1:140:4

4:57:1-8

10:101:3-7

अथर्ववेद-

3:17:1-9

12:3:31

यजुर्वेद-

12:67-71

19:6

795. माता-पिता , वृद्धों की सेवा करो

ऋग्वेद-

1:110:8

4:33:3

4:36:3

5:77:2

6:20:11

7:7:3

4:6:7

8:19:27

8:31:9

यजुर्वेद-

2:32

19:1

अथर्ववेद-

8:10:3-4

796. आकाश अनंत है

ऋग्वेद-

1:113:3 **3:56:2**

797. प्राण

ऋग्वेद-

1:117:3

3:55:18

6:11:4

9:71:5

9:85:7

798. तार विद्या टेलीफोन

ऋग्वेद-

1:117:9

1:119:10

1:134:3

1:178:1-3

799. वस्त्र बुनाई

ऋग्वेद-

1:122:2

10:26:6

अथर्ववेद-

14:1:45

800. सुखी जीवन की कुंजी क्या है

ऋग्वेद-

1:125:1-7	3:62:13	5:8:3
1:130:3-6	4:7:4-5	5:11:4
1:136:2	4:15:3	5:14:2
1:140:6-7	4:21:5	5:58:8
1:141:6	4:21:7	6:16:26
1:141:9	4:23:9-10	6:23:10
1:142:3	4:25:5	6:50:8
1:149:5	4:26:3	6:52:14
1:159:4	4:27:4-5	6:58:4
1:162:2-3	4:33:4	6:60:1
2:11:13	4:35:1-9	6:62:6
3:1:5-6	4:37:3	6:64:1
3:3:11	4:44:1	6:66:2-4
3:7:7	4:44:4	6:66:6
3:19:1-5	5:1:1	6:67:6
3:31:8	5:1:7	7:7:3
3:57:6	5:5:2	7:32:2

7:32:5

7:35:2-13

7:48:2

7:56:3

7:60:11

7:90:5

8:31:1-8

8:34:1

10:32:2

10:99:3

यजुर्वेद-

3:47

8:59

14:18

19:19

19:30

22:20

अथर्ववेद-

3:30:2-3

सामवेद

1874

801. युद्ध में पापियों को मारने के लिए खंदक व गड्ढे बनाना

ऋग्वेद- 1:133:3

802. द्विज

ऋग्वेद-

1:149:5

1:6:8

6:50:2

7:33:12

सामवेद-

1264-1265

1333-1334

1501

1775-1776

803. संतान को माता-पिता की सेवा करनी चाहिए

ऋग्वेद-

1:59:3

3:3:11

4:6:7

8:19:27

8:31:9

अथर्ववेद-

3:30:2

804.छंद विद्या

ऋग्वेद-

1:164:23-25

2:43:1

10:130:3-7

अथर्ववेद-

19:21:1

सामवेद-

1829-1830

यजुर्वेद-

4:24

9:31-34

805.वाणी के चार प्रकार

ऋग्वेद-

1:164:45

10:13:3

10:114:3

अथर्ववेद-

9:10:27

806. खेल-कूद

ऋग्वेद-

1:66:2

यजुर्वेद-

18:5

807. रॉकेट विद्या

ऋग्वेद-

1:166:5

808.सोनिक बूम (sonic boom)

ऋग्वेद-

1:166:5

809.गृहस्थ ,आभूषण पहन सकता है

ऋग्वेद-1:166:10 , 5:57:5

810. अग्नि,विद्युत से चलने वाले वाहन,विमान

ऋग्वेद-

1:166:6

2:16:3

3:14:1

3:58:4

4:36:1

5:10:5

5:31:9

5:36:6

5:56:6

5:62:4

6:16:43

6:59:5

6:60:12

6:62:3

6:63:7

811.आचार्य,अध्यापक के गुण कर्म

ऋग्वेद-

2:1:11-15

2:6:1

2:13:11

2:24:1

2:27:4

2:34:12

3:12:1-2

3:20:1

3:53:8

4:1:2

4:14:1

4:15:8-10

4:41:1

4:42:10

4:43:5

4:44:7

5:27:6

5:41:3

5:43:17

5:78:3

6:68:1

6:72:1-5

7:17:4

7:22:5

7:29:3

7:33:13

7:50:1

7:60:12

7:61:3

7:61:5-6

7:67:1

7:74:1

10:143:1-6

सामवेद-

707

747

765

766

841-842

871-872

889-891

919-922

924

यजुर्वेद-

6:14

11:37

12:9

12:59

16:2

33:62

34:29

812. धरती गमनशील है

ऋग्वेद-

2:12:2

2:15:5

2:38:4

3:5:5

1:37:8

यजुर्वेद-

3:6

अथर्ववेद-

12:1:63

20:34:3

813. छह ऋतु

ऋग्वेद-

2:13:9

यजुर्वेद-

9:32

21:23-28

24:11

24:20

अथर्ववेद-

6:55:2

12:1:36

सामवेद-

616

814. गोत्र

ऋग्वेद- 2:23:18

815. योग विद्या से ज्ञान लाभ

ऋग्वेद-

2:52:2

9:26:1

9:109:16

9:114:1

9:114:2

816. सूर्य तारे(सूर्य) वसुओं से देखने पर पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण दिशाओं में आते जाते दिखते हैं वास्तव में यह झूठ है

ऋग्वेद- 2:27:11

817. कर्म स्वतंत्रता के कारण दूसरे के कर्मों का भोग

ऋग्वेद- 2:28:9

818. मानसिक विकारों से मुक्ति हेतु, वैद्य

ऋग्वेद- 2:33:2

अथर्ववेद-

6:111:1-4

819.सामवेद गायन

ऋग्वेद-

2:43:2

सामवेद-

369

388

820.शिक्षित मानव के गुण कर्म धर्म

ऋग्वेद-

3:1:8

6:54:1-2

7:59:11

8:1-15

821.कर्म वाचनिक भी होते हैं

ऋग्वेद- 3:1:23

822.घी, त्वचा के लिए लाभदायक

ऋग्वेद- 3:5:6

823.कर्म बुद्धि युक्त हो

ऋग्वेद- 3:8:5

824.औषधि,वनों की रक्षा करो

ऋग्वेद-

3:8:6 , 5:5:10

3:51:5

825.उषाकाल, सूर्योदय के समय उठना चाहिए

ऋग्वेद-

3:15:2

5:77:2

7:75:2

7:76:6

826. किसको गुरु(मार्गदर्शक) बनाएं

ऋग्वेद-

3:16:5

3:31:21

6:54:1

827.उत्तम हवन-कर्ता कौन?

ऋग्वेद-

3:19:1-2

828.वसु,रुद्र, आदित्य देव

ऋग्वेद-

3:20:5

6:62:8

10:48:11

10:66:3

10:150:1

यजुर्वेद-

2:16

अथर्ववेद-

19:9:11

829. किसका प्रमाण मान्य है

ऋग्वेद- 3:24:4

830. सूर्य में अग्नि विद्युत(plasma) रूप है

ऋग्वेद-

3:25:3

3:39:3

सामवेद-

1831

831. दैहिक ,वाचनिक ,मानसिक कर्म होते हैं

अथर्ववेद-

12:3:42

19:27:10

ऋग्वेद-

3:26:8

832. सूर्य गमनशील है

ऋग्वेद-

3:26:7

4:13:2

7:77:3

8:1:11

यजुर्वेद-

17:59

833.अग्निहोत्र मंत्र-अर्थ के साथ करना चाहिए

ऋग्वेद-

3:28:1

7:73:3

8:19:5

8:44:2

10:20:6

10:105:8

10:118:9

यजुर्वेद-

18:63

834. अग्निहोत्र का समय

ऋग्वेद-

3:28:1

3:28:4-5

7:67:2

7:72:4

7:81:6

10:172:2-3

835.गुरु कौन हो

ऋग्वेद-

3:31:21

6:54:1

सामवेद-

672-675

679

705-706

710

720

836.विद्वानों की निंदा,हिंसा ना करो

ऋग्वेद-

3:41:6

4:50:2

7:60:8

7:76:5

यजुर्वेद-

12:90

20:14

अथर्ववेद-

5:19:1-2

837. शत्रु = दुष्ट ,अन्यायकारी

ऋग्वेद-

3:46:2

3:47:5

5:40:4

6:19:8

7:93:1

838. शहद

यजुर्वेद-

19:13

19:21

20:45

ऋग्वेद-

3:47:1

839.बुद्धि (महत-तत्व) सर्वव्यापक है

ऋग्वेद-3:56:2

840.ईश्वर आज्ञाअनुसार चलने वाला उपासक व्यक्ति अपराजित होता है सुखी रहता है

ऋग्वेद-

3:59:2

8:31:15-18

841.जगत ,जीवन के रहस्य हेतु विद्वानों से प्रश्न-उत्तर

ऋग्वेद-

4:5:12-14

4:23:1-3

4:23:4

4:25:1-3

4:43:1-2

4:43:4

4:43:6

4:44:1-4

5:12:4

5:74:2

6:47:15

10:22:1

10:31:7-8

10:81:4

10:88:18

यजुर्वेद-

17:18-20

23:9-12

23:47-62

अथर्ववेद-

10:2:1-5

10:2:8-10

10:2:14

10:2:16

10:2:20-21

सामवेद-

34

368

842. समाज में उत्तम ,विद्वानों ,बुद्धिमान व्यक्तियों की प्रतिष्ठा करो

ऋग्वेद-

4:6:1

6:58:2

7:32:1

8:102:18

अथर्ववेद-

7:97:4

यजुर्वेद-17:69

843.बिजली प्रकाश के माध्यम से अंतरिक्ष में संदेश भेजना

ऋग्वेद-

4:7:8

4:7:11

4:8:4

5:26:6

844.क्षत्रिय गुण,कर्म,धर्म

ऋग्वेद-

4:12:3
4:42:1
5:69:1
6:75:1-8
7:38:8
7:46:1
7:56:13
7:56:22
7:69:4
7:73:4
7:82:3
7:82:5-6
7:83:1-2
7:84:1-2
7:98:4
7:104:18
8:2:20
8:2:24
8:3:7
8:3:17
8:3:19
8:4:5
8:5:7
8:7:1-18
8:7:22-25
8:7:31-32
8:7:34-36
8:20:1-26
8:25:1-9
8:25:16
8:38:1-8
8:40:1-2
8:40:7
8:67:1
9:3:4
9:31:1
9:63:26
9:63:28-29
9:99:1
9:111:1
9:111:3
10:28:8-11

10:83:1-7

10:84:1-7

10:90:11-12

10:103:1-13

10:133:1-5

सामवेद-

397

401

404

428

625

847-849

989

1211

1465-1467

1560

1873

यजुर्वेद-

6:18-19

11:34

13:13

16:13

16:15

16:48

17:34

17:47

17:65

29:22

29:39

29:44-46

29:51-52

30:10-11

अथर्ववेद-

1:29:5

3:2:6

3:19:1-8

4:31:1-2

5:8:4-5

5:14:9

5:20:1-12

7:77:1-3

8:5:1-8

9:7:9

11:1:2

11:1:6

11:9:2

13:1:29

19:6:5-6

19:25:1

20:87:4

20:89:5-7

20:89:9

20:97:2

845. ब्राह्मण गुणधर्म

ऋग्वेद-	अथर्ववेद-	सामवेद-	यजुर्वेद-
5:29:3	9:7:9	406	31:10-11
5:31:4	19:6:5-6	847-849	
7:13:3		1465	
7:29:2		1466	
7:42:1		1467	
7:93:3-4			
7:93:6			
7:94:1-12			
8:25:1-9			
8:25:18-20			
8:38:1-8			
8:67:2			
9:113:5-6			
10:71:8			
10:90:11-12			

846. शुद्र गुणधर्म

ऋग्वेद-

10:90:11-12

अथर्ववेद-

19:6:5-6

यजुर्वेद-

31:1-11

847. वैश्य गुण कर्म धर्म

ऋग्वेद-

4:48:1

5:45:6

8:67:2

10:90:11-12

यजुर्वेद-

3:49

3:28

15:30

31:10-11

अथर्ववेद-

3:15:1-2

3:15:4-8

848.माता-पिता को बचपन में ही बच्चों को संस्कार शिक्षा व पाप कर्मों का ज्ञान देना चाहिए

ऋग्वेद-

4:12:5

4:15:6

4:33:2

4:33:4

6:61:4

यजुर्वेद-

9:29

11:44

11:58

23:41

849. सौरमंडल शिक्षा

ऋग्वेद-

4:13:5

8:1:11

10:136:1

850. सनातन धर्म

ऋग्वेद-	यजुर्वेद-	सामवेद-
4:18:1	26:23	1597
4:19:10		
4:56:6		
8:52:9		
10:31:6		

851. पहाड़ पर्वत निर्माण

ऋग्वेद-

4:19:9

852.नदियों के नामों का वैदिक अर्थ

ऋग्वेद-10:75:1-9

853.विभिन्न नस्लो व शारीरिक लक्षणों से युक्त मनुष्यो से समान बर्ताव करो

यजुर्वेद-

30:21-22

854. अच्छा देखो ,अच्छा सुनो

यजुर्वेद- 25:21

855. मनुष्य शरीर के विभिन्न अंगों का कार्य वर्णन

यजुर्वेद- 25:1-9

856.विद्वान मनुष्य के गुण-कर्म

ऋग्वेद-

1:67:1-5
1:68:4-5
1:69:1-3
1:69:5
1:70:6
1:71:5
1:73:1-7
1:74:9
1:75:1-2
1:76:5
1:79:12
1:90:1-4
1:96:1
1:128:4

1:129:6
1:158:5
2:4:8-9
2:5:4
2:7:1-3
2:16:7
2:16:9
2:17:3
2:26:4
2:29:2-3
2:26:6
2:34:1
2:35:15
2:41:13

3:1:19-20
3:1:22-23
3:5:1-2
3:5:6
3:14:2
3:14:5
3:15:1
3:17:5
3:18:1-2
3:19:5
3:20:2
3:21:3
3:24:4
3:31:21

3:43:1

3:47:5

4:1:3

4:2:7-11

4:3:9

4:3:12

4:11:4-5

4:16:3

4:36:5-9

4:37:2

5:7:8

5:29:12

5:39:3

5:43:1

5:43:3

5:43:6

5:43:9-10

5:43:13

5:43:15

5:44:8-9

5:59:5

5:66:1

6:2:2-5

6:28:6

6:48:7

6:48:14

6:49:8

6:51:13

6:54:1-2

6:58:2-3

6:66:3-4

7:9:5

7:15:7

7:28:5

7:31:3

7:31:11-12

7:33:8-12

7:34:23

7:39:3-4

7:40:1

7:40:3

7:44:3-5

7:45:1

7:45:4

7:51:2-3

7:56:5

7:57:5-7

7:59:7

7:59:9

7:60:6-8

7:62:3

7:62:6

7:66:11

7:70:3-5

7:71:5

7:74:2

8:5:23

8:18:10-11

8:32:27

8:101:7

9:97:1-4

9:97:7

10:63:1

10:65:4

10:137:1

10:175:1-2

सामवेद-

177

1163-1165

अथर्ववेद-

2:6:1-2
5:27:9
5:27:12
6:112:1-3
10:5:1-50
12:3:37
18:3:15-16
18:3:19-20
18:4:1-2
19:41:1
19:63:1
20:16:1-12
20:18:3
20:88:1-6
20:124:6
20:135:10

यजुर्वेद-

8:14
9:11-12
12:1
12:6-7
12:16
12:31-32
12:23
13:43
14:10
15:23
15:48
17:72
17:85
19:39-40
21:10-11
22:1
22:3
27:4-5
27:40
29:25
29:53
37:7-8
37:40

857. भूत, शब्दार्थ-संबंध अनादि है

ऋग्वेद-

3:1:23

858. व्यर्थ बकवास मत करो

यजुर्वेद-
23:25

859. हर बुराई को अपने से दूर रखें

**यजुर्वेद-
35:11**

विषय-सूची

28. ईश्वर आत्मा का हित चाहता है
29. ईश्वर ने यह पृथ्वी आर्यों को दी है
30. ईश्वर प्रकृति में अनादि काल से सूक्ष्म रूप से व्याप्त है
31. ईश्वर, जगत की उपमा से स्वयं को, मनुष्य के समक्ष प्रकाशित (वर्णित) करता है
32.ईश्वर अनंत ∞ विद्या युक्त सत्ता है
33.ईश्वर अखंड है
34. ईश्वर अहिंसक है
35. ईश्वर पीड़ा से रहित है
36. ईश्वर पवित्र है
37. ईश्वर अजर है
38. ईश्वर अजन्मा है
39. ईश्वर नित्य है
40. ईश्वर निर्विकार है
41. ईश्वर अनंत शक्तिशाली है
42. ईश्वर सर्वबल कारक है
43 .ईश्वर के तुल्य कुछ नहीं, ना हुआ, ना है ,ना होगा
44.कुछ भी ईश्वर से महान नहीं है
45. ईश्वर सर्वद्रष्टा है
46.ईश्वर जन्म-मरण से रहित है
47. ईश्वर सर्व ऐश्वर्यवान है
48. ईश्वर अमर है
49. ईश्वर निराकार है
50. ईश्वर अहिंसक कर्मों की प्रेरणा करता है
51. **ईश्वर इंद्रियातीत है**
52. ईश्वर पूर्ण है
53. ईश्वर सर्व प्रेरक है
54. ईश्वर अपने कार्य हेतु किसी की सहायता नहीं लेता
55. ईश्वर अनंत कर्मा है
56. ईश्वर दुष्टों के पाप क्षमा नहीं करता
57. नास्तिक संशय निवारण
    ईश्वर है या नहीं?
58. ईश्वर अस्त्र-शस्त्र द्वारा अभेद्य है
59. ईश्वर ही मुक्ति स्थान है
60. ईश्वर स्वयंभू है

61. ईश्वर त्रिकालज्ञ है
62.ईश्वर नित्य नूतन है
63. ईश्वर की शक्ति, चेतन स्वरूप है
64. ईश्वर एकरस व्यापक है
65. ईश्वर सर्वश्रेष्ठ है
66. ईश्वर सत्यस्वरूप है
67. ईश्वर में अविद्या दोष नहीं है
68.ईश्वर समस्त पदार्थों से सूक्ष्म है
69.ईश्वर, आत्मा से भिन्न है
70. ईश्वर ,प्रकृति से भिन्न है
71. ईश्वर को भौतिक पदार्थों से पाया नहीं जा सकता
72. ईश्वर निष्काम है
73.ईश्वर सृष्टि का निमित्त कारण है
74.ईश्वर के हाथ पैर आदि नहीं है
75.ईश्वर किसी स्थान विशेष में, पर नहीं रहता हैं
76. ईश्वर कर्मफल दाता है
77.ईश्वर जीव के हर गुप्त कर्म को जानता व देखता है
78 .ईश्वर से कोई कहीं भी जाकर छिप नहीं सकता
79.ईश्वर कहां है?
80. ईश्वर हर वस्तु के अंदर व्याप्त होकर सृष्टि को नियम पूर्वक चला रहा है
81. ईश्वर के गुण (सामर्थ्य) कभी घटते नहीं हैं
82. ईश्वर सत्यधर्मी है
83. ईश्वर अपरिमित (परिमाण रहित) है
84. ईश्वर निष्पाप है
85. ईश्वर से आत्मा की देशकाल से नहीं, बल्कि ज्ञान की दूरी है
86.ईश्वर विद्वानों के निकट है अविद्वानों से दूर है
87. ईश्वर अदृश्यमान है
88. ईश्वर सनातन है
89. ईश्वर में असंख्य धन (ज्ञान,सामर्थ्य,गुण) है
90. ईश्वर कारण रहित है
91. ईश्वर समस्त लोको को नियम में ठहरा कर चलाता रहता है
93. ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार है, का तर्क से वर्णन
94. ईश्वर आलस्य निद्रा से रहित है
95. ईश्वर सहनशील है

96. ईश्वर सर्वेश्वर है
97. ईश्वर की धर्म व्यवस्था निश्चल है, सबके लिए समान है
98. ईश्वर के माता–पिता नहीं है
99 ईश्वर कर्मानुसार फल देता है
100. ईश्वर राजाओं का राजा है
101. ईश्वर ,हर जीव, प्रकृति तत्व के भीतर (मध्य) में विराजमान है
102. .ईश्वर, सूक्ष्म से सूक्ष्म और महान से महान है
103.ईश्वर हर वस्तु के अंदर व बाहर है
104. ईश्वर आकाश की तरह व्यापक है
105.ईश्वर पापियों को कभी प्राप्त नहीं होता है
106. ईश्वर साकार (शरीर धारी) नहीं है
107. ईश्वर अवतार नहीं लेता
108: ईश्वर के विभिन्न नाम उसके गुणवाच्य हैं
109: ईश्वर किसी वस्तु के ऊपर, नीचे या तिरछी दिशा में नहीं होता
110. ईश्वर हर जगह ओतप्रोत है
111.ईश्वर की कोई प्रतिमा (परिधि) नहीं है
112. ईश्वर षोडशी (16 कला वाला) है
113. ईश्वर सबसे बड़ा है
114. ईश्वर तत्व को चलायमान मानने वाले मूर्ख है
115. ईश्वर अभय है
116. ईश्वर अमर है
117. आत्मा चेतन है
118. आत्मा अल्प सामर्थ्यवान है
119.आत्मा, अनंत ज्ञान सामर्थ्य युक्त कभी नहीं हो सकता
120. ..जीवात्मा, मृत्यु के पश्चात कहां रहता है
121. आत्मा अविनाशी है
122. आत्मा कर्मफल भोगता है
123. आत्मा अजर है
124. आत्मा में भय गुण है
125. आत्मा अनादि है
126 आत्मा सनातन है
127. आत्मा अजन्मा है
128. आत्मा को वाक शक्ति देने वाला ईश्वर है
129. शरीर ,आत्मा के ज्ञान, कर्म, भोग का साधन है

130. ईश्वर, आत्मा को सत्य ज्ञान देता है
131. आत्मा के 3 शरीर होते हैं
132. आत्मा का कामना गुण है
133. आत्मा के साथ इंद्रियादि का संबंध
134. ईश्वर आत्मा का सामर्थ्य, बल बढ़ाता है
135. शरीर के अंदर आत्मा को ईश्वर का समन्वय
136. आत्मा में ज्ञान प्राप्त करने ,कर्म करने की इच्छा है
137. हमारा हर कर्म हमारे सूक्ष्म शरीर में संस्कारवत बना रहता है
138. पंचकोश
139. वृक्षों में आत्मा होती है
140. आत्मा, शरीर, प्राण नाडिया, मन आदि का नियंत्रक है धारक है
141. आत्मा शरीर से भिन्न है
142. जीवात्मा को उन लोगों में शामिल होना चाहिए जिनको वेद ज्ञान मिलता है
143. हे जीवात्मा बलिदानी योद्धा बन
144. हे जीव श्रेष्ठ माता-पिता के घर जन्म लेने वाला बन
145. मृत्यु के उपरांत सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ रहता है
146. आत्मा अमर है
147. आत्मा कर्म करने में स्वतंत्र
148. आत्मा अल्पज्ञ है
149. आत्मा अणु परिमाण है
150. आत्मा का कोई लिंग नहीं होता है
151. आत्मा कर्म करता है ईश्वर फल देता है
152. आत्मा कभी भी ईश्वर तुल्य नहीं हो सकती
153. आत्माओं की संख्या अनंत है
154. आत्मा को शोकायुक्त ना करो
155. आत्मा की इच्छा स्वतंत्र है
156. कर्म अनादि है
157. निद्रा अवस्था में आत्मा की स्थिति
158. परग्रही जीवन(Aliens)
159. पुनर्जन्म
160. मोक्ष से पुनरावृति
161. सूर्य, तारों पर जीवन

162. मृत्यु के बाद, आत्मा कर्मानुसार, शरीर प्राप्त करने के लिए दूसरे ग्रहों पर जाता है
163. मृत्यु उपरांत जीवात्मा 12 दिनों तक सूर्य आदि जगहों पर घूम कर नया शरीर प्राप्त करती है
164. हे जीव, शरीर छोड़ते समय 'ओ३म' का स्मरण कर
165. आत्मा के अनंत जन्म हो चुके हैं
166. त्रेतवाद
167. कारण प्रकृति अनादि है
168.प्रकृति जड़ (चेतनारहित) है
169. कारण प्रकृति अविनाशी है
170. कारण प्रकृति का विस्तार अनंत है
171. प्रकृति त्रिगुणात्मक है
172. प्रकृति जन्म रहित है
173. कारण प्रकृति नित्य है
174. ईश्वर सृष्टि आत्मा के लिए बनाता है
175. जीवन उत्पत्ति
176. आत्मा के कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म होता है
177. आदि सृष्टि में युवावस्था (स्वयंपोषी) में जीवो की उत्पत्ति
178. ईश्वर सृष्टि ,आत्मा के सुख ,सामर्थ्य के बढ़ावे के लिए बनाता है
179. ईश्वर सृष्टि आत्मा के उद्धार के लिए बनाता है
180. ईश्वर ने मनुष्य शरीर पुरुषार्थ करने के लिए बनाया है
181. मनुष्य शरीर महिमा का उपदेश
182. मानव शरीर रचना उपदेश
183. ईश्वर सृष्टि की रचना क्यों करता है?
184. सृष्टि प्रवाह से अनादि है
185. कारण-कार्य भाव को जानने वाला ही विद्वान होता है
186. काल क्या है?
187. ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं का अर्थ
188. उपादान कारण प्रकृति से बना कार्य रुप जगत अनित्य होता है
189. पदार्थ विद्या को प्राप्त करने का तरीका
190. ईश्वर ने सृष्टि को वेद वाणी (vedic mantra’s vibrations) से रचा है
191. ईश्वर ने सृष्टि को शब्दायमान रचा है
192. जगत सत्य है

193. ईश्वर ने सृष्टि को यज्ञ (ज्ञान,कर्म, भोग, मोक्ष पुरुषार्थ आदि) के लिए बनाया है
194. ईश्वर,सृष्टि को अपनी उद्योग शक्ति, व्याप्त बल से बनाता है
195. सृष्टि का उपादान कारण प्रकृति है
196. ईश्वर सृष्टि, आत्मा के भोग और अपवर्ग (मोक्ष) के लिए बनाता है
197. तंमात्राएं
198.सृष्टि परस्पर बनी हुई है
199. ईश्वर की कामना (ईक्षण) सृष्टि निर्माण हेतु होती है
200. सृष्टि निर्माण और प्रलय
201. जो सूर्य, चंद्र, तारे, ग्रह आदि इस सृष्टि में है|वैसे ही इससे पहले वाली सृष्टियो में थे|
202. राजा व सेनापति दुष्टों का नाश करें
203. चक्रवर्ती राजा के गुण
204. राजा व सेनापति का सैन्य धर्म
205. राजा कौन बनना चाहिए, (गुण, कर्म)
206. राजा के मंत्री ,सभापति ,सभाध्यक्ष, कौन व कैसे हो
207. जल सेना
208.वायु सेना
209. अधिक ब्याज नहीं लेना चाहिए
210. भ्रष्टाचार मत करो
211. जो युद्ध में सम्मिलित नहीं है उनको मत मारो
212. कवच (armored jacket)
213. न्यायधीश के गुण ,कर्म
214.राजा और प्रजा का संबंध
215. बड़े सभापतियों ,मंत्रीयों के चमचे ना बनो
216. सबको रोजगार प्रदान करो
217. “पापी राजाओं” का नाश करो
218. राजपुरुष, असुर भाव को त्यागे
219. रानी के कर्तव्य
220. हत्यारें को सजा का प्रावधान
221. "दुष्ट पापियों" को दान देने वाले को दंड दो
222. व्यर्थ युद्ध करने वाले दुष्टो और राजाओं का नाश करो
223. चक्रवर्ती राजा बनने के लिए न्यायकारी राजाओं का दमन मत करो
224. राजा को अपने प्रजा जनों से मिलते-जुलते रहना चाहिए

225. कौन सा राष्ट्र सुखी होता है
226. राजा को अपने पिछलगु लोलुप लोगो से दूर रहना चाहिए
227. राजा अच्छा है ,तो उसकी प्रशंसा करो ,अगर बुरा है तो उसकी निंदा करो, त्याग करो
228. राजदूत के गुण ,कर्म
229. अगर हमसे (आर्यों)से भी कोई पाप हो तो, राजा उसको भी दंडित कर ,राज्य को सुचारू रूप से चलाएं
230. राजा की आवश्यकता क्यों?
231. राजदंड व्यवस्था
232. कौन राजा न बने
234. राजा को अपाहिज, दुर्बल और अनाथों का संरक्षण करना चाहिए
235 . मंत्री ,सभाअध्यक्ष शपथ ग्रहण
236. स्त्री मंत्रालय
237. युद्ध बंदियों (POW) के साथ अनुकूल व्यवहार करो
238. दो राष्ट्र, मित्रतापूर्वक अपने और दूसरे राष्ट्र की 'न्यायिक स्थिरता, रखने में मदद करें
239. उत्तम विदेश नीति
240.राजधर्म
241. सेनापति के गुण, कर्म
242. राजसूय यज्ञ
243. निषिद्ध आयुधो (Prohibited weapons) और अनुचित व्यवहार का युद्ध में प्रयोग करने वाले दुष्ट राजाओं को दंड दो
244. वही युद्ध करना चाहिए जिससे संसार का उपकार हो
245. अन्यायकारी ,दुष्ट ,पापी दुष्कर्मी ,राक्षसों ,के नाश की,दंड स्वरूप ईश्वर से प्रार्थना व उक्त सूक्त से राज– दंड व्यवस्था लागू करना
246. अन्यायकारी शोषक दुष्टों के विरुद्ध युद्ध करना आर्यों का कर्तव्य है
247. आर्य हो या अनार्य अगर आपके ऊपर युद्ध थोपे तो उनका भी नाश करो
248. मन्यु का धारण करो
249. राष्ट्रसभा , राज्यसभा, राजा केंद्रीय परिषद का कार्य ,अधिकार, व्यवस्था आदि का वर्णन
250. शोषक कौन?
251. स्वराज
252. विश्व में शांति स्थापित करो
253. अपना -पराया, देसी -विदेशी कोई भी आपके ऊपर युद्ध करें, हिंसा करें ,उनका नाश करो

254. राजा की सुरक्षा
255. राज तिलक उत्सव
256. युद्ध गीत
257. सेना व्यूह रचना
258. दुष्टो व शत्रुओं का लिखित रिकॉर्ड रखना चाहिए
259. "प्रजा हिंसक" छत्रिय को, राजा दंड दे
260. व्यभिचारी जार को दंड दो
261. भ्रूण हत्या की सजा
262 . सेना ध्वज रंग
263. राजा द्वारा अतिथि सत्कार
264.निर्बल को राजा मत बनाओ
265. रात्रि सुरक्षा सैनिक
266. चोर को दंड दो
267. प्रजा अपने राजा को सदा सुखदायक, शुभ कर्मों को करने के लिए प्रेरणा किया करें
268 .बलात्कारी को प्राण-दंड दो
269. शत्रु राजा, अगर अपनी गलती मान कर युद्ध से पीछे हट जाए, तो उसको मित्र बनाकर यथोचित प्रबंध करके अपनी सेना वापस बुला ले
270. बहुत ज्यादा पापियों को धार्मिक राजा मिलकर पराजित करें
271. चार प्रकार के सैनिक
272. राष्ट्र का स्वरूप
273. वैदिक राष्ट्रगान
274. राजा व मंत्री प्रजा की संतान की तरह रक्षा करें
275. शत्रु को उत्साह देने वाला भी शत्रु होता है
276 . शत्रु के उत्साही को दंड दो
277 . युद्ध में किनको हानि नहीं पहुंचानी चाहिए
278. राजा और सेनापति के पास राज्य में हथियारों की कमी नहीं होनी चाहिए
279. सेनापति, पुरुषार्थी मनुष्यों को ना मारे
280. युद्ध क्षेत्र में घायल सैनिकों हेतु चिकित्सा व अस्पताल का प्रबंध रखो
281. जो सुगुण राजा में है वह गुण राजा द्वारा प्रजा को भी धारण करवाने चाहिए
282. सबका भला हो
283. सब मिलकर उन्नति करें

284. मित्रता
285. पाखंडी दुष्ट से मत डरो
286. मानव महासागरों में द्वीपों पर यात्रा करने वाला हो
287. आत्मरक्षा उपदेश
288. जो मुझे हिंसित नहीं करता उसको मैं भी हिंसित न करूं
289 .मूर्ख, पापिनी ,नारियों से दूर रहो
290.मूर्ख ,पापी, पुरुषों से दूर रहो
291. माता- पिता की संपत्ति संतान की
292. आलसी दुष्टो को ज्ञान ना दो
293. नमस्ते
294. मनुष्य शरीर मिलने पर कैसे कर्म करने चाहिए
295. दुष्टों का ताड़न (सुधार दंड) करो
296. सदा स्त्रियों के बीच रमण करने वाले कामी ,लंपटो से दूर रहो
297. गर्भ हत्या पाप है
298. आर्यो (श्रेष्ठ) को दुष्टों का नाश करना चाहिए
299. दुष्ट पापी, करोड़ों भी हो तो सबको मारो
300.बिना कारण , दूसरों पर हिंसा करने वाले दुष्टो को मारो
301. व्यभिचार करना गलत है
302. जुआ खेलना पाप कर्म है
303. किसी के धर्मजनित सुख को नष्ट मत करो
304. अहिंसक को मत मारो , हिंसा मत करो
305. घास की तरह जड़ जमाते हुए आगे बढ़े
306. सभी मनुष्यों को सुख पूर्वक मिलकर, एक मन होकर रहना चाहिए
307. दुष्ट मनुष्यों का संग न करो
308. द्वेष भाव त्यागो
309. उत्तम वाणी को धारण करो
310. आर्य (श्रेष्ठ गुण कर्मयुक्त) दस्यु (दुष्ट गुण कर्मयुक्त)
311. दुष्टों का नाश करो ,उत्तम मनुष्यों की रक्षा करो
312. दुष्ट आचरण को त्यागो
313. अच्छा से अच्छा व्यवहार और बुरो से बुरा व्यवहार करना चाहिए
314. हिंसक मनुष्यों का साथ त्यागो
315. कुटिलतायुक्त सामर्थ्य, पदार्थ, किसी कुटिल का साथ , का कभी भी ग्रहण मत करो
316.बंधुओं के अधिकार को मत छीनो

317. दुष्ट को मित्र मत बनाओ
318. शत्रु के ऋणी मत रहो
319. झूठे स्त्री-पुरुषों का ताड़न करो
320. श्रद्धा (सत्य धारण)
321.छोटे बड़े भाइयों बंधुओं को एक विचार होकर उत्तम व्यवहार करना चाहिए
322. सभी मनुष्य बराबर है
323. अपाहिज विद्वान का सम्मान करो
324. छुआछूत खंडन
325. कामी लंपटो का त्याग करो
326. सत्यवादी धर्मात्मा, असत्यवादी अधर्मात्मा
327. किसी के घर अचानक बिना आज्ञा मत जाओ
328. पराया धन न लो
329.सबको आर्यत्व प्रदान करो
330. सबको विद्या ग्रहण का अधिकार है
331. मनुष्य बनो
332. धन मांगने वाले निर्धन की मदद करो
333. हिंसको की हिंसा धर्म है
334. स्वार्थ त्यागो
335. अच्छे कर्म करते हुए जीवन जियो
336.अपने साथ–साथ दूसरे मानवो का भी उपकार करो
337.सर्वहित कामना
338. डर को त्यागो
339. कुवासना ,कुसंस्कार आदि का नाश हो
340. सात– कुमर्यादाएँ
341. जीवन में सब कुछ उत्तम हो सुखद व कल्याणकारी हो
342. निर्बल कौन है?
343. समाज को आगे बढ़ाते हुए जिओ
344.ईर्ष्या मत रखो "हानियां"
345. स्वपन?
346. पाप कर्मों से निवृत्ति
347. ऋणी मत रहो
* ऋण समय पर उतार दो
348. काम, क्रोध को काबू रखो
349. तृष्णा का त्याग करो

350. अधर्म पथ पर मत चलो
351. रजोगुण और तमोगुण का त्याग करो
352. हिंसा व दुष्कर्म न करने की प्रतिज्ञा
353.अपने प्रिय व परिजनों से प्रेम से वार्ता करें
354. शुद्र पर हिंसा करने वाले को दंड दो
355. स्त्री के हिंसक को दंड दो
356.ब्राह्मण के हिंसक को दंड दो
357.हिंसक दुष्ट को दंड दो, मारो, नष्ट करो
358. स्वयं शुद्ध होकर ,दूसरों को शुद्ध करो
359. झूठ मत बोलो
360.शुभ सत्य ज्ञान सुनो
361. मैं विद्वानों का प्रिय बनू
362 .मैं सभी प्रजा का प्रिय बनू
363. मैं पशुओं का प्रिय बनू
364. गरीब भूखों को भोजन करवाया करो
365.अत्याचार मत करो
366. शांति सुक्त
367. अधोगामी कौन है?
368. असुर के लक्षण
369. सभी मनुष्यादि प्रजा के लिए कल्याणकारी बनो
370. सत्य ज्ञान को समाज में कहो, चाहे कोई बुरा कहे या भला
371. व्यर्थ की प्रतिज्ञा शपथ मत करो
372. मैं शूद्रों के प्रति अपराध बोध से मुक्त रहूं
373. मनुष्य (मैं) किन-किन पदार्थों ,विषयों ,ज्ञान-विज्ञान आदि में सिद्ध,समर्थ व सामर्थ्यवान होंऊ
374. मैं ब्राह्मणों से प्रीत करूं
375. मैं क्षत्रियों से प्रीत करूं
376.मैं वैश्यों से प्रीत करूं
377.मैं शुद्रों से प्रीत करूं
378.विद्वान चारों वर्णों के मनुष्यों का सम्मान व प्रीति करें
379. मैं हर तरह के अपराध बोध से पृथक रहूं व होऊ
380. मैं सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं
381. हम सभी एक दूसरे को मित्रवत दृष्टि से देखें
382. गृहस्थ आश्रम

383. स्त्री को शिक्षा का अधिकार
384. स्त्री को वेद विद्या का अधिकार
385. विवाह आयु (अवस्था)
386. कन्या, विवाहहेतु कैसा वर चयन करें
387. पुरुष, विवाह हेतु कैसी वधू का चयन करें
388. स्त्री युद्ध में जाया करें
389. शिक्षा व ब्रह्मचर्य के बाद विवाह
390. स्त्री का अपहरण करने वाले को दंड दो
391. नियोग
392. पुरुष पत्नीव्रता रहे,स्त्री पतिव्रता रहे
393. गर्भाधान संस्कार
394. गर्भाधान से पहले पुष्ट भोजन
395. मानव गर्भकाल
396. निसंतान दंपत्ति को अपने वंश हेतु अपने गोत्र का ही बच्चा गोद लेना चाहिए
397. मासिक धर्म में संभोग नहीं करना चाहिए
398 .यौन शिक्षा
399. धाई
400. स्त्रियां अध्यापिका बने
401. कन्याओं को गुरुकुल में स्त्रियां शिक्षा दें
402. स्त्री, भूविज्ञान को जाने
403. गृहस्थ स्त्री पत्नी तेरी संतान उत्पन्न करो
404. समान गुण कर्म स्वभाव वाली स्त्री पुरुष से विवाह करना चाहिए
405. स्वयंवर विवाह
406. स्त्री खगोलशास्त्री बने
407. वृद्ध (शरीर से) पुरुष का युवती स्त्री से विवाह निंदनीय है
408.स्त्री व पुरुष अगर एक दूसरे को पसंद नहीं करते तो उनका विवाह मत करो
409.पति-पत्नी सदा आपस में सुख के साथ रहे
410.10(ten) संतानों तक पैदा करने का उपदेश
411. प्रसव काल विद्या
413.विवाह संस्कार
414.एक समृद्ध खुशहाल घर की परिकल्पना
415. उत्तम संतानों उत्पन्न करो

416. एक पत्नी व्रत
417. गर्भ रक्षा करने का उपदेश
418.पुनर्विवाह
419. स्त्री को, विदुषी स्त्रियों में ही रहना चाहिए
420. हे स्त्रियों सदा सुखी रहो
421. भाई-बहन के विवाह का निषेध
422.स्त्री कमजोर नहीं है
423. स्त्री विद्वान पुरुषों को ही अपना मित्र बनाएं
424.स्त्री को यज्ञ का अधिकार
425.जहां नारी (पत्नी) की पूजा (मान–सम्मान) होती है वही उन्नति होती है
426. ब्रह्मचारिणी कन्या को आचार्या का उपदेश
427. स्त्री (पत्नी) पुरुष (पति) को एक दूसरे से व्यर्थ डरना डराना नहीं चाहिए
428. दंपत्ति सदा एक दूसरे के पूरक, सहायतार्थ कर्म करें
429. स्त्री (पत्नी) न ताड़ने योग्य है
430. स्त्री (पत्नी) अपने पति को उत्तम गुणों का उपदेश दिया करें
431. पत्नी सदैव अपने पति को दुर्व्यवहार व पाप से दूर रहने का उपदेश व रखने का कार्य करें
432. सुशिक्षित नारी किसी से दब के ना रहे
433. स्त्री न्याय विद्या ग्रहण करें
434. स्त्री न्यायाधीश बने
435. स्त्री कैसे पुरुषों को पति ना बनाएं
436. स्त्री राजनीति विद्या ग्रहण करें
437. स्त्री योग विद्या ग्रहण करें
438. पति पत्नी एक दूसरे के मित्र हैं
439. दूर क्षेत्रों ,विदेशों में विवाह करना चाहिए
440. युवावस्था में विवाह करना चाहिए
441.स्त्रियां वैध (doctor) बने
442. स्त्री विद्युत(electricity) विद्या जाने
443. स्त्रियां युद्ध में युद्धवाहन (tank, fighter jet etc.) को चलाते हुए युद्ध करें
444. विवाह-विच्छेद (divorce) की आधारभूत परिकल्पना
445. हे स्त्री, तू घर की साम्राज्ञी बन
446. हे स्त्री सभागृह में बातचीत करने वाली बनो
447. स्त्री भोजन बनाने की विद्या जाने

448. स्त्री कृषि विद्या जाने
449. स्त्री जीवन*
450. स्त्री सिलाई विद्या जाने
451. स्त्री के कार्य
452. रसोईघर विद्या
453. पशुपालन, पशुओं का यथा योग्य उपयोग
454. गौशाला (गाय पालन व रक्षा)
455. मांसाहार नहीं करना चाहिए
456. घोड़ा पालन
457. गाय न मारने योग्य है (अघन्या हैं)
458. लाभदायक जीवो पर दया करो
459. मानव आहार व पुष्टता का वर्णन
460. सूक्ष्मजीव
461. गौ हत्यारे को राजा मारे/दंड दे
462. लाभदायक पशुओं की हिंसा ना करो, अपितु उनकी रक्षा करो
463. गाय गव्य पदार्थ
464. पीड़ादायक ,रोग, व्याधि ,उत्पन्न करने वाले जीवो का नाश करो
465. हानिकारक जीवो को हटाओ/मारो
466. जीव जंतुओं की हिंसा करने वाले को दंड दो
467. चार दांतों वाले हाथी का वर्णन
468. डायनासोर जैसे भयंकर रक्त पिपासु जीवो का वर्णन
469. पिशाच (मांसाहारी मनुष्य) को अपने जलपान से दूर रखो
470. पिशाच (मांसाहारी मनुष्य) को दंड दो
471. घोड़े को मत मारो
472. घोड़े का मारने व मांस खाने वाले को दंड दो
473. मांस रक्त आदि से हवन नहीं करना चाहिए
474. व्यभिचारी मांसाहारी को दंड (ताड़ना) दो
475. गुरुत्वाकर्षण बल
476. विद्या का प्रचार करना चाहिए
477. वेद सबके लिए है
478. विद्वानों से शंका समाधान
479. वर्षा चक्र ,जल चक्र
480. पेड़ -पौधे चांद की चांदनी में पुष्ट होते हैं
481. समाधि अवस्था में वेद मंत्रों के अर्थों का ज्ञान लाभ

482.वेद ज्ञान अनादि है
483.वेद नित्य है
484.वेद के मंत्रों पर विचार करने से ज्ञान उदय
485.व्यापार
486. प्रातः काल महिमा
487.अविद्या का नाश करो,विद्या को बढ़ाओ
488.सबसे कमजोर का अस्तित्व (survival of the weakest)
489 विद्वानों के अलग मत रहो
490. सुखद निद्रा लो
491.योगिक सिद्धियां
492.दिन रात पृथ्वी पर सदा कहीं ना कहीं वर्तमान रहते हैं
493.विद्या महिमा
494.गणित विद्या
495.वेदवेता दमन ब्रहमचारी का तिरस्कार कर वेद विरुद्ध कार्य को करने वाले का नाश होता है
496.पापी माता-पिता का साथ मत दो
497.संतान माता-पिता को कष्ट ना दें
498.जल पवित्रकारक होता है
499.सूर्य और पृथ्वी को अलग अलग किया
500. गृहस्थो का विद्वानों के साथ सत्संग
501.योग के आठ अंग हैं
502. किला,गढ़,गांव,सभ्यता निर्माण कैसे व कैसा हो
503.बुद्धि कैसी हो
504.मेखला बंधन
505.केश औषधि वर्णन
506.सूर्य उदय होने के बाद तक होने वाले मनुष्य का तेज क्षीण होने लगता है
507.अंडाशय(overy) के रोग से महिलाओं के शरीर पर ज्यादा बाल आने लगते हैं
508.शाला निर्माण
509.परमेश्वर को जाने बिना मोक्ष संभव नहीं
510. आदिसृष्टि में प्रथम उत्पन्न ऋषियों को चार वेद का ज्ञान प्रकट हुआ
511.चारों वेदों के नाम
512.वेद वाणी आदि मनुष्य पर प्रकट हुई

513.ईश्वर साक्षात्कार (समाधि)से पहले जानने वाले विषय
514. जिस विधि से ऋषियों ने ईश्वर को जाना है वही एक विधि है अन्य कोई भी नहीं है
515.ब्रह्मचारी/ ब्रह्मचर्य महिमा
516 पृथ्वी कहीं से ऊंची, कहीं से नीची,कहीं पर समतल है
517.पृथ्वी महाभूत का गुण गंध है
518.मोक्ष अवस्था
519.यज्ञ कुशल विद्वान मनुष्य सामान्य मनुष्यों को यज्ञ की शिक्षा दें
520.पृथ्वी हाथ पैर आदि अवयवों से रहित है
521. वर्ण रहित मनुष्य
522.विभिन्न औषधीय वर्णन
523 पृथ्वी गोलाकार है
524.परा,पश्यंति,मध्यमा ,वैखरी
525 योगी सूक्ष्मवाणी (परा-पश्यंति) आदि का ज्ञान प्राप्त करता है
526.वेद ज्ञान महिमा
527. देव यज्ञ
528 वेद आदि ज्ञानवाणी आदि भाषा ज्ञान भाषा है
529. सबकी अपनी अपनी योग्यता होती है
530.हवन की राख का भक्षण
531. धरती पर ऋतु चक्र चंद्रमा के कारण व्यवस्थित होते हैं
532.सोम खाद्य अलग है सोम धारक अलग है
533.विद्युत चुंबकीय सूर्य प्रकाश
534.सूर्य में चुंबकीय क्षेत्र
535. पेड़ पौधे जानवरों से पहले पैदा होते हैं
536 .चुंबकत्व और वर्षा
537 .अपने शरीर में ही रोगों से लड़ने वाली शक्ति को बनाओ
538. यांत्रिक (बिजलीयुक्त) अस्त्र-शस्त्र
539. सूर्योदय दिशा
540. सूर्य प्रकाश चिकित्सा
541. अग्निहोत्र से रोगाणु आदि नष्ट-भ्रष्ट होते हैं
542. मानसिक दुर्भावना ,ईर्ष्या लोभ लालच आदि से मुक्ति
543. यज्ञ में विघ्न डालने वाले दुष्ट को सजा दो
544. वाक् विज्ञान

545.अंतरिक्षस्थ पिंडो को हाथी घोड़े नहीं चलाते,अपितु ईश्वर चलाता है।
546.ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की उपासना मत करो
547.शल्य चिकित्सा
548.ईश्वर त्रिपाद समस्या हल
549.वानप्रस्थ आश्रम
550. जिस विषय में आपकी रुचि है उसमें दक्षता प्राप्त करो
551. गुरु-आचार्य का शिष्य को वर्ण देना
552. आत्मा स्तुति (वीर-रस)
553.योग बल से आकाश गमन
554.अग्निहोत्र पुरोहित योग्यता
555.जीवात्मा सतोगुण को धारण कर रजोगुण, तमोगुण को त्याग कर परमात्मा प्राप्ति कर सकता है
556.चंद्र ग्रहण
557.संस्कृत "शब्द"
558. योगाचार्य गुण कर्म
559. जागरूक पुरुषार्थी को ही सफलता मिलती है
560. जल औषधि वर्णन
561. तिल तेल औषधि
562. निर्धनता "वर्णन" निर्धनता बहुत कष्टदायक,इसको दूर करो पुरुषार्थ से
563. गौदूध–गौघृत का सेवन करो
564. समाज में स्त्री पुरुष इस तरह प्यार से रहे जैसे माता पुत्र को प्यार करती है
565. दिशाओं के नाम
566. चावल पकाना
567. अलग माता-पिता से पैदा हुए भाई बहन मिलकर बंधु धर्म का पालन करें
568. वस्त्र आदि पहनने का उपदेश
569. वेदज्ञाता अगर वेद वाणी का ज्ञान अन्य को नहीं देता तो वह नष्ट भ्रष्ट हो जाता है
570.बहुत सारे भूगोल ग्रह हैं
571. यज्ञोपवित
572.पर्वतों में रहने वालों का सत्कार करो
573.वर्णसंकर का सम्मान करो
574.शूद्र का सत्कार करो

575.जंगली मनुष्य का आदर सत्कार करो
576.अस्त्र-शस्त्र बनाने वाले का सम्मान करो
577.गो,मछली और चींटी आदि को प्रेम हेतु, दया हेतु अन्न दो
578.एलियंस 👽 का भी मान सम्मान करो
579.योगाभ्यास के बिना खाली शब्द अर्थ, खंडन-मंडन आदि से परमात्मा को नहीं जाना व प्राप्त किया जा सकता
580.सूर्य किरण संसार को पुष्ट करती है
581.विद्वानों को एक साथ मिलकर सत्य सिद्धांतों पर स्थिर रहना चाहिए
582.अतिथि 3 दिनों तक ही घर में रुके
583.सत्य तक पहुंचने के तरीके
584.सुई
585.हर जगह का जल शुद्ध रखो
586.बादलों के विभिन्न प्रकार
587. वैदिक महीनों के नाम
588.अपना उद्धार स्वयं करो
589. ऋतुअनुसार सुख हेतु रंगों का चयन
590.भैंस (शब्द)
591.विभिन्न पशु -पक्षियों के व्यवहार व गुण व उनका यथा योग्य उपयोग
592.पंच भूतों के नाम
593.नदियों,पहाड़आदि पर एकांत जगह पर योगाभ्यास करना चाहिए
594.मनुष्य जीवन के यज्ञ(कर्तव्य)
595. विद्युत का अति सूक्ष्म विज्ञान
596.आप्त मनुष्य के गुण
597. जो व्यक्ति बुद्धिहीनो को बुद्धिमान व नीच वर्णों को उच्च वर्ण करते हैं वही महान विद्वान होते हैं
598. हे ईश्वर व राजन हमारे बीच उत्तम प्रश्न करता व उत्तम उत्तर दाताओं को उत्पन्न कीजिए
599. धर्मस्य मूलम अर्थम
600.चार युगों के नाम
601.सूर्य ,पृथ्वी से पहले उत्पन्न होता है
602.ईश्वर व गुरुजनों से मुझे उत्तम बुद्धि प्राप्त हो
603. प्रातकाल औषधियों का रस पियो
604.संतानों की हत्या मत करो
605. गाय का घी पिया करो

606. ईश्वर हमारी किस तरह मदद करता है वह कैसे कब हमारी बुद्धि में शुभ गुण कर्मों की प्रेरणा करता है इसको आत्मा नहीं जानता
607 .मनुष्य को पदार्थों का भोग त्याग भाव से करना चाहिए
608 .मनुष्य निष्काम कर्म करता हुआ 100 वर्ष जीने की कामना करें
609.जो मनुष्य जड़ प्रकृति की उपासना करते हैं वह अंधकार में गिरते हैं
610.वसंत ऋतु
611 .ग्रीष्म ऋतु
612.वर्षा ऋतु
613.शरद ऋतु
614.हेमंत ऋतु
615.शिशिर ऋतु
616. बिना विचारे वेद को धारण करने से प्रजा नष्ट भ्रष्ट होती है
617 .वेद को यथावत विचार करके ग्रहण करें
618. जो व्यक्ति वेद वाणी को कुमार्ग हेतु उपयोग करता है वह युवकों का हत्यारा होता है
619 .वेद ज्ञान सुपात्र जिज्ञासाओं को सिखाना चाहिए
620. पापी भ्रष्ट कामी लंपट मनुष्य वेद वाणी को ग्रहण करके भी समाज हित नहीं कर सकता
621. वेद ज्ञान कुपात्रों को मत दो
622. वेद विद्या को जानकर जो कुमार्ग पर चलता है वह जल्दी ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है
623 .वेद विद्या के विपरीत चलने वाला नष्ट भ्रष्ट हो जाता है
624. अब्रह्मचारी वेद वाणी का संपूर्ण लाभ नहीं ले सकता
625. ब्रह्मचारी को सताने वाले क्षत्रिय (नास्तिक) का सर्वनाश हो जाता है
626.ब्रह्मचारी विद्वानों को सिखाने वाला क्षत्रिय नास्तिक को दंड दो
627 .अधर्मी मनुष्य को उसका फल इसी जन्म में या अगले जन्म में मिलता है
628.ब्रह्मचारी विद्वानों के हानिकारक अपराधी नास्तिकों को दंड दो
629.मानसिक वाचनिक दैहिक 3 तरह के पाप-पुण्य कर्म होते हैं
630.जिन कर्मों से ईश्वर का अनुमान होता है वह कार्य ईश्वर द्वारा किए होते हैं
631.शुन्य(0) शब्द
632.आरामदायक वस्त्र पहने
633 .अतिथि सत्कार का फल
634. अतिथि सत्कार कैसे करें
635.झूठे पाखंडी पापी अतिथि का तिरस्कार करो
636.पुरुषार्थ हेतु आत्मस्तुति

637.भूतकाल में भविष्य भविष्य में भूतकाल रखा हुआ है
638.आधिदेविक आधिभौतिक अध्यात्मिक सुख-दुख
639.पितृ यज्ञ
640.पितृ ऋण
641. पितृ का हमारे प्रति वह हमारा पितृ के प्रति कर्तव्य
642. अन्न को नष्ट मत करो
643.वेद की मर्यादा से बाहर रहने वाले को मोक्ष नहीं मिलता
644.स्वतंत्र जहां चाहो वहां विचरण करो
645. पित्र कर्तव्य उपदेश
646. शुद्ध जल से भरी हुई कृत्रिम नालिया समाज में हो, बनाओ
647. नक्षत्र 28
648.शुद्ध छिंक ,अशुद्ध छिंक
649. स्वर्ण धातु महिमा
650. तर्क द्वारा ईश्वर का अंगीकार करो
651.उपनिषद शब्द
652.आशा (hope) महिमा , आशावान रहो
653.शरीर को स्वस्थ रखो
654. शास्त्रार्थ
655.मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ है
656.जिंदगी से दुखी,हारे हुए नकारात्मक,निराशावादी मनुष्य के लिए ईश्वर का उपदेश
657.सामाजिक शास्त्र समाज में भले बुरे का विधान
658.घोड़ा चाहिए तो अस्तबल में जाओ, गौशाला में नहीं .
(अर्थात logical बुद्धि का उपयोग किया करो)
659.जूते shoes
660. धूप से चलने वाले वाहन यंत्र
661. सुखी जीवन हेतु किसान का अनुसरण करो
662. अग्निहोत्र शुद्धि करता है
663. यज्ञ सदा सर्वहित हेतु करो
664. जैसा करोगे वैसा भरोगे
665. खरीदारी व्यवस्था
666. सूर्य से सीधे नजरें मत मिलाओ
667. अंतरिक्ष गमन करो
668. माता का संतान से वात्सल्य

669.माता पिता संतान को विद्या प्राप्ति के लिए आदेश दें
670.तर्क से ही पदार्थ विद्या प्राप्त होती है
671.यज्ञ संसार को पवित्र करो
672. विद्यार्थियों को भोजन बनाना सिखाओ
673. माता-पिता संतान को गलत शिक्षा व कष्ट ना दें
674.संतान माता को साथ रखें
675.माता से ज्ञान प्राप्त करो
676.माता को मन से भी कष्ट मत दो
677.विद्वानों के रसोइए
678. न्यायधीश के न्याय का विरोध आचरण ना करो
679. सूर्यास्त सूर्य को देखना चाहिए
680.है वैद्य लोगों आपस में औषधियों हेतु ज्ञान चर्चा कर रोगों का निदान करो
681 .सभी मनुष्य को शस्त्र धारण करना चाहिए
682. मुंडन चूड़ाकरण संस्कार
683.बालक के दांत निकलना उसका आहार आदि अन्नप्राशन संस्कार
684.प्राण ,अपान ,व्यान ,समान
685.उपनयन संस्कार
686.सूर्य में गायत्री आदि छंद कंपित है
687.अंत्येष्टि संस्कार
688. INFERTILITY रोग को दूर करो हे वैद्य
689.धन, धन को कमाता है
690.अध्यात्म
691.गुरुकुल ,गुरु शिष्य संबंध आचरण व्यवहार कर्तव्य आदि
692.आयुर्वान बनो
693. वर्ण व्यवस्था गुण कर्म प्रधान होती है
694. वेद चार हैं
695. पुरुषार्थ के बिना लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकती अर्थात पुरुषार्थी बनो
696.पाप कर्म को बुद्धि से दग्ध करो
697. दान ,दान महत्व
698. युवा पुरुषार्थ
699. मेघ विद्या
700. उपदेशों को तर्क वितर्क कर मनन कर के उसको धारण करें
701. बिना ज्ञान अर्जित किए हुए व्यर्थ तर्क मत करो
702. नशीले पदार्थों का बिना वैद्य परामर्श के सेवन मत करो

703. शूद्र कुल में उत्पन्न बालक, पढ़कर द्विज वर्ण धारण कर सकता है
704. विद्या किसको प्राप्त होती है और किसको प्राप्त नहीं होती
705. संवाद ,प्रश्नोत्तर, दान-रहित मूर्ख व्यक्ति समाज से दूर रहो
706. सपरिवार सुखी रहो
707. जटाजूट ब्रह्मचारी
708. ज्ञानवाणी वेद मंत्र सर्वत्र हैं
709.बिना चोटी वाले ब्रह्मचारी
710. दो लकड़ियों को आपस में रगड़ कर अग्नि को प्रकट करना
711. ग्रहण करने योग्य विद्या
712. वसु 24 से 40 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करने वाले
713. सन्यास आश्रम ,सन्यासियों के गुण कर्‌म
714. सन्यासी का सेवा सत्कार करना चाहिए
715. लिपि विद्या
716. विदेशों में जाकर भी धन कमाओ
717. रूद्र जो 44 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करते हैं
718. आदित्य जो 48 वर्ष तक ब्रह्मचर्य करते हैं
719. अतिथि गुण कर्म
720. कुत्ता पालन
721. भाप शुद्ध जल होता है
722. बुद्धि का उपयोग सदा श्रेष्ठ कर्मों में करें
723. उपासना काल
724.आत्म नियंत्रण
725. यज्ञ कर्ता , वेदवेता ब्रह्मा
726. सबको शिक्षित करो
727. ईश्वर प्राप्ति समाधि में बाधक पाप कर्म
728. मोक्ष पद ब्रह्मानंद सर्वोपरि है, कोई इसके तुल्य नहीं
729. सूर्य का रंग सफेद है
730. किसी भी भाषा ,वाणी में ईश्वर स्तुति, प्रार्थना कर सकते हैं
731. प्राचीन और नवीन दोनों पथो को विद्वान के सानिध्य में ग्रहण करो
732. ऋषि गुण, कर्म ,धर्म
733. कर्म योग कर्म योगी गुण कर्म
734.ज्ञान योग, ज्ञान योगी के गुण-कर्म
735. ईश्वर से प्रार्थना मंत्‌र
736. ईश्वर स्तुति मंत्र

737.आचार्य गुण कर्म धर्म
738. मन इंद्रिय
739. मन एक है
740. चक्षु इंद्री
741. कान इंद्री
742.   33 देवता
743.ब्रह्मचर्य पालन, लाभ
744. ईश्वर उपासना का फल
745.वेद मंत्रों के तीन अर्थ
746.स्वाहा
747. शुभ कर्मों के बिना ईश्वर उपासना नहीं होती
748. संवाद ,प्रश्नोत्तर .दान रहीत, मूर्ख व्यक्ति, समाज से दूर रहो
749. मनुष्य वेदों को लुप्त ना होने दें
750. ज्वार-भाटा चंद्रमा के कारण
751. व्यापक-व्याप्य संबंध
752. वेद ज्ञान अनंत है
753. वेद ज्ञान किस तरह प्रकट होता है
754. मनुष्य अपनी इच्छा, बुद्धि अनुसार कोई भी कार्य ,रोजगार कर्म कर सकता है
755.ईश्वर की उपासना
756. शरीर कर्म-फल भोगने के लिए भोग साधन
757. योग उपासना
758. वायुयान विद्या
759. अग्निहोत्र हवन यज्ञ
760. एक ईश्वर की उपासना
761. चार वर्णों का विभाग
762. आठ वसु
763. बिजली
764. सोमरस
765. कर्मफल व्यवस्था
766. तकनीकी का विकास करो
767. प्राणायाम
768. धर्म(लक्षण)
769. ज्योतिष
770. पहिया विद्या

771. आकाश तत्व का गुण शब्द है
772. मृत्यु का समय निश्चित नहीं होता
773. अस्त्र-शस्त्र विद्या
774. मोक्ष किसको मिलता है
775. अहिंसित यज्ञ
776. विद्वान-अतिथि का सेवा सत्कार,,, किस प्रकार करना चाहिए
777. नाव ,पनडुब्बी विद्या
778. **वैद्य के गुण कर्म**
779. कुत्ते को शिक्षा
780. ऑर्गेनिक फार्मिंग
781. 10 दिशाएं
782. **मानव आयु**
783. औरतों का वर्ण धारण
784. ब्रह्मचर्य आश्रम
785. धरती , सूर्य के साथ अनुसरण ,अनु भ्रमण, गमन ,गति करती है
786. हाथी शिक्षा
787. कुआं विद्या
788. वात पित्त कफ
789. गुरुकुल परीक्षा
790. तार विद्या विद्‌युत
791. माली विद्या
792. पृथ्वी पर दिन-रात किस प्रकार होते हैं
793 .उषाकाल की धूप औषधि होती है
794. कृषि,खेती
795. माता-पिता , वृद्धों की सेवा करो
796. आकाश अनंत है
797. प्राण
798. तार विद्या टेलीफोन
799. वस्त्र बुनाई
800. सुखी जीवन की कुंजी क्या है
801. युद्ध में पापियों को मारने के लिए खंदक व गड्ढे बनाना
802. द्विज
803. संतान को माता-पिता की सेवा करनी चाहिए
804. छंद विद्या

805. वाणी के चार प्रकार
806. खेल-कूद
807. रॉकेट विद्या
808. सोनिक बूम (sonic boom)
809. गृहस्थ ,आभूषण पहन सकता है
810. अग्नि,विद्युत से चलने वाले वाहन,विमान
811. आचार्य,अध्यापक के गुण कर्म
812. धरती गमनशील है
813. छह ऋतु
814. गोत्र
815. योग विद्या से ज्ञान लाभ
816. सूर्य तारे(सूर्य) वसुओं से देखने पर पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण दिशाओं में आते जाते दिखते हैं वास्तव में यह झूठ है
817. कर्म स्वतंत्रता के कारण दूसरे के कर्मों का भोग
818. मानसिक विकारों से मुक्ति हेतु, वैद्य
819. सामवेद गायन
820. शिक्षित मानव के गुण कर्म धर्म
822. घी, त्वचा के लिए लाभदायक
823. कर्म बुद्धि युक्त हो
824. औषधि,वनों की रक्षा करो
825. उषाकाल, सूर्योदय के समय उठना चाहिए
826. किसको गुरु(मार्गदर्शक) बनाएं
827. उत्तम हवन-कर्ता कौन?
828. वसु,रुद्र, आदित्य देव
829. किसका प्रमाण मान्य है
830. सूर्य में अग्नि विद्युत(plasma) रूप है
831. दैहिक ,वाचनिक ,मानसिक कर्म होते हैं
832. सूर्य गमनशील है
833. अग्निहोत्र मंत्र-अर्थ के साथ करना चाहिए
834. अग्निहोत्र का समय
835. गुरु कौन हो
836. विद्वानों की निंदा, हिंसा ना करो
837. शत्रु = दुष्ट ,अन्यायकारी
838. शहद

839. बुद्धि (महत-तत्व) सर्वव्यापक है
840. ईश्वर आज्ञाअनुसार चलने वाला उपासक व्यक्ति अपराजित होता है सुखी रहता है
841. जगत ,जीवन के रहस्य हेतु विद्वानों से प्रश्न-उत्तर
842. समाज में उत्तम ,विद्वानों ,बुद्धिमान व्यक्तियों की प्रतिष्ठा करो
843. बिजली प्रकाश के माध्यम से अंतरिक्ष में संदेश भेजना
844. क्षत्रिय गुण,कर्म,धर्म
845. ब्राह्मण गुणधर्म
846. शुद्र गुणधर्म
847. वैश्य गुण कर्म धर्म
848. माता-पिता को बचपन में ही बच्चों को संस्कार शिक्षा व पाप कर्मों का ज्ञान देना चाहिए
849. सौरमंडल शिक्षा
850. सनातन धर्म
851. पहाड़ पर्वत निर्माण
852. नदियों के नामों का वैदिक अर्थ
853. विभिन्न नस्लो व शारीरिक लक्षणों से युक्त मनुष्यो से समान बर्ताव करो
854. अच्छा देखो ,अच्छा सुनो
855. मनुष्य शरीर के विभिन्न अंगों का कार्य वर्णन
856. विद्वान मनुष्य के गुण-कर्म
857. भूत, शब्दार्थ-संबंध अनादि है
858. व्यर्थ बकवास मत करो
859. हर बुराई को अपने से दूर रखें

Publisher- Sandeep Arya (Om aryavart)

Haryana

E-Mail- sandeepahlawat31@gmail.com
Whatsapp- 8708998215

First edition – June , 2022
PDF VERSION ONLY

Price- आपकी मर्जी

Icici bank, panipat.

Account holder – Sandeep

a/c number – 017401559289

ifsc code- icic0000174

UPI ID -7497042040@ICICI

नमस्ते,

वैदिक धर्मी मित्रों, vaidic index नामक pdf पुस्तक को बनाने के पीछे मेरा उद्देश्य यह है कि, अधिकांशत वैदिक धर्मी लोगों से जब कोई वेदों के विषय में कुछ पूछता है तो उनको उसका रेफरेंस नहीं पता होता क्योंकि वेद पुस्तक बहुत अधिक मंत्र होने के कारण उनको याद रखना कठिन है और वेद पुस्तक भी बहुत ज्यादा मोटी और बड़ी है उनको कुरान और बाइबिल की तरह हाथ में लेकर घूमना संभव नहीं है और सामान्यतः याद रखना भी मुश्किल है, इसलिए यह वैदिक इंडेक्स उनके लिए लाभदायक सिद्ध होगा जिनको वेद के किसी विषय के बारे में झट से रेफरेंस जानना हो. हजारों रेफरेंस होने के कारण टाइपिंग में कोई त्रुटि संभव है इसलिए अगर आपको कोई त्रुटि लगे तो मुझे व्हाट्सएप पर मैसेज कर दे ,मैं उसको संशोधित कर दूंगा।

धन्यवाद

BY – SANDEEP ARYA

OM ARYAVART